वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़
तर्कशील पथ
TARKSHEEL
अक्तूबर 2020
मैं घास हूँ - पाश (2)
शहीदे-आज़म भगत सिंह (10)
ਬੰਦੇ ਦੀ ਕੁਦਰਤੀ ਉਮਰ (20)
अन्नाबाऊ साठे (29)
₹20
जीवन का उद्देश्य किसी उद्देश्य के लिए जीना ही है।-लार्ड बायर्न
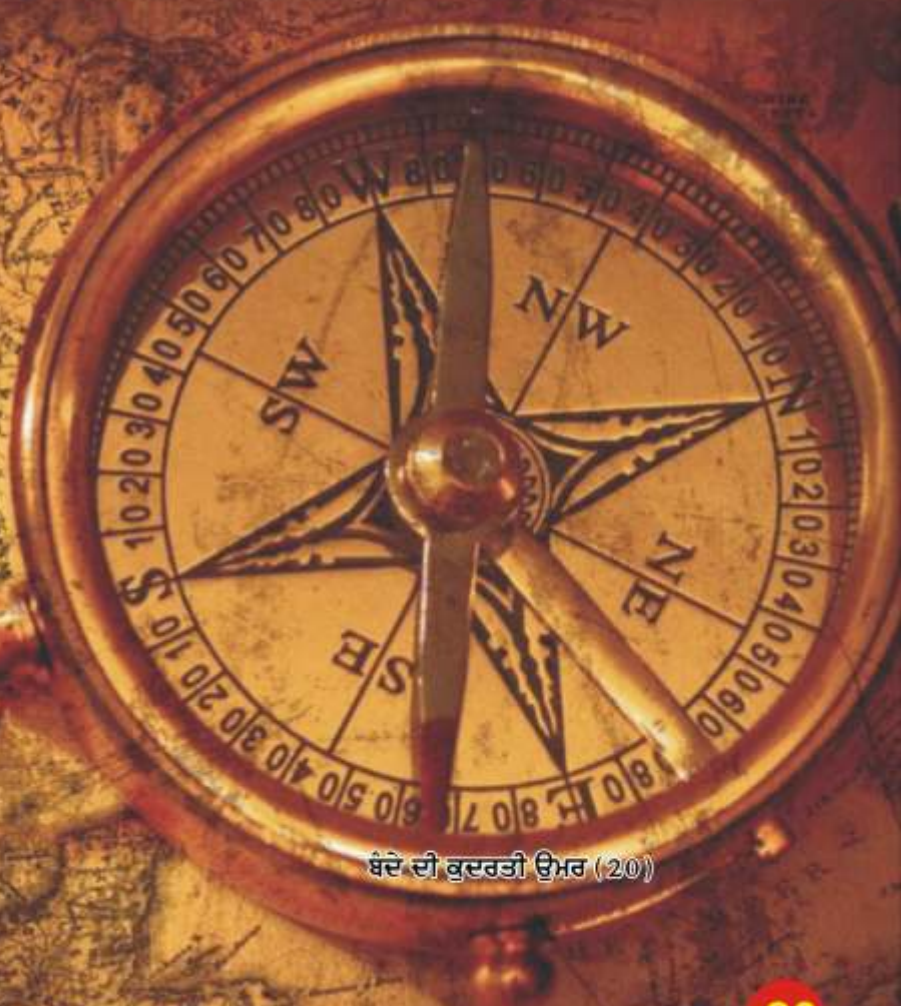
पाश के जन्म दिन पर विशेष

मैं घास हूँ

पाश

मैं आपके हर किए-धरे पर

उग आऊंगा

बम फेंक दो चाहे विश्वविद्यालय पर

बना दो होस्टल को मलबे का ढेर

सुहागा फिरा दो

भले ही हमारी झोपड़ियों पर

मुझे क्या करोगे

मैं तो घास हूँ

हर चीज पर उग आऊंगा

बंगे को ढेर कर दो

संगरूर मिटा डालो

धूल में मिला दो लुधियाना जिला

मेरी हरियाली अपना काम करेगी...

दो साल... दस साल बाद

सवारियाँ फिर किसी कंडक्टर से पूछेंगी

यह कौन-सी जगह है

मुझे बरनाला उतार देना

जहाँ हरे घास का जंगल है

मैं घास हूँ, मैं अपना काम करूंगा

मैं आपके हर किए-धरे पर उग आऊंगा।

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क Paytm के माध्यम से मोबाईल नम्बर 9416036203 पर या कोड को स्कैन करके भी भेजा जा सकता है। शुल्क भेजने के बाद इसी मोबाइल नम्बर पर अपना पता SMS या WhatsApp करें।

Reg.No.HARHIN/2014/60580

संपादक : बलवन्त सिंह - 94163-24802

संपादक सहयोग :-

गुरमीत अम्बाला - 94160-36203

बलबीर चन्द लौंगोवाल - 98153-17028

हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

द्विवार्षिक : 200/- रू.

विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :

गुरमीत अम्बाला

Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:

बलवन्त सिंह (प्रा.)

म.नं. 1062, आदर्श नगर,

नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।

जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)

Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia

पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-

https://tarksheelpath.blogspot.com

पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:

www.tarksheel.org

Tarksheel on Whatsapp : 9416036203

Tarksheel Mobile App :

Readwhere.com

Tarksheel on Twitter:

@gurmeeteditor

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969

Email: baldevmehrok@gmail.com

संकेतिका

आगामी मीटिंग के बारे

कोरोना महामारी के कारण तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक मीटिंग को आयोजित होना अभी अनिश्चित है। अगली मीटिंग जब भी संभव होगी, तर्कशील साथियों को विभिन्न माध्यमों से सूचित कर दिया जायेगा।

नोट : किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

सम्पादकीय

डर का माहौल

साल 2020 की शुरुआत से ही विश्व में करोना को लेकर एक डर का माहौल बनने लगा था,ज्यों ज्यों समय आगे बढ़ता गया, इस डर के माहौल में लोक डाऊन के चलते काम धंधे भी बन्द होने लगे। एक डर का माहौल और ऊपर से जीवनयापन के लिए चलते कामो का बन्द होना। इसका सबसे बड़ा असर मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने लगा, कुछ समय तक तो लोग घरों में बंद होकर रहे, लेकिन जल्दी ही समाज से कट कर जीने से बेहद पीड़ा होने लगी, विश्व स्वास्थ्य संगठन के निर्देशानुसार सरकारें सख्ती से लोकडाऊन का पालन कराने लगी इससे एक नई दहशत बन गई। सख्ती में कुछ स्थानों पर अनियमितताएं बरतने से कुछ लोग आक्रोशित भी होने लगे।

यकायक बदले माहौल ने जन मानस को मानसिक अवसाद की तरफ धकेल दिया,करोना के कारण बहुत से लोग इस कद्र अवसाद में चले गए कि उन्होंने आत्महत्या जैसे गलत कदम भी उठा लिए। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्ट के अनुसार जनता में वेतन न मिलने, वेतन कटौती होने, नौकरी छिनने, काम धंधों के बन्द होने या इसके साथ ही मनोरंजन के साधनों खेल-कूद, सिनेमा, रेस्टोरेंट, सांस्कृतिक गतिविधियों के एक दम बन्द होने से मानसिक रोगों ने जनता के बहुत बड़े हिस्से को अपनी चपेट में ले लिया। यधपि सरकार ने मानसिक तौर पर सलाह देने के लिए हेल्पलाइन नम्बर भी जारी किए, लेकिन सभी इन का लाभ नही उठा पाए ।

अगस्त महीने से लॉकडाऊन में बहुत सी रियायतें दी जाने लगी हैं आने वाले समय मे और भी रियायतें आ जाएंगी,लेकिन दूसरी तरफ करोना के केस बढ़ते जा रहे हैं। जनमानस ऊब से निकलने के लिए उतावला है वह स्वयं को मजबूत करने लगा है कि इसी के साथ कैसे जिया जाए ये एक अच्छी पहल जरूर है परन्तु सावधानी को या विश्व स्वास्थ्य संगठन के निर्देशों की पालना भी सुनिश्चित की जाती रहनी चाहिए।

बहुत से लोगों में आम वायरल बुखार खांसी जुकाम के कारण जहां भय व्याप्त हो रहा है, वहीं दूसरी तरफ करोना पॉजिटिव होने पर कुछ हस्पतालों की जो तस्वीर सामने आ रही उससे बहुत से लोग डर के माहौल में जीने को विवश हैं, जिससे मानसिक अवसाद बढ़ता है।

जरूरत है कि समाज मे एक सकारात्मक माहौल बने, डराने वाली अफवाहें न फैलें। ऐसी तस्वीरें व वीडियो न फैलने पाएं जिसमे करोना पॉजिटिव मरीज व उसके परिवार को त्रस्त दिखाया जाए, सहयोग व प्यार का वातावरण पनपे तो जल्दी ही समाज महामारी के दौर में भी सही ढंग से जीने लग जाएगा।

भारत में वैज्ञानिक समाजवाद के प्रणेता

शहीद-ए-आजम भगत सिंह

-डॉ. सी.डी.शर्मा

शहीद भगतसिंह का जन्म 28 सितम्बर, 1907 को लायलपुर बंगा में हुआ। उसी दिन उनके पिता किशन सिंह और दो चाचाओं - क्रान्तिकारी अजीत सिंह व स्वर्ण सिंह के जेल से रिहा होने की खुशखबरी से घर खुशियों से भर उठा। इनका घर स्वतन्त्रता-संग्रामियों व क्रान्तिकारियों की गतिविधियों का केन्द्र था। जेल में दी गई भीषण यातनाओं से बीमार हो कर इनके छोटे चाचा सरदार स्वर्ण सिंह की सन् 1910 में 23 वर्ष की छोटी उम्र में ही मृत्यु हो गई थी। सरकार द्वारा 'चिनाब कोलोनी एक्ट' लागू किए जाने तथा लगान व आबियाने में बहुत ज्यादा बढ़ोतरी किए जाने के खिलाफ लाला लाजपत राय के साथ मिल कर पंजाब में पहले व्यापक किसान आन्दोलन की शुरुआत करने वाले बड़े चाचा अजीत सिंह सन् 1909 में देश को आज़ाद कराने का इरादा लेकर देश से बाहर चले गए और पूरे 38 वर्ष प्रवास में रहे।

बचपन में भगतसिंह का लालन-पालन इनके दादा अर्जुन सिंह ने किया। चौथी कक्षा इन्होंने गांव के स्कूल से पास की। पांचवीं कक्षा में इनके पिता ने इन्हें डी.ए.वी. स्कूल लाहौर में दाखिला दिलवाया। स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद इन्होंने 1923 में लाहौर के नेशनल कॉलेज से एफ.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

ग्यारह वर्ष के भावुक किशोर भगतसिंह 'रौलट एक्ट' के खिलाफ निकाले जुलूस में शामिल हुए थे। सन् 1919 में ये जलियांवाला बाग से पुलिस द्वारा मारे गए भारतीयों की खून से सनी मिट्टी घर लाए थे। सन् 1921 में इन्होंने अपने दादा जी को पत्र द्वारा रेलवे कर्मचारियों की हड़ताल की तैयारी के बारे में सूचना दी थी। सन् 1922 में देश की आज़ादी की चाह दिल में संजोए भगतसिंह भी हजारों छात्रों की तरह पढ़ाई छोड़ असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े। 'एक साल में स्वराज्य' के गान्धी जी के आह्वान पर शुरू हुआ यह आन्दोलन देखते ही देखते दावानल की तरह सारे देश में फैल गया। चौतरफा संघर्ष की लपटों से न केवल ब्रिटिश सरकार के हाथ-पैर फूल गए बल्कि कांग्रेसी नेताशाही भी घबरा उठी। गान्धी जी आन्दोलन को वापिस लेने के मौके की तलाश में थे। चौरी-चौरा की घटना से उन्हें यह मौका मिल गया। किसी से सलाह किए बगैर चुपचाप उन्होंने यह आन्दोलन वापिस ले लिया और अवाम को मायूसी के गर्त में धकेल कर राजनीति से अलग हो गए। पं. मोतीलाल नेहरू, लाला लाजपत राय और दूसरे नेताओं ने जेल से गान्धी जी के इस फैसले के विरोध में लम्बे-लम्बे खत लिखे।

क्रान्तिकारी नौजवानों ने देश में व्याप्त हताशा के माहौल को खत्म करने के लिए पहल कदमी की। पंजाब, यू.पी. व बिहार के नौजवान पहले-पहल एकजुट हुए। अपने को संगठित कर उन्होंने पुनः हथियार उठाने का फैसला किया। शचीन्द्र नाथ सान्याल ने सन् 1923 में 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' (एच.आर.ए.) की बुनियाद डाल अखिल भारतीय स्तर पर क्रान्तिकारियों को इसमें जुटाना शुरू किया। लाहौर में भगतसिंह की सान्याल से मुलाकात हुई। इस भेंट से भगतसिंह को एक नई दिशा मिली और उनकी क्रान्ति-पथ की यात्राा शुरू हुई।

परिवार वालों के शादी के दबाव के विरोध में भगतसिंह लाहौर छोड़कर कानपुर चले गए। वहां क्रान्तिकारियों के सहयोगी उत्तर प्रदेश कांग्रेस के प्रसिद्ध नेता गणेश शंकर विद्यार्थी ने इन्हें अपने अखबार 'प्रताप' के सम्पादक मण्डल में जगह दी। इसी पत्र में काम करते समय उन्होंने सत्रह वर्श की अवस्था में 'पंजाब की भाषा तथा लिपि की समस्या' पर अपना पहला लेख लिखा। विद्यार्थी जी के घर पर ही इनकी मुलाकात चन्द्रशेखर आज़ाद से हुई।

'एच.आर.ए.' के क्रान्तिकारी साथी विजय कुमार सिन्हा, शिव वर्मा, जयदेव कपूर, अजय घोष व बटुकेश्वर दत्त से भी भगतसिंह की कानपुर में ही भेंट हुई। यहां रहते हुए उन्होंने कार्ल मार्क्स की कृति 'कैपिटल' का अध्ययन पूरा किया। काजी नज़रुल इस्लाम की बंगाली कविताएं भी उन्होंने इसी काल में पढ़ीं। इसी दौरान कुछ समय के लिए वे अलीगढ़ जिले के शादीपुर गांव के स्कूल में हैड मास्टर भी रहे।

घर छोड़ने के छः माह बाद अपनी दादी की बीमारी व उनकी अन्तिम घड़ी का समाचार मिलने पर वे एक बार घर लौटे। पर जल्दी ही वे दिल्ली चले गए। कुछ समय उन्होंने यहां 'वीर अर्जुन' के सम्पादकीय विभाग में काम किया। कोलकाता से प्रकाशित साप्ताहिक 'मतवाला' में उन्होंने सन् 1924 में 'विश्व प्रेम' और सन् 1925 में 'युवक' शीर्षक से लेख लिखे।

सन् 1926 में इन्होंने अपने साथी भगवती चरण वोहरा के साथ मिल 'नौजवान भारत सभा' का गठन किया। भगत सिंह इसके महासचिव और भगवती चरण प्रचार सचिव बने। 6 अप्रैल, 1928 को दोनों ने सभा का घोषणा पत्र तैयार किया। इसमें उन्होंने स्पष्ट लिखा कि उनका लक्ष्य देश से मात्र अंग्रेजों को खदेड़ना ही नहीं बल्कि भारत में रूसी समाजवादी प्रजातन्त्र जैसी व्यवस्था कायम करना है। सन् 1927 में भगत सिंह ने शचीन्द्रनाथ सान्याल की पुस्तक 'बन्दी जीवन' का पंजाबी अनुवाद छपवाया। नौजवानों पर भगतसिंह के बढ़ते हुए प्रभाव से चौकन्नी पुलिस ने 'दशहरा बम काण्ड' में शामिल होने का झूठा आरोप लगाकर उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। बाद में 60,000 रुपये की जमानत पर उन्हें रिहा किया गया।

सन् 1927-28 में उन्होंने पंजाबी पत्रिका 'किरती' में कई शहीदों के जीवन परिचय लिखकर लोगों में जड़ता और निष्क्रियता को तोड़कर क्रान्तिकारी स्पिरिट पैदा करने का श्रेष्ठ प्रयास किया।

अछूतों पर हो रहे अत्याचारों से वे बहुत आहत होते थे। इनका विरोध करते हुए 'किरती' में 'अछूत का सवाल' लेख में उन्होंने लिखा ः फ्क्योंकि एक आदमी गरीब मेहतर के घर पैदा हो गया है, इसलिए जीवन भर मैला ही साफ करेगा और दुनिया में किसी तरह के विकास का काम पाने का उसे हक नहीं है, ये बातें फिजूल हैं। हम तो साफ कहते हैं कि उठो! अछूत कहलाने वाले असली जन-सेवको तथा भाइयो, उठो! अपना इतिहास देखो। गुरु गोबिन्द सिंह की फौज की असली शक्ति तुम्हीं थे। शिवाजी तुम्हारे भरोसे ही सब कुछ कर सके, जिस कारण उनका नाम आज भी जिन्दा है। तुम्हारी कुर्बानियां स्वर्णाक्षरों में लिखी हुई हैं। लेकिन ध्यान रहे नौकरशाही के झांसे में मत फंसना। यह तुम्हारी कोई सहायता नहीं करना चाहती, बल्कि तुम्हें अपना मोहताज बनाना चाहती है। यही पूंजीवादी नौकरशाही तुम्हारी गुलामी और गरीबी का कारण है।ए भगत सिंह सिर्फ विचार में ही नहीं व्यवहार में भी बिल्कुल खरे उतरे। फांसी से पहले जब जेलर अकबर अली ने उनकी खास इच्छा पूछी तो उन्होंने कहा कि वे बेबे के हाथ की रोटी खाना चाहते हैं। उनकी काल कोठरी में जो भंगी सफाई करने आता था, वे उसे बेबे कहते थे। फांसी का फंदा चूमने से पहले बड़े आनन्द से भगत सिंह ने बेबे के हाथ की रोटी खाई।

अंग्रेजी हुकूमत ने इस दौर में लोगों की एकता तोड़ने के लिए धर्मान्ध तत्वों को हवा देकर साम्प्रदायिक दंगे भड़काने शुरू कर दिए। सारे देश में हिन्दू-मुस्लिम दंगे फैल गए। सन् 1926 में लाहौर में भी हिन्दू-मुस्लिम दंगा हुआ। भगतसिंह इससे बहुत दुःखी हुए। क्षुब्ध हो कर उन्होंने अपने साथियों को कहा, फ्ईश्वर को जब तक माना जाएगा, तब तक मनुष्य कभी मनुष्य के निकट नहीं आ सकेगा। जून 1928 में 'साम्प्रदायिक दंगे और उनका इलाज' शीर्षक के तहत उन्होंने लिखा, फ्लोगों को परस्पर लड़ने से रोकने के लिए वर्ग-चेतना की जरूरत है। गरीब मेहनतकशों व किसानों को स्पष्ट समझा देना चाहिए कि तुम्हारे असली दुश्मन पूंजीपति हैं, इसलिए तुम्हें इनके हथकण्डों से बचकर रहना चाहिए और इनके हत्थे चढ़, कुछ न करना चाहिए। संसार के सभी गरीबों के, चाहे वे किसी भी जाति, रंग, धर्म या राष्ट्र के हों, अधिकार एक ही हैं। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम धर्म, रंग, नस्ल और राष्ट्रीयता व देश के भेदभाव मिटाकर एकजुट हो जाओ और सरकार की ताकत अपने हाथ में लेने का यत्न करो। इन यत्नों से तुम्हारा नुकसान कुछ नहीं होगा,

इससे किसी दिन तुम्हारी जंजीरें कट जाएंगी और तुम्हें आर्थिक स्वतन्त्रता मिलेगी।

भगत सिंह का विचार था कि हिन्दुस्तान में पूंजीवादी जनतन्त्र नहीं बल्कि समाजवादी जनतन्त्र की स्थापना करनी होगी। 'लाला लाजपत राय और नौजवान' शीर्षक लेख में वे लिखते हैं, फ्प्रश्न यह है कि आजकल, 1928 में, क्या दुनिया को ढ्रांसीसी क्रान्ति से कोई सबक सीखना और उसे अपना आदर्श बनाना चाहिए या आज नए वातावरण में नए विचारों से पूर्ण रूसी क्रान्ति को? क्या लाला जी की यह मंशा है कि अब अंग्रेजी शासन के विरुद्ध ही क्रान्ति की जाए और शासन की बागडोर अमीरों के हाथों में दी जाए? करोड़ों जन इसी तरह नहीं, इससे भी अधिक बुरी स्थितियों में पड़ें, मरें और तब फिर सैकड़ों बरसों के खून-खराबे के पश्चात् पुनः इस राह पर आएं और फिर हम अपने पूंजीपतियों के विरुद्ध क्रान्ति करें? यह अव्वल दर्जे की मूर्खता होगी।ट

समाजवादी प्रजातन्त्र की स्थापना के मकसद से भगतसिंह ने 8-9 सितम्बर, 1928 को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला के खण्डहरों में बुलाई गई 'एच. आर.ए.' की मीटिंग में प्रस्ताव रखा कि दल का नाम 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' की बजाए 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' (हिसप्रस) रखा जाए। चन्द्रशेखर आज़ाद 'हिसप्रस' के कमाण्डर इन चीफ निर्वाचित हुए तथा भगतसिंह व विजय कुमार सिन्हा को राष्ट्रीय स्तर पर काम के संयोजन की जिम्मेदारी मिली।

सन् 1928 में दुनियाभर में महामन्दी के संकट की शुरूआत हो गई। भारत भी इससे अछूता न रहा। मन्दी के चलते भारतीय श्रमिकों की दुर्दशा और भी बढ़ गई। देश में बड़े पैमाने पर मजदूर हड़तालें करने लगे। अंग्रेज सरकार ने ब्रिटिश पूंजीपतियों को राहत देने के लिए रुपए की विनिमय दर एक शिलिंग चार पेन्स की जगह एक शिलिंग छः पेन्स तय कर रातों-रात उनके करोड़ों रुपयों के मुनाफे का प्रबन्ध कर दिया। इसी साल सरकार ने भारतीय इस्पात उद्योग को सन् 1924 में दिया गया संरक्षण हटा कर पुनः इस उद्योग में इंग्लैण्ड की पक्षपाती विभेदकारी नीति को लागू कर दिया। इससे भारतीय उद्योगपति भी कुछ असन्तुष्ट हुए। देश में व्याप्त असन्तोष को कम करने के लिए अंग्रेजों ने सभी गोरे सदस्यों से गठा साइमन कमीशन भारत भेजा। देश में जहां-जहां यह कमीशन गया इस का पुरजोर विरोध हुआ। वस्तुतः देश की आजादी की मुहिम जिसे सन् 1922 में गान्धी जी ने असहयोग आन्दोलन वापिस लेकर पंगु कर दिया था, में साइमन कमीशन के खिलाफ आक्रोश ने नवजीवन का संचार कर दिया।

पंजाब प्रान्त में 'नौजवान भारत सभा' सबसे ज्यादा सक्रिय थी। लाहौर में इसके नेतृत्व में हजारों लोगों ने साइमन कमीशन को काले झण्डे दिखाए। हड़काई पुलिस ने जुलूस पर अंधाधुंध लाठीचार्ज कर दिया । इस लाठीचार्ज में लाला लाजपतराय गम्भीर रूप से घायल हो गए और 17 नवम्बर, 1928 को उनका देहान्त हो गया। लाला जी की मृत्यु के दुखद समाचार से सारे देश में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ गुस्से की लहर दौड़ गई।

अपने जीवन के आखिरी सालों में लाला जी ने 'हिन्दू महासभा' जैसे धुर साम्प्रदायिक संगठन का साथ देना शुरू कर दिया था। 'नौजवान भारत सभा' ने इसका खुलकर विरोध किया। इससे क्रुद्ध होकर लाला जी ने भगतसिंह, सुखदेव व भगवतीचरण वोहरा के लिए अपने बंगले के फाटक हमेशा के लिए बन्द कर दिए। पर राष्ट्रीय आन्दोलन के अग्रणी नेता लालाजी पर किए गए इस प्रहार को क्रान्तिकारियों ने देशवासियों की गैरत को चुनौती माना। 17 दिसम्बर, 1928 को अंग्रेजी शासन के गुर्गे डी. एस. पी. सॉण्डर्स की हत्या कर उन्होंने इस घटना का बदला लिया। अगले ही रोज बलराज (चन्द्रशेखर आज़ाद) हस्ताक्षरित नोटिस द्वारा अत्याचारी ब्रिटिश सरकार को चेताते हुए इन्होंने लिखा, फ्हम सब विरोध और दमन के बावजूद क्रान्ति की पुकार को बुलन्द रखेंगे और फांसी के तख्तों पर से भी पुकार कर कहेंगे - इन्कलाब जिन्दाबाद! हमें एक आदमी की हत्या करने का खेद है। परन्तु यह आदमी उस निर्दयी, नीच और अन्यायपूर्ण व्यवस्था का अंग था जिसे समाप्त कर देना आवश्यक था। इस आदमी की हत्या ब्रिटिश शासन के कारिन्दे के रूप में की गई है। यह सरकार संसार की सबसे अत्याचारी सरकार है। मनुष्य का रक्त बहाने के लिए हमें खेद है। परन्तु क्रान्ति की वेदी पर कभी-कभी रक्त बहाना अनिवार्य हो जाता

है। हमारा उद्देश्य एक ऐसी क्रान्ति से है जो मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का अन्त कर देगी।

सॉण्डर्स की हत्या के बाद भगतसिंह दुर्गा भाभी के साथ कोलकात्ता चले गए। वहां चल रहे कांग्रेस अधिवेशन के समय उनकी मुलाकात यतीन्द्रनाथ दास तथा कुछ अन्य क्रान्तिकारियों से हुई। दास बम बनाने के विशेषज्ञ थे। साथियों को बम बनाने की शिक्षा देने के भगतसिंह के अनुरोध को स्वीकार कर दास आगरा चले आए।

सन् 1928 में भारत में हो रहे श्रमिक आन्दोलनों की दूसरे देशों के मजदूर भी आर्थिक राजनैतिक मदद करने लगे थे। विशेषतः इंग्लैण्ड के मजदूर नेता तथा सोवियत रूस के समाजवादी नेता भारत आकर मजदूरों को संगठित करने में सक्रिय योगदान करने के लिए प्रयासरत थे। इन गतिविधियों तथा तेजी से उभर रहे मजदूर आन्दोलनों को रोकने के मकसद से सरकार ने केन्द्रीय असेम्बली में 'ट्रेड डिस्प्यूट्स बिल' और 'पब्लिक सेफ्टी बिल' पेश करने का फैसला किया। पहले बिल में वायसराय को यह अधिकार दिया गया था कि वह अंग्रेज या किसी अन्य विदेशी समाजवादी को भारत से बाहर निकाल दे। दूसरे बिल का उद्देश्य मजदूरों के ट्रेड यूनियन अधिकारों पर पाबन्दियां लगाना था। भगतसिंह देश में हो रही इन राजनैतिक हलचलों पर पैनी नजर रखे हुए थे।

देशभर की जनता व असेम्बली में पूरे विपक्ष के विरोध के बावजूद सरकार इन बिलों को पास करवाने के लिये कटिबद्ध थी। इस दौरान भगत सिंह आगरा में थे। उन्होंने पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के समक्ष प्रस्ताव रखा कि पार्टी को इस सरकारी निरंकुशता का प्रतिवाद असेम्बली में खाली जगह में बम फेंक कर करना चाहिए। बम फेंकने के बाद साथी भागने की कोशिश न करें, अपनी गिरफ्तारी दें तथा केस के दौरान अदालत को पार्टी के उद्देश्यों के प्रचार के लिए मंच के तौर पर इस्तेमाल करें।

8 अप्रैल, 1929 को भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने दर्शक दीर्घा से असेम्बली भवन के खाली स्थान पर गैर नुकसानदायक बम फेंके तथा 'इन्कलाब िान्दाबाद' व 'साम्राज्यवाद का नाश हो' नारे लगाते हुए इस कार्रवाई के राजनैतिक उद्देश्य को स्पष्ट करने वाले पर्चे भी फेंके।

असेम्बली बम धमाका शहीद भगतसिंह और उनके दल का वैज्ञानिक समाजवाद एवं सर्वहारा क्रान्ति के कार्यक्रम को सारे देश में फैलाने के लिए सुविचारित एवं सुनियोजित ढंग से उठाया गया एक क्रान्तिकारी कदम था, कोई आतकंवादी कार्यवाही नहीं था। पं. मोतीलाल नेहरू, महात्मा गान्धी तथा जवाहरलाल नेहरु ने भगतसिंह व दत्त के इस कार्य की निन्दा की। 'मॉडर्न रिव्यू' के सम्पादक रामानन्द चट्टोपाध्याय ने जब इन्कलाब िान्दाबाद नारे की खिल्ली उड़ाने तथा इसे निरर्थक ठहराने की कोशिश की तो भगतसिंह व दत्त ने उन्हें पत्र लिख कर बताया कि इस नारे का अर्थ देश और समाज में अराजकता फैलाना नहीं बल्कि मनुष्य जाति को 'प्रगति के लिए परिवर्तन की भावना व आकांक्षा' से स्थायी तौर पर ओतप्रोत रखना है ।

असेम्बली बम काण्ड के लक्ष्य को सरकार भी बखूबी समझ गई थी। लार्ड इरविन ने असेम्बली के संयुक्त अधिवेशन में घोषणा की, ्यह विद्रोह किसी व्यक्ति विशेष के खिलाफ नहीं वरन् सम्पूर्ण शासन व्यवस्था के विरुद्ध था।ॅ

अध्ययन में भगतसिंह की छात्र जीवन से ही गहरी रुचि थी। दल में भी काम से फुर्सत मिलते ही वे इतिहास, दर्शन, राजनैतिक अर्थशास्त्र व साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ने लग जाते थे। पर जेल के अन्दर विश्व क्रान्तिकारी साहित्य और विशेषतः मार्क्सवाद का जो गम्भीर अध्ययन उन्होंने किया वह बेमिसाल है। विक्टर ह्यूगो, अप्टन सिंक्लेयर, पेन, जॉर्ज बर्नार्ड शॉ, डिकन्स, दोस्तोव्स्की, गोर्की आदि विख्यात लेखकों की सैंकड़ों पुस्तकों के अलावा उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणा पत्र, मार्क्स की पूंजी का प्रथम खण्ड व फ्रांस में गृहयुद्ध, एंगेल्स की परिवार, निजी सम्पत्ति व राज्य की उत्पत्ति व जर्मनी में क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति तथा लेनिन की द्वितीय इन्टरनेशनल का पतन, सर्वहारा क्रान्ति और गद्दार कॉटस्की एवं वामपंथी कम्युनिज्म एक बचकाना मर्ज सरीखी पुस्तकें भी पढ़ ली थीं। जेल में उन्होंने कई पत्रों, सन्देशों व दस्तावेजों के लेखन के अतिरिक्त चार पुस्तकें भी लिखी थीं, जिन्हें जेल से बाहर भेजा गया था लेकिन बाद में इनकी खोज न हो सकी। ये पुस्तकें थीं : (1) आत्मकथा (2) समाजवाद का आदर्श (3) भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन और क्रान्तिकारियों का संक्षिप्त जीवन परिचय और (4)

मृत्यु के द्वार पर। भगतसिंह के साथी भगवानदास माहौर लिखते हैं, फक्रान्ति प्रयास के इस विकास मार्ग में भगत सिंह एक ऐसे व्यक्ति थे जिसे अंग्रेजी में ब्वतदमत ेजवदम (मोड़सूचक पाषाण) कहा जाता है। समय और समाज की आवश्यकताओं ने भगत सिंह को ही माध्यम बना कर उत्तर भारत के संगठित गुप्त सशस्त्र क्रान्तिकारियों को समाजवाद की ओर उन्मुख कर दिया तथा क्रान्तिकारी कार्यकलाप को धार्मिक मनोभूमि से ऊपर उठाया। और जहां क्रान्तिकारी लोग पुलिस की यन्त्रणाओं और मृत्यु के भय से मुक्त होने के लिए शरीर की नश्वरता और आत्मा के नित्यत्व का निदिध्यासन, पद्मासन लगाए गीता पाठ करते हुए नजर आते थे, वहां वे अब मार्क्स की 'कैपिटल' का स्वाध्याय करते नजर आए।ृ

अपने गहन अध्ययन-मनन और कठोर वैचारिक संघर्ष के जरिए वे न सिर्फ अपने परिवार के आर्य समाजी धार्मिक प्रभाव से मुक्त हुए बल्कि आध्यात्मवादी दृष्टिकोण को समग्र रूप से त्याग कर उन्होंने सुसंगत भौतिकवादी (मार्क्सीय द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी) दृष्टिकोण को अपनाया। अपने निबन्ध 'मैं नास्तिक क्यों हूँ ?' में वे लिखते हैं, फ1926 के अन्त तक मुझे इस बात पर यकीन हो गया था कि सृष्टि का निर्माण, व्यवस्थापन और नियन्त्रण करने वाली किसी सर्व शक्तिमान परमसत्ता के अस्तित्व का सिद्धान्त एकदम निराधर है।ृ बात-बात में धर्म का ज्ञान बघारने वाले अपने साथी फणीन्द्र नाथ घोष को उन्होंने बड़े विनम्र लेकिन सधे लहजे में कहा था, फआपका रास्ता अकर्मण्यता का रास्ता है, निष्काम कर्म की आड़ में भाग्यवाद की घुट्टी पिला कर देश के नौजवानों को सुलाने का रास्ता। यह कभी भी मेरा रास्ता नहीं बन सकता। दुनिया में अभी तक जितना रक्तपात धर्म के नाम पर धर्म के ठेकेदारों ने किया है, उतना शायद ही किसी ने किया हो। सच बात तो यह है कि इस धरती का स्वर्ग धर्म की आड़ में ही उजाड़ा गया है। रही बात मसीहों की सो उन्होंने अगर धरती को स्वर्ग बनाने की कोशिश की होती तो शायद दुनिया की वह तस्वीर न होती जो हम देख रहे हैं। मसीहों ने धरती की बजाए आकाश में स्वर्ग बसाया, इसीलिए वे कारगर न हो सके।ृ उन्होंने दृढ़ता के साथ कहा था, फनिरा विश्वास और अन्धविश्वास खतरनाक है, इससे मस्तिष्क कुण्ठित होता है और आदमी प्रतिक्रियावादी हो जाता है।ृ अपने साथी लाला रामशरणदास की काव्य-पुस्तक 'ड्रीमलैण्ड की भूमिका' में भगत सिंह लिखते हैं, फउसकी विश्व की व्याख्या हेतुवादी एवं पारलौकिक (मेटाफिजिकल) है जबकि मैं एक भौतिकवादी हूँ और गोचर जगत की मेरी व्याख्या कारण सम्बद्ध होगी। ईश्वर पर विश्वास रहस्यवाद का परिणाम है और रहस्यवाद मानसिक अवसाद की स्वाभाविक उपज है। यह जगत 'माया' है या 'मिथ्या' है, एक स्वप्न या कल्पना है - ऐसे विचारों को रहस्यवाद कहते हैं। इन विचारों को पुराने जमाने के शंकराचार्य तथा इन जैसे अन्य दार्शनिकों ने जन्म दिया और विकसित किया था। लेकिन भौतिकवादी दर्शन के अन्तर्गत इस प्रकार की विचारधारा के लिए कोई स्थान नहीं है।ृ

सुखदेव को मार्च, 1929 में लिखा खत भगतसिंह की प्यार और बलिदान जैसी सूक्ष्म मानवीय भावनाओं के बारे में गहरी समझ को प्रकट करता है। इस पत्र में भगतसिंह लिखते हैं, फमैं पुरजोर कहता हूँ कि मैं आशाओं और आकांक्षाओं से भरपूर जीवन की समस्त रंगीनियों से ओतप्रोत हूँ, लेकिन वक्त आने पर मैं सब कुछ कुर्बान कर दूंगा। सही अर्थों में यही बलिदान है। ये वस्तुएं मनुष्य की राह में कभी भी अवरोध नहीं बन सकतीं, बशर्ते कि वह इन्सान हो। जल्द ही तुम्हें इसका प्रमाण मिल जाएगा। किसी के चरित्र के सन्दर्भ में विचार करते समय एक बात विचारणीय होनी चाहिए कि क्या प्यार किसी इन्सान के लिए मददगार साबित हुआ है ? इसका जवाब मैं आज देता हूँ- हां, वह मेजिनी था। तुमने अवश्य पढ़ा होगा कि अपने पहले नाकाम विद्रोह, मन को कुचल डालने वाली हार का दुख और दिवंगत साथियों की याद- यह सब वह बर्दाश्त नहीं कर सकता था। वह पागल हो जाता या खुदकशी कर लेता। लेकिन प्रेमिका के एक पत्र से वह दूसरों जितना ही नहीं, बल्कि सबसे अधिक मजबूत हो गया। प्यार सदैव मानवचरित्र को ऊंचा करता है, कभी भी नीचा नहीं दिखाता, बशर्ते कि प्यार प्यार हो। मनुष्य के पास प्यार की एक गहरी भावना होनी चाहिए जिसे वह एक व्यक्ति विशेष तक सीमित न करके सर्वव्यापी बना दे।''

(शहीद भगत सिंह के अतिमहत्त्वपूर्ण दस्तावेज पुस्तक से साभार)

महिला सम्मान के लिए संघर्षः सबरीमाल

(सबरीमाला मंदिर के कुछ अनछुए पहलू संघर्ष की कहानी)

–डा. प्रमोद दुर्गा/ राहुल थोरात

गतांक से आगे......

संविधान के समानता तत्व पर अमल होने के लिए मेरा मंदिर प्रवेश – प्रो. बिन्दू

मैडम, आप के बारे में जानने के लिए हम उत्सुक हैं।

मेरी शिक्षा एल.एल.एम. तक हुई है और मैं कोझिकोड सरकारी विधि महाविद्यालय में प्राध्यापक हूँ। मेरा अंतर्जातीय विवाह हुआ है तथा मेरे पति भी आंदोलन के कार्यकर्ता हैं। मैं पहले कम्युनिस्ट पार्टी में काम करती थी। लेकिन किसी कारणवश वह छोड़ कर वर्तमान में दलित आंदोलन में सक्रिय हूँ।

मंदिर प्रवेश के पीछे आपकी भूमिका क्या थी?

मैं जब छात्रा थी तब से आंदोलन में कार्य करने वाली कार्यकर्ता हूँ। संविधान के समानता के अधिकार पर अमल करना हर एक भारतीय का कर्तव्य है, यह मैं मानती हूँ। इसी कारण मैंने सबरीमाला पहाड़ पर स्थित अय्यप्पा मंदिर में प्रवेश किया। मेरा कहना यह है कि, अय्यप्पा मंदिर यह मूलतः हिन्दू मंदिर नहीं है, बल्कि उस विभाग में रहने वाले मलार्या आदिवासी समाज का वह एक मंदिर है और अय्यप्पा स्वामी आदिवासी भगवान ही हैं। कुछ शतकों पहले आदिवासी परंपरा के अनुसार महिलाओं को तो प्रवेश है ही।

मेरे मंदिर में प्रवेश करने के दो कारण हैं। एक, भारतीय संविधान और समानता के तत्व पर अमल करना और दूसरा यह कि मंदिर के सच्चे आदिवासी परंपरा में महिलाओं को प्रवेश तो था ही, उन सच्चे आदिवासी परम्पराओं पर अमल करने के लिए भी मैं मंदिर में प्रवेश किया।

आप ने मंदिर में प्रत्यक्ष प्रवेश कैसे किया?

मा. सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के बाद केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने यह घोषित किया कि मा. सर्वोच्च न्यायालय के फैसले पर अमल करने के लिए केरल राज्य सरकार प्रतिबद्ध है। जो महिलाएं अय्यप्पा मंदिर में प्रवेश करना चाहती हैं उन्हें पुलिस सुरक्षा के साथ मंदिर में प्रवेश दिया जाएगा।

उस के बाद मैं और कणकदुर्गा दिनांक 24 दिसंबर को सीधे पुलिस स्टेशन में पहुंचे और पुलिस को कहा कि सुप्रीम कोर्ट के और मुख्यमंत्री के आदेश पर अमल करें। हमें मंदिर में ले चलें। लेकिन पुलिस ने पहले हमें समझा-बुझाने में चार घंटे गँवाएँ। लेकिन हम अपने निर्णय पर निश्चल थे। हम दो महिलाएं मंदिर में प्रवेश करने वाली हैं यह समाचार हवा की तरह सर्वत्र फैल गया। हजारों भक्त पहाड़ पर जमा हुए। उन्हों ने हमारी राह रोक दी। इतनी बड़ी संख्या में उपस्थित भक्तों के सामने पुलिस की एक न चली। पुलिस ने हमें कब्जे में ले कर मंदिर से दूर ले जा कर छोड़ दिया। यह हमारा पहला प्रयास नाकामयाब रहा।

बाद में आप ने क्या किया?

मैं और कणकदुर्गा ने यह कसम खाई थी की कुछ भी कर के मंदिर में प्रवेश लेना ही है और इस के सिवा घर लौटना नहीं हैं। हमारे मंदिर प्रवेश के समाचार के कारण केरल का सामाजिक वातावरण और ज्यादा खराब हुआ। इस कारण हम दोनों की जान को खतरा निर्माण हो जाने के कारण हम ने केरल राज्य से बाहर जाने का निर्णय लिया। उस के अनुसार हम कर्नाटक के कोडगू ग्राम जा कर आठ दिन रहें।

इतने अधिक विरोध के बावजूद आप ने मंदिर प्रवेश कैसे किया?

कोडगू से स्पेशल टॅक्सी से रात भर सफर कर के दिनांक 3 जनवरी 2019 के भोर में हम फिर मंदिर के समीप पहुंचे। 3 जनवरी को प्रातः पुलिस ने हमें खुफिया तरीके से वी आई पी मार्ग से अय्यप्पा

मंदिर तक पहुंचाया और हम दोनों ने अय्यप्पा स्वामी का दर्शन किया। दर्शन के समय कतार में उपस्थित सामान्य भक्तों ने हमारा विरोध बिलकुल ही नहीं किया। बल्कि हमें पीने के लिए पानी दिया।

30 साल न्यायालय में संघर्ष कर के प्राप्त किए हुए निर्णय पर हम दोनों ने अमल किया।

क्या आप के मंदिर प्रवेश के बाद आप का विरोध हुआ?

अय्यप्पा मंदिर में प्रवेश करने के बाद मुझे कट्टरपंथी लोगों की आलोचना का सामना करना पड़ा। पुलिस ने कुछ समय मुझे सुरक्षा प्रदान की। लेकिन बाद में मैंने उसे नकारा। सोशल मीडिया पर मुझे बड़े पैमाने पर ट्रोल किया गया। मेरे अश्लील फोटो सोशल मीडिया में फैलाएँ गए। कुछ पोर्न साइट पर भी मेरे फोटो चिपका दिये गए। मेरा फोन नंबर भी उस के साथ दिया गया। विरोधियों ने मेरा चरित्र-हनन इतने बड़े पैमाने पर किया कि विरोधी ये दर्शाना चाहते थे की ये एक अपवित्र महिला है और इस के कारण यह मंदिर अपवित्र हुआ है। इन सभी बातों का मुझे काफी मानसिक कष्ट हुआ। किसी का गुमनाम फोन, अश्लील मेसेज आना, अपने फोटो बुरी तरह ट्रोल हुए है यह देखना बहुत ही तकलीफदेह था। मन को और भावना को हिलाने वाला और निचोड़ने वाला था। मेरा 'ट्रोल' होने का अनुभव बहुत ही बुरा है। कुछ अनुभव तो बहुत ही विदारक हैं, जो मैं कह नहीं सकती और आप छाप भी नहीं सकते।

लेकिन इस समय में मेरे पति और परिवार ने और आंदोलन के कार्यकर्ताओं ने मुझे बहुत सहकार्य किया। सोशल मीडिया पर मेरी बदनामी के खिलाफ मैंने पुलिस में शिकायत दर्ज की थी, लेकिन उस का उतना संज्ञान नहीं लिया गया।

मंदिर प्रवेश के बाद अब आप की भूमिका क्या हैं?

हम ने कुछ तो गलत किया, क्यूँ इस चक्कर में पड़ें, ऐसा कुछ लगता नहीं। जो किया उस पर सार्थ अभिमान है। यह किसी ना किसी ने करना आवश्यक था। हमारे इस मंदिर प्रवेश के कारण भविष्य में महिलाओं के साथ धार्मिक बारे में समानता का व्यवहार किया जाएगा। महिला होना यह एक प्रकार की अस्पृश्यता ही है लेकिन अस्पृश्य समाज की महिला होना उस से भी भयावह है। आप इंसान के रूप में जी ही नहीं सकते इस प्रकार की व्यवस्था की गयी है। इस देश के लोगों को इंसान यह पहचान देश के संविधान ने निर्माण कर के दी है। उस पर अमल करना यह प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है, यह मैं मानती हूँ और भविष्य में फिर इसे दोहराने का अवसर मिल गया तो जरूर फिर एक बार मंदिर में जाऊँगी।

प्रो. बिन्दु के इस निर्धार को सलाम कर के हम अंगडीपुरम इस गाँव की ओर बस से सफर शुरू किया। इस गाँव में ही दूसरी महिला रहती है जिसने मंदिर में प्रवेश किया था। उस का नाम है कणकदुर्गा। अंगडीपुरम यह गाँव मल्लपुरम इस जिला स्थल पर है। यह जिला याने सोने का खजाना माना जाता है। यहाँ के अनेक लोग गल्फ देशों में नौकरी करते हैं।

चार घंटे बस सफर के बाद हम दोनों अंगडीपुरम पहुंचे। बस स्टाप पर, हमें ले जाने के लिए कणकदुर्गा की सुरक्षा के लिए तैनात पुलिस अफसर आए थे। उन्हें हम ने हमारे भेंट का उद्देश्य कथन किया। वें हमें कणकदुर्गा के घर ले गए। एक छोटे से टीले पर कणकदुर्गा का छोटा सा बंगला है। हमारे रिक्शा की आवाज सुन कर कणकदुर्गा गेट खोलने के लिए बाहर आ गयी। उन्हों ने हमारा स्वागत मुसकुराते हुए किया। चाय पान हो जाने के बाद साक्षात्कार शुरू हुआ।,

मेरे मंदिर प्रवेश के बाद परिवार और समाज द्वारा मेरा उत्पीड़न : कणकदुर्गा

कणकदुर्गा मैडम, आप के बारे में जानने के लिए हम उत्सुक हैं।

मेरी शिक्षा बी.कॉम. तक हुई है। मैं केरल सरकार के रेशनिंग विभाग में नौकरी कर रही हूँ। मेरे दो बच्चे हैं। मेरे पति सरकार के निर्माण विभाग में आर्किटेक्ट हैं।

मैं बचपन से धार्मिक हूँ। ईश्वर पर मेरा विश्वास है और आज भी मैं सभी धार्मिक बातों में हिस्सा लेती हूँ। मेरा ससुराल और मायका दोनों जगह धार्मिक वातावरण है। केरल में उच्च माने जाने वाले नायर समाज से मैं आती हूँ। हमारे घर में आज भी पवित्र-अपवित्र कर्मकांड का पालन किया जाता

है। सभी धार्मिक विधि और कर्मकांड किए जाते हैं।

आप धार्मिक विचारों वाली होने के बावजूद मंदिर प्रवेश का निर्णय क्यूँ लिया?

मेरे पिता कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ता होने के कारण मुझ में थोड़ा सा सुधारवादी विचार रोपित हुआ है। यद्यपि मैं धार्मिक हूँ, धर्म के नाम पर आज चल रही अनिष्ट प्रथा, परंपरा मुझे मान्य नहीं हैं। मेरे मायके के घर में तो पहले दलितों को प्रवेश नहीं था। लेकिन बचपन में भी मैं इस से सहमत नहीं थी। लेकिन मैं इस बारे में बोल नहीं सकती थी।

महिलाओं की माहवारी को अपवित्र मान कर उन्हें मंदिर प्रवेश नकारना मुझे बिलकुल मंजूर नहीं है। इस कारण सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय देने के बाद मुझे बहुत खुशी हुई। इस निर्णय पर किसी ना किसी ने तो अमल करना चाहिए यह मुझे मन ही मन लगाने लगा।

आप मंदिर प्रवेश के आंदोलन में किस प्रकार सहभागी हुई?

मैं अपनी रोजाना जिंदगी हमेशा की तरह जी रही थी, तब वर्ष 2018 में सर्वोच्च न्यायालय का अय्यप्पा स्वामी के मंदिर में महिलाओं को भी प्रवेश दिया जाए, यह निर्णय आ गया। यह निर्णय आने के बाद केरल के सामाजिक वातावरण में तहलका मच गया। मेरे मन में भी अलग अलग विचार आ रहे थे। फेसबुक और अन्य सोशल मीडिया में मैं अन्य लोगों की राय जान ले रही थी। लेकिन मैंने शुरू से एक काम किया था कि मेरी राय कहीं भी व्यक्त नहीं की थी; केवल दूसरों की राय पढ़ रही थी।

वामपंथी आंदोलन के श्रेयस इस युवा कार्यकर्ता ने 'केरल रिनेसांस गो टू सबरीमाला' इस नाम से 'नवोधन केरलम सबरीमाला' यह फेसबुक पेज शुरू किया था। मैंने यह फेसबुक पेज पढ़ना और 'फॉलो' करना शुरू किया। इसी से इस तरह के विचारों वाला एक वाट्सएप ग्रुप मैंने 'ज्वाइन' किया। यह करते समय मैंने ससुराल में एक भी बात नहीं बताई। मेरे पति से भी ये सब मैंने छिपाये रखा था। क्यूँकि वे बहुत ज्यादा धार्मिक कर्मकांड करने वाले हैं।

इतने में 'मनीथी' इस तमिल नाडू के संगठन के प्रगतिवादी विचारों की महिलाओं ने मंदिर में जाने का प्रयास किया और वह नाकामयाब हुआ। बाद में मुझे वाट्सएप ग्रुप पर पता चला की और एक प्रयास होने वाला है। इस वाट्सएप ग्रुप के जितने सदस्य थे उन की विशेषता यह थी कि इन में से एक भी व्यक्ति दूसरे को जिंदगी में कभी भी मिला नहीं था। कोई किसी को पहचानता नहीं था। लेकिन अय्यप्पा स्वामी के मंदिर में महिलाओं का प्रवेश हो जाना चाहिए और इस के लिए हम ने अगुआई करनी चाहिए, इस निश्चय से अभिभूत ये सभी लोग थे।

इस ग्रुप की पाँच महिलाएं अय्यप्पा स्वामी के मंदिर में प्रवेश करने के लिए तैयार हुई। उन की एक बैठक त्रिशूर के डॉ. प्रसाद के घर में आयोजित की गयी। उस बैठक के लिए मैं चली गयी थी। इन पाँच महिलाओं में से तीन अचानक पीछे हट गईं। इस कारण मैं और प्रो. बिन्दु, हम दोनों ही अय्यप्पा स्वामी के मंदिर में प्रवेश करने के लिए गए। दिनांक 3 जनवरी को पुलिस बंदोबस्त के साथ हम ने अय्यप्पा स्वामी के मंदिर में प्रवेश कर के अय्यप्पा स्वामी का दर्शन लिया।

मंदिर प्रवेश के बाद आप के परिवार और समाज द्वारा आप का बहुत ज्यादा उत्पीड़न हुआ, यह हम ने सुना है। क्या यह सच है?

मंदिर प्रवेश के बाद बिन्दु को और मुझे अलग ही सामाजिक संघर्ष का सामना करना पड़ा। उस में, प्रो. बिन्दु को उन के समाज और परिवार की ओर से कुछ कम परेशानियों का सामना करना पड़ा। लेकिन मुझे तो किसी ने ढील नहीं दी। मंदिर प्रवेश के बाद मैं जब घर पहुंची तब मेरी सास ने मुझे बहुत पीट कर घर के बाहर निकाल दिया। बाद में मैंने कोर्ट में जा कर घर पर कब्जा प्राप्त कर लिया। कोर्ट ने घर का कब्जा देने के बाद मेरे ससुराल के सभी लोग उस घर से बाहर निकल गए। उन्हों ने गाँव में ही किराये पर एक मकान ले कर अपना संसार शुरू किया। मेरे पति और दो बच्चे मुझे छोड़ कर चले गए। ससुराल के लोगों ने मुझे बहुत परेशान किया, मेरा अवमान किया। मेरे पति ने मेरे साथ सारे संबंध तोड़ डाले। वे मुझे मेरे बच्चों से मिलने भी नहीं देते।मार्च 2019 से मैं मेरे दो बच्चों को मिल नहीं सकी हूँ। मैं अकेली इस घर में पुलिस सुरक्षा के साथ रहती हूँ। आसपास हमारे नायर समाज की बड़ी बस्ती है। लेकिन पड़ोस के लोग भी

मुझ से बात नहीं करते। मेरे पति ने मेरे खिलाफ तलाक का दावा दायर किया है। कानूनी तरीके से वे मुझे छोड़ देना चाहते हैं।

ससुराल का यह हाल है तो मायके का भी कुछ ऐसा ही है। मेरा एक भाई मुझ से बात नहीं करता। उस ने मुझे कहा है कि मायके मत आना। भाई के दबाव के कारण माँ भी मेरे साथ बात करना टाल रही है। मेरा एक दूसरा भाई कोर्ट में लिपिक पद पर काम करता है, वह थोड़ा सा प्रगतिवादी विचारों वाला है। वह मेरे साथ संपर्क साधे हुए है। लेकिन उस की भी मुझे मायके बुलाने की हिम्मत नहीं हो रही है। मेरे कम्युनिस्ट विचारों वाले पिता अब जीवित नहीं है। अन्यतः मुझे उन्हों ने इस समय बहुत सहारा दिया होता।

ससुराल के लोगों ने मेरे साथ संबंध तोड़ने के कारण उन्हें समाज में काफी सम्मान मिलता है। मेरे जैसी धर्म को डुबाने वाली को सजा देने के कारण उन्हें यह पुरस्कार मिल रहा है। मेरा नायर समाज भी मेरे पूर्ण रूप से विरुद्ध है। इस विरोध के कारण मुझे पुलिस ने सुरक्षा प्रदान की हैं। फिलहाल मैं अपना जीवन पुलिस सुरक्षा में व्यतीत कर रही हूँ।

मंदिर प्रवेश के समर्थन में अभूतपूर्व मानवी शृंखला :

सबरीमाला मंदिर में प्रवेश करने का प्रयास करने वाली महिलाओं के खिलाफ धार्मिक संगठनों ने हजारों महिलाओं को रास्ते पर उतारा। महिलाओं के विरोध में महिला यह चित्र निर्माण किया गया। सर्वोच्च न्यायालय के इस सुधारवादी निर्णय के समर्थन में केरल का महिला वर्ग है, यह संदेश देना आवश्यक था। इस कारण केरल के वामपंथी जन-संगठनों ने 'केरल प्रबोधन आंदोलन' इस नाम से एक आंदोलन शुरू किया। इस में वामपंथी पक्ष, दलित संगठन और समाज के सभी स्तरों के लोग सहभागी हुए थे। महिलाएं, सामाजिक आंदोलन के कार्यकर्ता, कॉलेज के छात्र और कुछ जगह विदेश से आए हुए पर्यटक भी सहभागी हुए थे। यह मानवी शृंखला लगभग छः सौ बीस किलोमीटर लंबी थी। कासारगौड इस उत्तरी ग्राम से केरल की राजधानी तिरुवनन्तपुरम तक यह मानवी शृंखला थी। एक के साथ एक लग के लोग शृंखला में खड़े थे। इन में महिलाओं की संख्या विशाल थी। इन सभी की एक ही माँग थी, मा.न्यायालय ने माहवारी का कलंक महिलाओं के ऊपर से हटाया है। उस का सम्मान कर के महिलाओं को मंदिर में प्रवेश दिया जाए। 'लिंग भेदभाव नष्ट करो', इस अर्थ के पोस्टर इस में सहभागी महिलाओं ने अपने हाथ में लिए थे। लगभग 30 लाख महिलाएं इस मानवी शृंखला में सहभागी हुई यह अनुमान है। यह मानवी शृंखला खड़ी करने में स्थानीय राज्य सरकार के पार्टी के अलग अलग जन-संगठनों का सक्रिय सहभाग था। इस मानवी शृंखला का असर केरल के समाज मन पर हुआ और लोग सोचने लगे। सामान्य लोगों का मत-परिवर्तन शुरू हुआ। प्रारम्भिक विरोध के बाद वह कम होने लगा, यह चित्र निर्माण हुआ।

क्या आप के विरोध के कुछ अनुभव आप कथन करना चाहेंगी ?

हमारा अंगडीपुरम गाँव मंदिरों का गाँव इस रूप में मशहूर है। मेरे घर के पास एक बड़ा मंदिर हैं। इस मंदिर के सामने से मैं जब गुजरती हूँ तब सामने पंडित आ जाए तो वे मंत्र बुदबुदाते हैं, रास्ता बदल लेते हैं। एक बार तो मैं जब एक पंडित के सामने आ गयी तब वह पंडित मुझे देख कर थूक दिया।

कट्टर पंथियों ने मेरे कुछ फोटो कुछ राजनीतिक नेताओं के साथ क्रॉप कर के सोशल मीडिया में डाल दिये। मेरे अनैतिक संबंध कुछ नेताओं के साथ हैं, इस प्रकार के मेसेज फैलाये गए। अलग अलग फोन नंबर से अश्लील फोन और मेसेज आ रहे थे। यह सत्र छः महीनों तक चल रहा था। मेरे भाई ने इन में से कुछ बातें बंद करवाई।

कुछ अच्छे अनुभव बताइये।

कुछ अच्छे अनुभव भी आए। मेरे संघर्ष के समय मेरे कार्यालय के कर्मचारियों ने मेरी बहुत सहायता की। वरिष्ठ अधिकारियों के मुझे कोई नुकसान नहीं पहुंचाया, मुझे परेशान भी नहीं किया। इस कारण मैं आज भी नौकरी कर सकती हूँ।

मेरे नायर समाज की महिलाएं कहीं मिल जाती हैं तो वे मुझ से बात नहीं करती, पास नहीं आतीं लेकिन दूर से ही हाथ का अंगूठा ऊंचा कर के 'वेल डन' यह मेसेज देती हैं। राज्य परिवहन बस से सफर करते हुए अगर पता चल जाये कि मैं

कणकदुर्गा हूँ, तो कुछ महिलाएं दूर जा कर बैठती हैं तो कुछ युवतियाँ हाथ में हाथ देती हैं। मेरे काम की सराहना करती हैं। कई कॉलेज युवतियाँ मेरे साथ सेल्फी लेती हैं। इन युवतियों को मेरे साथ फोटो खिंचने की इच्छा हुई इस का मतलब मैंने कुछ गलत नहीं किया, बल्कि मैंने एक आदर्श कार्य किया है, ऐसा मुझे महसूस होता है।

केरल की एक प्रसिद्ध लेखिका लक्ष्मी राजीव ने सबरीमाला पर एक पुस्तक लिखी है, उस समय उस पुस्तक के प्रकाशन समारोह में मुझे मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। इस आंदोलन के कारण मुझे कई समान विचारधारा वाले मित्र सहेलियाँ मिल गयी, वे ही मुझे आधार देती हैं। यही सहेलियाँ अब मेरा नया परिवार बन गयी हैं।

आप ने किए हुए मंदिर प्रवेश पर क्या आप को पश्चाताप हो रहा है ?

बिलकुल नहीं! मंदिर प्रवेश का निर्णय मैंने बहुत सोच समझ कर लिया था। इस निर्णय के पीछे मेरे पति और परिवार नहीं रहेंगे, इस का मुझे एहसास था। लेकिन मंदिर प्रवेश के बाद परिवार और समाज द्वारा इतना बड़ा विरोध होगा यह नहीं सोचा था। इस कारण मुझे बहुत बड़ी पारिवारिक कीमत चुकानी पड़ी है। लेकिन मेरे मंदिर प्रवेश के कारण केरल के महिला आंदोलन को अब अधिक गति प्राप्त हुई है। मैंने किया हुआ मंदिर प्रवेश का काम कानूनी, संवैधानिक और धार्मिक भी है ऐसा मुझे लगता है।

इस अवसर पर मेरे प्रगतिवादी विचारों वाले पिताजी की थोड़ी सी विरासत मैंने चलाई, इस बात पर मैं अभिमान महसूस करती हूँ।

कणकदुर्गा से संवाद साध कर हम अभिभूत हो गए। स्त्री शिक्षा के लिए सावित्रीमाई फुले ने धर्मांध लोगों की गालियां और गोबर के गोले बर्दाश्त किए थे यह याद आया। किसी न किसी केनींव का पत्थर बन जाने सिवा इमारत खड़ी नहीं हो सकती, यह सच्चाई है। प्रो. बिन्दु और कणकदुर्गा का समता की इमारत की नींव में मजबूत सहभाग है, इस का संज्ञान इतिहास लेगा।

छपते छपते

हम जब सबरीमाला मंदिर को भेंट दे कर लौटे तब परसों ही फिर एक बार सर्वोच्च न्यायालय ने मंदिर प्रवेश के खिलाफ दायर पुनर्विचार याचिका पर निर्णय दिया। पुराने निर्णय का अधिक अध्ययन करने के लिए यह प्रकरण सात सदस्यों वाले खंड पीठ के पास सौंपने का निर्णय हुआ। आज के आधुनिक युग में भारत में महिलाओं को मंदिर में प्रवेश दिया जाए या नहीं, इस बात पर न्यायालय में संघर्ष करना पड़ता हैं, यह भारत में आज भी महिलाओं का स्थान दोयम दर्जे का है यह दर्शाने वाला है, यह महसूस होता है।

डॉ. नरेंद्र दाभोलकर की भाषा में अगर कहा जाए तो 'यह संघर्ष दशकों का नहीं, शतकों का है!'

इस कठिन संघर्ष में आप सभी का साथ आवश्यक है।

(अनुवाद : उत्तम जोगदंड)

''सम्राट के लिए यह बहुत अच्छी बात है कि लोग धर्म के भ्रम में फंसे रहें।''

–मार्क्स टेरेंटियस वारो
(116–29 ई.पू.)

लघु-कथा

हद

–श्याम सुंदर 'दीप्ति'

एक अदालत में मुकदमा पेश हुआ। : साहब, यह पाकिस्तानी है। हमारे देश में हद पार करता हुआ पकड़ा गया है।'

'तू इस बारे में कुछ कहना चाहता हैत्र' मैजिस्ट्रेट ने पूछा।

मैंने क्या कहना है सरकार। मैं खेतों में पानी लगाकर बैठा था। 'हीर' के सुरीले बोल मेरो कानों में पड़े। मैं उन्हीं बोलों को सुनता चला आया, मुझे तो कोइ हद नज़र नहीं आई।'

साभार : अशोक भाटिया

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

(जन्म- 9 अप्रैल, 1893- मृत्यु-14 अप्रैल,1963)

पण्डित राहुल सांकृत्यायनको हिन्दी यात्रा साहित्य का जनक माना जाता है। वे एक प्रतिष्ठित बहुभाषाविद थे और 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध में उन्होंने यात्रा वृतांत तथा विश्व-दर्शन के क्षेत्र में साहित्यिक योगदान किए। बौद्ध धर्म पर उनका शोध हिन्दी साहित्य में युगान्तरकारी माना जाता है, जिसके लिए उन्होंने तिब्बत से लेकर श्रीलंका तक भ्रमण किया था।

जीवन परिचय

राहुल सांकृत्यायन जी का जन्म 9 अप्रैल, 1893 को पन्दहा ग्राम, जिला आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) में हुआ। राहुल सांकृत्यायन के पिता का नाम गोवर्धन पाण्डे और माता का नाम कुलवन्ती था। इनके चार भाई और एक बहिन थी, परन्तु बहिन का देहान्त बाल्यावस्था में ही हो गया था। भाइयों में ज्येष्ठ राहुल जी थे। पितृकुल से मिला हुआ उनका नाम 'केदारनाथ पाण्डे' था। सन् 1930 ई. में लंका में बौद्ध होने पर उनका नाम 'राहुल' पड़ा। बौद्ध होने के पूर्व राहुल जी 'दामोदर स्वामी' के नाम से भी पुकारे जाते थे। राहुल नाम के आगे सांकृत्यायन इसलिए लगा कि पितृकुल सांकृत्य गोत्रीय है।

बाल्य कालः

राहुल जी का बाल्य जीवन ननिहाल अर्थात पन्दहा ग्राम में व्यतीत हुआ। राहुल जी के नाना का नाम था पण्डित राम शरण पाठक, जो अपनी युवावस्था में फौज में नौकरी कर चुके थे। नाना के मुख से सुनी हुई फौजी जीवन की कहानियाँ, शिकार के अद्भुत वृत्तान्त, देश के विभिन्न प्रदेशों का रोचक वर्णन, अजन्ता-एलोरा की किवदन्तियों तथा नदियों, झरनों के वर्णन आदि ने राहुल जी के आगामी जीवन की भूमिका तैयार कर दी थी। इसके अतिरिक्त दर्जा तीन की उर्दू किताब में पढ़ा हुआ 'नवाजिन्दा-बाजिन्दा' का शेरः

'सैर कर दुनिया की गाफिल जिन्दगानी फिर कहाँ,
जिन्दगी गर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहाँ'

राहुल जी को दूर देश जाने के लिए प्रेरित करने लगा। कुछ काल पश्चात घर छोड़ने का संयोग यों उपस्थित हुआ कि घी की मटकी सम्भाली नहीं और दो सेर घी जमीन पर बह गया। अब नाना की डाँट का भय था, नवाजिन्दा बाजिन्दा का वह शेर और नाना के ही मुख से सुनी कहानियाँ इन सबने मिलकर केदारनाथ पाण्डे 'राहुल जी' को घर से बाहर निकाल दिया।

जीवन यात्रा

राहुल जी की जीवन यात्रा के अध्याय इस प्रकार हैं-

पहली उड़ान वाराणसी तक
दूसरी उड़ान कलकत्ता तक
तीसरी उड़ान पुनः कलकत्ता तक

इसके बाद पुनः वापस आने पर हिमालय की यात्रा पर गये, सन् 1890 ई. से 1914 ई. तक वैराग्य से प्रभावित रहे और हिमालय पर यायावर जीवन जिया। वाराणसी में संस्कृत का अध्ययन किया। परसा महन्त का सहचर्य मिला, आगरा में पढ़ाई की, लाहौर में मिशनरी कार्य किया, इसके बाद पुनः 'घुमक्कड़ी का भूत' हावी रहा। कुर्ग में भी चार मास तक रहे।

राजनीति में प्रवेश (1921-27)

राहुल सांकृत्यायन ने छपरा के लिए प्रस्थान किया, बाढ़ पीड़ितों की सेवा की, स्वतंत्रता आंदोलन में सत्याग्रह में भाग लिया और उसमें जेल की सजा मिली, बक्सर जेल में शूरू मास तक रहे, जिला कांग्रेस के मंत्री रहे, इसके बाद नेपाल में डेढ़ मास तक रहे, हजारी बाग जेल में रहे। राजनीतिक शिथिलता आने पर पुनः हिमालय की ओर गये, कौंसिल का चुनाव भी लड़ा।

लंका के लिए प्रस्थान (1927)

राहुल सांकृत्यायन ने लंका में 19 मास प्रवास किया, नेपाल में अज्ञातवास किया, तिब्बत में सवा बरस तक रहे, लंका में दूसरी बार गये, इसके बाद सत्याग्रह के लिए भारत में लौटकर आये। कुछ समय बाद लंका के लिए तीसरी बार प्रस्थान किया।

यात्राएं (1932-33)

राहुल सांकृत्यायन ने इंग्लैण्ड और यूरोप की यात्रा की। दो बार लद्दाख यात्रा, दो बार तिब्बत यात्रा, जापान, कोरिया, मंचूरिया, सोवियत भूमि (1935 ई.), ईरान में पहली बार, तिब्बत में तीसरी बार 1936 ई.

में, सोवियत भूमि में दूसरी बार 1937 ई. में, तिब्बत में चौथी बार 1938 ई.में यात्रा की।

आंदोलन (1938)

किसान मजदूरों के आन्दोलन में 1938-44 तक भाग लिया, किसान संघर्ष में 1936 में भाग लिया और सत्याग्रह भूख हड़ताल किया।

सजा, जेल और एक नये जीवन का प्रारम्भ

राहुल सांकृत्यायन जी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बने। जेल में 29 मास (1940-42 ई.) रहे। इसके बाद सोवियत रूस के लिए पुनः प्रस्थान किया। रूस से लौटने के बाद राहुल जी भारत में रहे और कुछ समय के पश्चात चीन चले गये, फिर लंका चले गये।

महान पर्यटक

राहुल जी की प्रारम्भिक यात्राओं ने उनके चिंतन को दो दिशाएँ दीं। एक तो प्राचीन एवं अर्वाचीन विषयों का अध्ययन तथा दूसरे देश-देशान्तरों की अधिक से अधिक प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करना। इन दो प्रवृत्तियों से अभिभूत होकर राहुल जी महान पर्यटक और महान् अध्येता बने।

धर्म

कट्टर सनातनी ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर भी सनातन धर्म की रूढ़ियों को राहुल जी ने अपने ऊपर से उतार फेंका और जो भी तर्कवादी धर्म या तर्कवादी समाजशास्त्र उनके सामने आते गये, उसे ग्रहण करते गये और शनैः-शनैः उन धर्मो एवं शास्त्रों के भी मूल तत्वों को अपनाते हुए उनके बाह्य ढाँचे को छोड़ते गये।

सनातन धर्म से, आर्य समाज से और बौद्ध धर्म से साम्यवाद-राहुल जी के सामाजिक चिन्तन का क्रम है, राहुल जी किसी धर्म या विचारधारा के दायरे में बँध नहीं सके। 'मज्झिम' निकाय के सूत्र का हवाला देते हुए राहुल जी ने अपनी 'जीवन यात्रा' में इस तथ्य का स्पष्टीकरण इस प्रकार किया है-

बड़े की भाँति मैंने तुम्हें उपदेश दिया है, वह पार उतरने के लिए है, सिर पर ढोये-ढोये फिरने के लिए नहीं-तो मालूम हुआ कि जिस चीज को मैं इतने दिनों से ढूँढता रहा हूँ, वह मिल गयी"।

मेधावी व्यक्तित्व के धनीः

यद्यपि राहुल जी के जीवन में पर्यटक वृत्ति सदैव प्रधान रही, परन्तु उनका पर्यटन केवल पर्यटन के लिए ही नहीं रहा। पर्यटन के मूल में अध्ययन की प्रवृत्ति सर्वोपरि रही। अनेक धार्मिक एवं राजनीतिक वलयों में रहने के बाद भी उनके अध्ययन एवं चिन्तन में कभी जड़ता नहीं आने पायी। राहुल जी बाल्यकाल से ही मेधावी थे। समूचे दर्जे में अव्वल होना उनके लिए साधारण बात थी। परिस्थितियों के अनुसार जिस विषय के सम्पर्क में वे आये, उसकी पूरी जानकारी प्राप्त करना उनका व्यक्तिगत धर्म बन गया। वाराणसी में जब संस्कृत से अनुराग हुआ, तो सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य एवं दर्शनादि को पढ़ लिया। कलकत्ता में अंग्रेजी से पाला पड़ा तो कुछ समय में अंग्रेजी के ज्ञाता बन गये। आर्य समाज का जब प्रभाव पड़ा तो वेदों को मथ डाला। बौद्ध धर्म की ओर जब झुकाव हुआ तो पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, तिब्बती, चीनी, जापानी, एवं सिंहली भाषाओं की जानकारी लेते हुए सम्पूर्ण बासांकृत्यायन ग्रन्थों का मनन किया और सर्वश्रेष्ठ उपाधि 'त्रिपिटिकाचार्य' की पदवी पायी। साम्यवाद के क्रोड़ में जब राहुल जी गये तो कार्ल मार्क्स, लेनिन तथा स्तालिन के दर्शन से पूर्ण परिचय हुआ। प्रकारान्तर से राहुल जी इतिहास, पुरातत्त्व, स्थापत्य, भाषाशास्त्र एवं राजनीति शास्त्र के अच्छे ज्ञाता थे।

घुमक्कड़ी स्वभावः

राहुल सांकृत्यायन का मानना था कि घुमक्कड़ी मानव-मन की मुक्ति का साधन होने के साथ-साथ अपने क्षितिज विस्तार का भी साधन है। उन्होंने कहा भी था कि- 'कमर बाँध लो भावी घुमक्कड़ों, संसार तुम्हारे स्वागत के लिए बेकरार है।' राहुल ने अपनी यात्रा के अनुभवों को आत्मसात करते हुए 'घुमक्कड़ शास्त्र' भी रचा। वे एक ऐसे घुमक्कड़ थे जो सच्चे ज्ञान की तलाश में था और जब भी सच को दबाने की कोशिश की गई तो वह बागी हो गये। उनका सम्पूर्ण जीवन अन्तर्विरोधों से भरा पड़ा है।

वेदान्त के अध्ययन के पश्चात जब उन्होंने मंदिरों में बलि चढ़ाने की परम्परा के विरुद्ध व्याख्यान दिया तो अयोध्या के सनातनी पुरोहित उन पर लाठी लेकर टूट पड़े। बौद्ध धर्म स्वीकार करने के बावजूद वह इसके 'पुनर्जन्मवाद' को नहीं स्वीकार पाए। बाद में जब वे मार्क्सवाद की ओर उन्मुख हुए तो उन्होंने तत्कालीन सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी में घुसे सत्तालोलुप सुविधापरस्तों की तीखी आलोचना की और उन्हें आन्दोलन के नष्ट होने का कारण बताया। सन् 1947 में अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष रूप में उन्होंने पहले से छपे भाषण को बोलने से मना कर दिया एवं जो भाषण दिया, वह अल्पसंख्यक संस्कृति एवं भाषाई सवाल पर कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियों के विपरीत था।

नतीजन पार्टी की सदस्यता से उन्हें वंचित होना पड़ा, पर उनके तेवर फिर भी नहीं बदले। इस कालावधि में वे किसी बंदिश से परे प्रगतिशील लेखन के सरोकारों और तत्कालीन प्रश्नों से लगातार जुड़े रहे। इस बीच मार्क्सवादी विचारधारा को उन्होंने भारतीय समाज की ठोस परिस्थितियों का आंकलन करके लागू करने पर जोर दिया। अपनी पुस्तक 'वैज्ञानिक भौतिकवाद' एवं 'दर्शन-दिग्दर्शन' में इस सम्बन्ध में उन्होंने सम्यक प्रकाश डाला। अन्ततः सन् 1953-54 के दौरान पुनः एक बार वे कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बनाये गये।

साहित्यिक जीवनः

अपनी 'जीवन यात्रा' में राहुल जी ने स्वीकार किया है कि उनका साहित्यिक जीवन सन् 1927 से प्रारम्भ होता है। वास्तविक बात तो यह है कि राहुल जी ने किशोरावस्था पार करने के बाद ही लिखना शुरू कर दिया था। जिस प्रकार उनके पाँव नहीं रुके, उसी प्रकार उनके हाथ की लेखनी भी कभी नहीं रुकी। उनकी लेखनी से विभिन्न विषयों पर प्रायः 150 से अधिक ग्रन्थ प्रणीत हुए हैं। प्रकाशित ग्रन्थों की संख्या सम्भवतः 129 है। लेखों, निबन्धों एवं वक्तृतताओं की संख्या हजारों में हैं।

कर्मयोगी योद्धा : एक कर्मयोगी योद्धा की तरह राहुल सांकृत्यायन ने बिहार के किसान-आन्दोलन में भी प्रमुख भूमिका निभाई। सन् 1940 के दौरान किसान-आन्दोलन के सिलसिले में उन्हें एक वर्ष की जेल हुई तो देवली कैम्प के इस जेल-प्रवास के दौरान उन्होंने 'दर्शन-दिग्दर्शन' ग्रन्थ की रचना कर डाली। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के पश्चात जेल से निकलने पर किसान आन्दोलन के उस समय के शीर्ष नेता स्वामी सहजानन्द सरस्वती द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक पत्र 'हुंकार' का उन्हें सम्पादक बनाया गया। ब्रिटिश सरकार ने फूट डालो और राज करो की नीति अपनाते हुए गैर कांग्रेसी पत्र-पत्रिकाओं में चार अंकों हेतु 'गुण्डों से लड़िए' शीर्षक से एक विज्ञापन जारी किया। इसमें एक व्यक्ति गाँधी टोपी व जवाहर बण्डी पहने आग लगाता हुआ दिखाया गया था। राहुल सांकृत्यायन ने इस विज्ञापन को छापने से इन्कार कर दिया पर विज्ञापन की मोटी धनराशि देखकर स्वामी सहजानन्द ने इसे छापने पर जोर दिया। अन्ततः राहुल ने अपने को पत्रिका के सम्पादन से ही अलग कर लिया। इसी प्रकार सन् 1940 में 'बिहार प्रान्तीय किसान सभा' के अध्यक्ष रूप में जमींदारों के आतंक की परवाह किए बिना वे किसान सत्याग्रहियों के साथ खेतों में उतर हँसिया लेकर गन्ना काटने लगे। प्रतिरोध स्वरूप जमींदार के लठैतों ने उनके सिर पर वार कर लहुलुहान कर दिया पर वे हिम्मत नहीं हारे। इसी तरह न जाने कितनी बार उन्होंने जनसंघर्षो का सक्रिय नेतृत्व किया और अपनी आवाज को मुखर अभिव्यक्ति दी।

अन्य विषयों पर दृष्टिकोणः

पुरस्कार व सम्मान

राहुल सांकृत्यायन की स्मृति में भारतीय डाकतार विभाग की ओर से 1993 में उनकी जन्मशती के अवसर पर 100 पैसे मूल्य का एक डाक टिकट जारी किया गया। पटना में राहुल सांकृत्यायन साहित्य संस्थान की स्थापना की गई है। यहाँ उनसे संबंधित वस्तुओं का एक संग्रहालय भी है। उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के पंदहा गाँव में राहुल सांकृत्यायन साहित्य संग्रहालय की स्थापना की गई है, जहाँ उनका जन्म हुआ था। वहाँ उनकी एक वक्षप्रतिमा भी है। साहित्यकार प्रभाकर मावचे ने राहुलजी की जीवनी लिखी है महापण्डित राहुल सांकृत्यायन को सन् 1958 में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' और सन् 1963 भारत सरकार द्वारा 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया।

मृत्युः राहुल सांकृत्यायन को अपने जीवन के अंतिम दिनों में 'स्मृति लोप' जैसी अवस्था से गुजरना पड़ा एवं इलाज हेतु उन्हें मास्को ले जाया गया। मार्च, 1963 में वे पुनः मास्को से दिल्ली आ गए और 14 अप्रैल, 1963 को सत्तर वर्ष की आयु में सन्यास से साम्यवाद तक का उनका सफर पूरा हो गया।

साहित्यिक कृतियां

जीवनियाँ

लेनिन, कार्ल मार्क्स, स्तालिन, माओ-त्से-तुंग, सरदार पृथ्वीसिंह, नए भारत के नए नेता, बचपन की स्मृतियाँ, अतीत से वर्तमान

कहानियाँ

वोल्गा से गंगा, बहुरंगी मधुपुरी, कनैला की कथा, सतमी के बच्चे,

उपन्यास

भागो नहीं, दुनिया को बदलो, बाईसवीं सदी, जीने के लिए, सिंह सेनापति, जय यौधेय, मधुर स्वप्न, राजस्थान निवास, विस्मृत यात्री, दिवोदास

आत्मकथा

मेरी जीवन यात्रा

■

जीवन कितना भी कठिन हो, उम्मीद भरा होता है

–स्टीफन हॉकिंग

(मेरा मस्तिष्क ही मेरा कंप्यूटर हैं बंद कंप्यूटरों का कोई स्वर्ग नहीं होता। न ही मृत्यु के बाद कोई जीवन है। यह उन लोगों की कपोल-कल्पनाएं हैं, जो अंधेरे से डरते हैं।)

पिछले चालीस साल में हमारे ब्रह्मांड के बारे में नज़रिया बहुत बदला है, और मुझे खुशी है कि इससे में मेरा भी मामूली-सा योगदान है। हम मनुष्य हमारे ब्रह्मांड को चालित करने वाले नियमों को समझने के करीब आये हैं, तो यह हमारी बड़ी विजय हैं जब मानवता विज्ञान नहीं समझती थी, तब यह विश्वास स्वाभाविक था कि ईश्वर ही इस ब्रह्मांड के रचयिता हैं। लेकिन अब विज्ञान ब्रह्मांड की उत्पत्ति की ज्यादा विश्वसनीय व्याख्या पेश करता है। अगर भौतिक विज्ञानियों के हाथ में कभी सब कुछ जानने की चाबी आ जाए-जिससे यह जाना जा सके कि इस ब्रह्मांड का अस्थित्व क्यों है, हमारा अस्तित्व क्यों है तो वे शायद 'ईश्वर के मस्तिष्क' को पढ़ पाएंगे। 'ईश्वर के मस्तिष्क' को पढ़ पाने से मेरा आशय यह है कि फिर हम वह सब कुछ जान जाएंगे जिसका पता अगर ईश्वर होते, जो कि नहीं है तो उन्हें होता। स्वतःस्फूर्त' सृष्टि के कारण ही 'शून्य' के बजाय 'कुछ' है, इस कारण ही हमारी और इस ब्रह्मांड का अस्तित्व है। ब्रह्मांड के निरंतर चलते रहने के पीछे ईश्वर को याद करना जरूरी नहीं है।

मेरा मानना है कि विज्ञान के नियमों के मुताबिक, शून्य के स्वतःसफूर्त तरीके से ही ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई है। अगर आप यह मानेंगे, जैसा कि मैं मानता हूं, कि प्रकृति के नियम तय हैं, तो यह सवाल करने में देर नहीं लगेगी कि फिर यहां ईश्वर की भूमिका क्या है? अगर आप चाहो, तो यह कह सकते हो कि ये नियम ईश्वर द्वारा बनाए गए हैं। यह ईश्वर की परिभाषा तो हो सकती है, लेकिन उसके अस्तित्व का सबूत नहीं हो सकता। क्या ईश्वर ने क्वांटन के नियम बनाए हैं, जिससे महाविस्फोट हुआ? किसी की आस्था को चोट पहुंचाने की मेरी इच्छा नहीं है, लेकिन मेरा मानना है कि ब्रह्मांड की उत्पत्ति के संबंध में किसी दैवीय शक्ति की तुलना में विज्ञान के पास ज्यादा ठोस व्याख्या है। धर्म और विज्ञान में बुनियादी अंतर यह है कि धर्म किसी संस्था या विश्वास पर आधारित है, जबकि विज्ञान तर्क और खोजों पर आधिरित हैं विज्ञान जीतेगा, क्योंकि यह काम करता है।

मैं पिछले उन चालीस साल से मृत्यु की आशंका के साथ जी रहा हूं। मैं मृत्यु से नहीं डरता, लेकिन इतनी जल्दी मैं मरना नहीं चाहता। मेरे पास करने को बहुत कुछ है, मैं पहले वही करूंगा। मेरा मस्तिष्क ही मेरा कंप्यूटर है। जब इसके घटक फेल हो जाएंगे तब यह कंप्यूटर काम करना बंद कर देगा। बंद हो चुके कंप्यूटरों का कोई स्वर्ग नहीं होता। न ही मृत्यु के बाद कोई जीवन है। यह उन लोगों की कपोल कल्पनाएं हैं जो अंधेरे से डरते हैं।

लोग कहते हैं कि हम यहां हैं, तो इसकी वजह ईश्वर हैं लेकिन मैं समझता हूं कि हमारे यहां होने की वजह भौतिकी के नियम हैं, बजाय कि किसी और के, जिसके साथ हमारा व्यक्तिगत रिश्ता हो सकता हैं अपने पैरों की ओर नहीं, आसपास में चमकते सितारों की ओर देखना याद राखें। यह तय करें कि जो आप देखते हैं, उसका कुछ अर्थ हो। ब्रह्मांड के अस्तित्व पर आश्चर्य प्रकट करें। उत्सुकता जगाए रखें। जीवन कितना भी मुश्किल क्यों न लगता हो, जीवन में हमेशा ही ऐसा कुछ होता है। जो आप कर सकते हैं। जहां जीवन है वहीं उमीद है । काम करना कभी न छोड़ें, यह आपके जीवन को अर्थ देता है। और अगर आपको अपने जीवन में प्रेम मिले तो याद रखें कि दुर्लभ होता है, इसलिए इसकी उपेक्षा न करें। ०००

वास्तु शस्त्र की वास्तविकता

-संजीव खुदशाह

विगत 30 वर्षो में वास्तु के प्रति लोगों में जिज्ञासा बढ़ी है। वास्तु के बारे में लोगों के अलग-अलग अभिमत रहे हैं। कुछ लोग इसे प्राचीन शास्त्र मान बैठते हैं तो कुछ लोग कहते हैं कि यह पूरी तरीके से निराधार और अवैज्ञानिक है। जो भी हो वास्तु शास्त्र हमेशा विवाद में रहा है। मेरे एक आर्किटेक्ट मित्र नाम ना छापने की शर्त में कहते हैं कि जब पूरे मकान का नक्शा बना दिया जाता है और उसे सिविल और आर्किटेक्ट के नियमों में फिट कर दिया जाता है। उसके बाद मकान मालिक को कोई दसवीं पढा हुआ तथाकथित वास्तु शास्त्री कोई सलाह देता है। तो ऐसा लगता है मानो खूबसूरत रंगोली में किसी ने पानी फेर दिया हो। आर्किटेक्ट और वास्तु के मेल का मतलब होता है विज्ञान और अंधविश्वरास का मेल।

वास्तु पुरुष की कहानीः

वास्तु शास्त्र में वास्तु पुरुष की एक कथा है। देवताओं और असुरों का युद्ध में असुरों की ओर से अंधकासुर और देवताओं की ओर से भगवान शिव य़ुद्ध में दोनों के पसीने की कुछ बूंदें जब भूमि पर गिरीं तो एक अत्यंत बलशाली और विराट पुरुष की उत्पति हुई। उस विराट पुरुष सें देवता और असुर दोनों ही भयभीत हो गये। देवताओं को लगा कि यह असुरों की ओर से कोई पुरुष है जबकि असुरों को लगा कि यह देवताओं की तरफ से कोई नया देवता प्रकट हो गया है। इस विस्मय के कारण युद्ध थम गया और अंत में दोनों उस विराट पुरुष को लेकर ब्रह्मा जी के पास गए। ब्रह्मा जी ने उस पुरुष को अपने मानसिक पुत्र की संज्ञा दी और उनसे कहा कि इसका नाम वास्तु पुरुष होगा। वास्तु पुरुष वहां पर एक विशेष मुद्रा में शयन के लिए लेट गए और उनके कुछ हिस्सों पर देवताओं ने तथा कुछ हिस्सों पर असुरों ने अपना वास कर लिया। ब्रह्माजी ने यह भी आदेश दिया कि जो कोई भी भवन नगर तालाब मंदिर आदि का निर्माण करते समय वास्तु पुरुष को ध्यान में रख कर काम नहीं करेगा तो असुर लोग उसका भक्षण कर लेंगे। जो व्यक्ति वास्तु वास्तु पुरुष का ध्यान रख कर कार्य करेगा देवता उसके कार्य में सहायक होंगे। इस प्रकार वास्तु पुरुष की रचना हुई।

आखिर यह वास्तु शास्त्र है क्या?

ऐसा माना जाता है कि वास्तु शब्द के वास्तु शब्द से वास्तु का निर्माण हुआ है। वास्तु शास्त्र पर आधारित कोई एक प्राचीन किताब नहीं है। लेकिन बहुत सारी प्राचीन किताबों से जमीन के चयन से लेकर मकान बनाने तक का संदर्भ खोज कर वास्तु शास्त्र की कई किताबें अभी लिखी जा चुकी हैं। इन किताबों का संदर्भ या कहें कि सोर्स समरांगण सूत्र, मनुस्मृति, वास्तु रत्नाकर, शिल्प शास्त्र,, राजबल्लभ मंडलम, बृहद वास्तु माला, वास्तु सार संग्रह गृह वास्तु प्रदीप, मत्स्य पुराण आदि हैं।

वास्तु शास्त्र का क्या उद्देश्य है?

वास्तु शास्त्री यह दावा करते रहे हैं कि यदि कोई जजमान वास्तु के हिसाब से मकान, दुकान, कारखाने व मंदिर बनाता है तो उसके यह स्थान खुशहाली शांति में उत्तरोतर वृद्धि होगी। किसी प्रकार की जन धन यश की हानि नहीं होगी। यही वास्तु का उद्देश्य है। किसी जजमान (जो वास्तु के हिसाब से निर्माण कर सकता है) की जन धन एवं यश की गारंटी सुनिश्चत करना वास्तु का लक्ष्य है। इसमें यह दावा करते हैं कि तमाम प्रकार की विपत्ति बीमारी, पारिवारिक कलह वास्तु के हिसाब से बनाए हुए घर में वास्तु के हिस्से बनाए हुए घर में नहीं होती है। वास्तु के मुख्य स्तंभ। पौराणिक शास्त्रों के अध्ययन के बाद यह ज्ञात होता है कि वास्तु अपनी बात को कहने के लिए तीन आधारों का प्रयोग किया जाता है। इन आधारों या स्तंभों के बिना वास्तु की कल्पना नहीं की जा सकतीः

1. जाति 2. दिशा 3. दिवस

1. **जातिः**

यह वास्तु शास्त्र का सबसे प्रमुख नियम आधार है। जाति के आधारपर वास्तु की सलाह

तय होती है। चाहे बात भूमि के चयन की हो या निर्माण सामग्री की, हर पल वास्तु सलाह जाति आधार पर अलग-अलग तरह की जाती है। यदि आप ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र हैं तो सभी के लिए वास्तु के अलग-अलग नियम एवं सलाह है।

लम्बाई, चौड़ाई व जाति ब्राह्मणों के घरों की लंबाई, चौडाई से 10 अंश अधिक हो, क्षत्रिय के घर की लंबाई चौड़ाई से 8 अंश अधिक, वैश्य की 6 अंश और शुद्र की 4 अंश अधिक होः

दशंशयुक्तो विस्तारा-
आयामो विषवेश्मनामु
अष्टषट्चतुरंशाढ्य
क्षत्रादित्रयवेश्मनाम्

जाति के अनुसार घर की सीमाः वास्तुशास्त्र कहता है कि शूद्रों के लिए साढ़े 3 तल वाला भवन कल्याणकारी होता है। इस से बढ़कर यदि शूद्र का भवनहोगा तोउस के कुल का नाश हो जाएगा।

साधात्रिभूमि शूद्राणा
देश्म कुयांदृ विभूतय
अतोअधिकतरं यत् स्वात्
तत्करोति कुलक्षण्म्

दिशाः वास्तु शास्त्र नियम का दूसरा आधार है दिशा। यह एक प्रमुख आधार हैं उत्तर और पूर्व दिशा के मकान शुभ माने जाते हैं। वहीं दक्षिण मुख वाले मकान अशुभ माने जाते हैं। लेकिन विश्वकम्रा वास्तुशास्त्र में 16 दिशाओं का वर्णन है। आठ दिशाएं इस प्रकार हैः उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम, ईशान, आग्नेय, नेतृत्व, वायव्य, जाति के अनुसार कौन व्यक्ति को किसे दशा में से फल मिलेगा, चेक किया जाता है।

3. दिवसः

दिवस जानें तिथि का वास्तु में बड़ा महत्व है। यह एक आधार के रूप में काम करता है। इसके अंतर्गत पूर्णिमा, अमावस्या, वार का विचार किया जाता हैं खासतौर पर गृह निर्माण करते समय गृह प्रवेश करते समय तिथि और दिवस का वास्तव में एक महत्वपूर्ण स्थान है। गृह वास्तु पर ग्रंथ मत्स्य पुराण में कुछ मास पक्ष व वार आदि को गृह निर्माण के लिए शुभ तथा कुछ को अशुभ बताया गया है।........

ज्यादातर वास्तु शास्त्री जिनमें कुछ आर्किटेक्ट भी होते हैं, वास्तु को विज्ञान के रूप में प्रचारित करते हैं। लेकिन वे भूल जाते हैं कि विज्ञानका एक नियम होता है। विज्ञान की कसौटी पर कसने के लिए उसका परीक्षण, प्रयोग, प्रवृत्ति , अनुमान, डाटा संग्रहण करना होता है। यदि हर बार एक ही परिणाम आए तो उसे विज्ञान कहेंगे नहीं तो तुक्का या अंधविश्वास कहा जाता है।

वास्तु शास्त्र के नियम अनुसार किसी भी बिल्डिंग का प्रवेश द्वार दक्षिण की ओर नहीं होना चाहिए। यह अशुभ माना जाता है। लेकिन किसी भी गांव शहर में घनी आबादी में देखें तो सैंकड़ों सालों से दक्षिण मुखी मकान मिलेंगे और वे अच्छे से फल-फूल रहे हैं। उसी प्रकार दुकान भी सड़कों के दोनों और खुली रहती हैं। एक तरफ उत्तर दिशा में, दूसरी तरफ दक्षिण दिशा मुख वाली। लेकिन दोनों अच्छा बिजनेस कर रहीं होती हैं।

शराब की दुकानः

शराब की दुकान किसी भी दिशा की ओर हो सड़क पर हो या भीतर की गलियों में हो ,अच्छी भीड़ रहती हैं इसमें वास्तु का नियम फिट नहीं बैठता। वास्तु विज्ञान टाय-टाय फिस हो जाता है। आखिर इस मामले में वास्तु का नियम क्यों लागू नहीं होता? जाहिर है वास्तु शास्त्री इस पर भी कोई तुक्का फिट करने की कोशिश करेंगे।

अमेरिका का वाइट हाउसः

अमेरिका का वाइट हाऊस का प्रवेश द्वार भी दक्षिणमुखी है और पूरी बिल्डिंग वास्तु के नियम के हिसाब से नहीं बनाई गई है। लेकिन अमेरिका का राष्ट्र का सबसे प्रबल सत्ता का प्रमुख होता है और कई सालों से पूरे विश्व का सबसे शक्तिशाली देश कहलाने का खिताब उसके नाम पर है।

पुणे का किला शनिवार वाड़ाः

पेशवा ब्राह्मणों के द्वारा पुणे में उनके निवास के लिए एक किला बनाया गया जिसका नाम शनिवार वाड़ा है। शनिवार वाड़ा पूरी तरह से वास्तु के अनूरूप बनाया गया है। यह एक राजमहल है। फिर भी हमेशा इनके ऊपर मुसीबतों का पहाड़ गिरता रहा। वह कर्ज के बोझ से लदे हुए थे। परिवार के सदस्यों को जान से हाथ धोना पड़ता रहा

है। प्रश्न यह उठता है कि यदि वास्तु के अनुरूप है तो फिर पेशवाओं ने इतनी तकलीफ क्यों झेलनी पड़ी।

वास्तु के इतने सारे उदाहरणों से साफ हो जाता है कि वास्तु एक नए प्रकार का अंधविश्वास हैं इसलिए इसे सूडो साइंस इंगलिश में और हिंदी में छद्म विज्ञान कहते हैं। वास्तु का यह रोग सिर्फ हिंदुओं में नहीं है, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध भी इसकी जद में आ गए हैं। ज्योतिष की तरह यह भी देश में अंधविश्वास को बढ़वा देकर घुन की तरह खोखला कर रहा है।

उपभोक्ता कानून के अंतर्गत लाने की जरूरतः

जिस प्रकार भवन निर्माण कार्यो को उसकी गुणवत्ता के अनुसार कानून की परिधि में लाया गया है, उसी प्रकार यदि वास्तुशास्त्र एक विज्ञान है तो उसके द्वारा किए गए परिवर्तन एवं दावों का दस्तावेज बनाने और उसे उपभोक्ता कानून की जद में लाने की जरूरत है ताकि भोले-भाले नागरिकों को न्याय दिलाया जा सके। लोग ठगों के चंगुल से बाहर निकल सकें और विज्ञान का बढ़ावा हो सके।

इन्फेक्शन से बचने के लिए हाथ धोने की सलाह देने वाला डॉक्टर, जिसे समाज ने मार दिया!

कोरोना से बचने के लिए हाथ धोते वक्त इस वैज्ञानिक का धन्यवाद करिये जिसे हाथ धोने की सलाह देने के चलते पागल करार देकर मार दिया गया। दुनिया भर में सैनिटाइजर यानी हाथ धोने वाले द्रव्य का बाजार गरम है और स्टॉक खाली हैं। सबको बताया गया है कि हर काम करने के बाद और पहले हाथ धोइये वरना कोरोना का वायरस पकड़ लेगा। पूरी दुनिया रोज दिन में पचहत्तर बार डर के मारे हाथ धो रही है।

क्या आप जानते हैं कि आज से महज डेढ़ सौ साल पहले उस आदमी का क्या हुआ था जिसने संक्रामक बीमारियों से बचने के लिए हाथ धोने की मेडिकल सलाह डॉक्टर बिरादरी को दी थी? जिस सलाह को आज हर कोई आंख बंद कर के मान रहा है और जेब में सैनिटाइजर लेकर चल रहा है, उस सलाह के प्रणेता को इसके चलते इतना प्रताड़ित किया गया कि वह पागल होकर पागलखाने में मर गया था। आज गूगल ने उसी वैज्ञानिक का एक वीडियो डूडल बनाया है। इस वैज्ञानिक का नाम था **इग्नाज सेमेलवीस।**

जिसे हम आज एंटीसेप्टिक के नाम से जानते हैं, सेमेलवीस उसके प्रणेता थे जिनका जन्म 1818 में हंगरी में हुआ था। उन्होंने क्लोरीन मिश्रित नींबू के पानी से हाथ धोने का नुस्खा 1847 में दिया था जब वे वियना के सरकारी अस्पताल में काम करते थे। उन्होंने कई परचे प्रकाशित किये और बताया कि हाथ धोने से मृत्युदर में एक फीसद की कमी आ जाती है। सेमेलवीस के निष्कर्ष उस समय की स्थापित वैज्ञानिक मान्यताओं से मेल नहीं खाते थे। उनकी बिरादरी के डॉक्टर इस बात से क्षुब्ध रहते थे कि वे बार-बार हाथ धोने को कहते हैं। डॉक्टर इस सलाह के लिए उनका मजाक उड़ाते थे। इस अपमान के चलते सेमेलवीस को नर्वस ब्रेकडाउन हो गया। उनके एक सहकर्मी ने इसका नाजायज फायदा उठाते हुए उन्हें एक पागलखाने में भर्ती करवा दिया। इस पागलखाने में 14 दिन बाद सेमेलवीस की मौत हो गयी। उन्हें पागलखाने के गार्डो ने पीटा था जिससे उन्हें हाथ में जख्म हो गया था जो गैंग्रीन में बदल गया और जहर पूरी देह में फैल गया।

सेमेलवीस 47 वर्ष की उम्र में इसलिए मौत का शिकार हो गए क्योंकि हाथ धोने की उनकी सलाह को दुनिया ने मजाक मान लिया और साजिश कर के उन्हें पागलखाने भेज दिया। आज डेढ़ सौ साल बाद हम मौत से बचने के लिए हाथ धोये जा रहे हैं।

Mediavigil से साभार

मानव जीवन के सिर पर मंडारते खतरे

–आर.पी.गांधी

जबसे मानव सभ्यता का विकास हुआ है तब से पृथ्वी पर सीमाओं की लकीरें खिंचनी शुरू हो गई और लड़ाई झगड़ों की शुरूआत हो गई। आज इस वैज्ञानिक युग में सीमाओं पर रक्षा के नाम पर अरबों-खरबों रुपए की इन्सानी मेहनत को गोले बारूद में बदल दिया जाता है जो मानव के विनाश का कारण बनता है अगर इसी मेहनत को मानव कल्याण के लिए खर्च किया जाए तो विश्व के हर व्यक्ति को सम्मानपूर्वक जीवन जीने के साधन उपलब्ध करवाए जा सकते हैं परन्तु ऐसा नहीं होता हर देश अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए शक्ति प्रदर्शन करता है। अरबों खरबों रुपए खर्च करके सैन्य शक्ति का प्रदर्शन किया जाता है इन सभी प्रकार के हथियारों का एक ही कार्य है मौत। दूसरी और लाखों करोड़ों दवाई तथा अस्पताल व डाक्टरों की कमी के कारण पांव रगड़-रगड़ कर जान गंवा बैठते हैं इन दिनों भी कितने ही लोगों को पेट-भर खाना नसीब नहीं होता और भुखमरी के कारण मौत काग्रास बन जाते हैं। दूसरी ओर बाजार के भाव को बनाए रखने के लिए कितना ही अनाज सागरों में डाल दिया जाता है जिससे सागर का जल भी दूषित होता है। हमारे अपने देश में भी उचित खाद्यान्न भण्डारण न होने के कारण काफी मात्रा में खाद्यान्न नष्ट हो जाता है। दूसरी ओर कुछ भूखे इन्सान खाली पेट सोने को मजबूर होते हैं और अगली सुबह खाली पेट ही काम परजाना पड़ता है। ऐसी हालत में गर्भवती महिलाओं को भी सन्तुलित भोजन नहीं मिल पाता और ऐसी महिलाओं से पैदा होने वाले बच्चे कमजोर तो होते ही हैं, कई बार अपंगता का शिकार भी हो जाते हैं। गरीब मां बाप बचपन में ही बच्चों को मजदूरी पर लगा देते हैं जिससे वे शिक्षा रूपी अनमोल रत्न से वंचित रह जाते हैं। इससे वे अनपढ़ तो रहते ही हैं , इस तरह के बच्चे बड़े होकर कई बार अपराधी तत्व बन जाते हैं।

जेब काटना, चोरी करना, ठगी करना और लूट करना उनका पेशा बन जाता है। इस तरह की युवा पीढ़ी ईश्वर वादी और भाग्यवादी बनती है तथा इस प्रकार के लोग समाज के लिए घातक बन जाते हैं। क्रान्ति में उनका विश्वास नहीं होता जिससे समाज कछुए की रफ्तार से आगे बढ़ता है। यह इन्सानी सिरों पर मण्डराता हुआ बहुत बड़ा खतरा है। इसके लिए पुरानी सड़ी गली परम्पराओं को तोड़कर परिवर्तन लाना होगा जिससे देश के प्रत्येक नागरिक को शिक्षा और स्वास्थ्य का अधिकार मिले।

आबादी के साथ बढ़ता हुआ यातायात भी एक बहुत बड़ी समस्या है। इसके कारण पूरा वायुमण्डल दूषित हो रहा है दिल्ली जैसे शहर में आदमी के लिए सांस लेना भी कठिन है। जब लोग संयम खोकर तेज रफ्तार से गाड़ियां चलाते हैं तो हादसों में कितने ही बहुमूल्य जीवन जान गंवा बैठते हैं। दुर्घटना में मारे गए व्यक्तियों के परिजन अधूरा जीवन जीने को मजबूर हो जाते हैं। ओवरटेक करना भी दुर्घटना का कारण बनता है लोग आगे निकलने की होड़ में भयंकर दुर्घटना कर बैठते हैं। इससे स्वयं तो दुर्घटना में लिप्त होते ही हैं साथ में दूसरों को भी दुर्घटनाकर हानि पहुॅचाते हैं। मोबाईल का प्रयोग भी प्रायः दुर्घटना का कारण बनता है। ड्राईविंग करते समय मोबाइल का प्रयोग करना दुर्घटनाओं को नियन्त्रण देना है। यातायात के नियमों से अनभिज्ञ होना भी दुर्घटना का कारण बनता है जैसे भारतवर्ष में नियम है सड़क के बाएं और चलना। अतः अगर हम चाहते हैं कि सड़क दुर्घटनाएं न हो तो हमें यातायात से सम्बन्धित भी नियमों का दृढ़ता से पालन करना होगा। काश सड़क पर चलने वाला हर व्यक्ति यातायात के इन नियमों की आवश्यकता को समझे तभी सड़क यातायात को सुरक्षित बनाया जा सकता है।

मानव विकास के लिए स्थापित उद्योग धंधों का होना आवश्यक है लेकिन यदि ये उद्योग धन्धे मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक बनने लगे तों ये विकास के स्थान पर विनाश का कारण बनने लगते हैं। उद्योग धंधों से निकलने वाल अपशिष्ट

पदार्थ और गैसें मानव जीवन पर दुष्प्रभाव डालते हैं। अतः आवश्यक है कि सभी प्रकार के उद्योग धंधे आबादी से पर्याप्त दूरी पर स्थित हों और उनसे निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थों का शुद्विकरण किया जाए ताकि वे वायुमण्डल को दूषित न करें। यदि ये उद्योग धंधे आबादी के पास होगें तो कई बार इनसे निकलने वाली गैसें या दुर्घटनावश निकलने वाली जहरीली गैसें मानव जीवन के लिए बहुत बड़ा खतरा बन जाती हैं। भोपाल गैस त्रासदी इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है जिसमें हजारों लोग मारे गए और हजारों लोग बीमार हो गए और अनेक मानसिक रोगी बन गए ।

खाद्य पदाथों में मिलावट भी एक बहुत बड़ी समस्या है। इससे न केवल धन की बर्बादी होती है अपितु बीमारियां भी पनपती हैं और कई बार तो यही मिलावट मौत का कारण भी बन जाती हैं। खाद्य पदार्थो के अतिरिक्त दवाईयों में मिलावट की शिकायत आती रहती है इससे मरीज ठीक होने की बजाय और अधिक बीमार हो जाता है। त्यौहारों के अवसर पर मिलावट की शिकायत ज्यादा होती है। प्रायः लोग मिठाईयां खाकर बीमार हो जाते है। ऐसी मिलावट वाली मिठाईयों खाने के कारण होता है शराब में मिलावट होने के कारण लोग मौत का शिकार हो जाते हैं। अतः सरकार को चाहिए कि सभी प्रकार की मिलावट पर रोक लगाई जाए ताकि लोगों का जीवन सुरक्षित हो सके।

आज का युग उद्योग का युग है प्रतिदिन नए नए उद्योग लग रहे हैं। कुछ उद्योगों में लकड़ी कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त की जाती है। लकड़ी प्राप्त करने के लिए पेड़ों की अन्धाधुंध कटाई हो रही है इससे पर्यावरण प्रदूषण की समस्या बढ़ रही है इन दिनों बढ़ती जनसंख्या के लिए जिस अनुपात में पेड़ पौधे और जंगल होने चाहिए, उस हिसाब से इनकी संख्या कम होती जा रही है। आजकल लोहे और लकड़ी का स्थान प्लास्टिक ने लेना आरम्भ कर दिया है जिससे लकड़ी का प्रयोग कम होने से पेड़ पौधों के बचाव की कुछ आशा बंधी है। पैट्रोलियम गैस आने से लकड़ी ईंधन का स्थान गैस इंधन ने ले लिया है यह पर्यावरण प्रदूषण के बचाव में एक नया कदम है। पेड़-पौधे ही मानव जीवन के अच्छे मित्र है। इन द्वारा पैदा की गई आक्सीजन सभी जीवधारियों को जीवन प्रदान करती है। सभी प्रकार के खाद्य पदार्थ इन्हीं पेड़ पौधों से प्राप्त होते हैं जो हमारे जीवन का आधार हैं। जड़ी बूटियां हमें रोग मुक्त करती है। इन पेड़ पौधों के कारण ही ओजोन का निर्माण हुआ जिसने वायुमण्डल में सुरक्षा कवच काकाम किया और पृथ्वी पर जीवन को सुरक्षा प्रदान की। इन्हीं कारणों से देश में एक नारा दिया गया। बच्चे कम पेड़ हजार ।

आजकल देश में बढ़ता राजनीतिक अपराधीकरण भी एक बड़ी समस्या है। जेल में पड़े हुए अपराधी लोग अपनी गंडागर्दी के कारण चुनाव जीत जाते हैं और देश के नीतिकार बन बैठते हैं। आज की संसद और विधानसभाओं में अनेक ऐसे सदस्य हैं जो किसी न किसी अपराध में लिप्त होने के कारण मुकदमो का सामना कर रहे हैं। ऐसे लोगों का संसद अथवा राज्य की विधानसभा में होना देश के लिए किसी खतरे से कम नहीं है। इसी प्रकार राजनीतिक लोगों द्वारा दल बदलना भी देशहित में नहीं है। ऐसे लोग सदस्य एक दल से बनते हैं और अपने निजी स्वार्थो के लिए दूसरे सत्ताधारी दल का दामन थाम लेते हैं। इस प्रकार की हरकत करना उन वोटरों से सरासर धोखा होता है जो ऐसे सदस्यों का अमुक पार्टी के नाम पर जिताते हैं। यह एक प्रकार से अमानत में ख्यानत है और वोटरों की भावनाओं से खिलवाड़ है। इस प्रकार के दल बदल को कठोर कानून बनाकर रोकने की आवश्यकता है।

बढ़ते हए नशे मानव समाज के लिए खतरे की घंटी हैं। पूरे देश में युवा वर्ग नशे की लत का शिकार हो रहा है जो शक्ति उसने देश निर्माण में लगानी थी उस शक्ति को वह विनाश में लगा रहा है। आए दिन टी.वी. और समाचार पत्रों में यह समाचार देखने और पढ़ने का मिलता है कि शराब के नशे में धुत्त चालक ने कुछ आदमियों को रौंद डाला। इतना ही नहीं नशे में धुत्त चालक और उसके साथी दुर्घटना होने पर दूसरे पक्ष पर हमला कर घायल कर देते हैं। कई बार तो इस प्रकार की मारपीट से मौत भी हो जाती है। जहरीली शराब पीने से अनेक बार काफी संख्या में मौते हो जाती है इसके अनेक परिवार कठिनाइयों में घिर जाते हैं बीड़ी सिगरेट, तम्बाकू का इस्तेमाल भी दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। इनके प्रयोग से स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव

पड़ता है। कई बार तो इनके प्रयोग से कैंसर जैसी घातक बीमरियां हो जती है। यह सब सरकार की अनुमति से लाईसैंस लेकर कारोबार किया जाता है। हर वर्ष सरकार शराब के ठेकों की नीलामी करती है और करोड़ों रूपये राजस्व से कमाती है। सरकार अपनी आय को बढ़ाने के नाम पर मौत की दुकानें खोलती हैं। शराब की बोतल अथवा सिगरेट के पैकेट पर वैधानिक चेतावनी लिखकर सरकार अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेती है। सरकार को चाहिए कि वह इस प्रकार के नशे के सभी उत्पादों के उत्पादन और प्रयोग पर प्रतिबंध लगाए ताकि समाज सभी प्रकार के नशों से मुक्त हो सके नशामुक्त समाज ही एक सभ्य समाज हो सकता है।

धार्मिक संकीर्णता और कट्टरवाद भी मानवता के लिए खतरा बना हुआ है। इस प्रवृति से उग्रवाद और आतंकवाद का जन्म होताहै। जेहाद के नाम पर विश्व के भिन्न-भिन्न भागों में निर्दोष लोगों का खून बहाया जाता है। आज पूरा विश्व इस खतरे से भयभीत है। ओसामाबिन लादेन इसका ज्वलन्त उदाहरण है जो विश्व के भिन्न भिन्न भागों में आतंक का कहर ढहा चुका है। इसी कारण अमरीका ने उसको रातों रात पाकिस्तान में मारकर कहीं समुद्र में डाल दिया। यह मात्र एक उदाहरण है ऐसे ही अनेक आतंकवादी गुट विश्व के अलग अलग भागों में सक्रिय हैं। ये लोग मानते हैं कि वे धार्मिक आदेश का पालन कर रहे हैं और धार्मिक उन्माद में इतने अन्धे हो जाते हैं कि आत्मघाती बम बनने से भी परहेज नहीं करते। धार्मिक कट्टरता के कारण कुछ आतंकवादी संगठन नारी शिक्षा के भी विरोधी हैं। वे नारी को केवल पर्दे में देखना चाहते हैं और उनको नारी की स्वतन्त्रता और शिक्षा किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं। इसी प्रकारकी धर्मान्धता के कारण पाकिस्तान की एक किशोरी मलाला आतंकवादियों की गोली का शिकार हुई। वह समय पर डाक्टरी ईलाज मिलने पर वह बच तो गई मगर काफी पीड़ा झेलनी पड़ी बाल शिक्षा और नारी शिक्षा को बढ़ावा देने के कारण इस लड़की को अन्तर्राष्ट्रीय संस्था द्वारा नोबेल पुरस्कार मिल चुका है। भारत के जम्मू कश्मीर में ऐसे ही आतंकवादी संगठन वहां की शांति को भंग किए हुए हैं। आए दिन कोई न कोई आतंकवाद की घटना घटती रहती है जिसमें सामान्य नागरिकों के साथ-साथ सुरक्षा बलों व पुलिस बलों के जवान भी शहीद होते रहते हैं। यह आतंकवादी किसी भी देश के विकास में बहुत बड़ी बाधा है। इससे जान माल का नुकसान होता रहता है ।

मानव जीवन पर मंडराते खतरों में प्राकृतिक खतरों का एक महत्वपूर्ण स्थान है। ये वे खतरे हैं जो प्रकृति द्वारा घटित होते हैं वैसे आंधी-तूफान, भूकम्प, बाढ़, सुनामी लहरें, बादलों का फटना, आसमानी बिजली का गिरना, पर्वतों का स्खलन आदि। इनमें से कुछ खतरों का पूर्व में कुछ सीमा तक अनुमान लगाया जा सकता है लेकिन कुछ खतरे ऐसे हैं जिनका अब तक पूर्व अनुमान नहीं लगाया जा सकता है जैसे भूकंप का आना। इसके आने पर इसकी तीव्रता को तो मापा जा सकता है लेकिन यह बता पाना कि भूकंप कहां आएगा कब आएगा और कितनी तीव्रता का होगा अभी मानव मस्तिष्क से परे की बात है। यही कारण है कि इस विषय में लोगों को अग्रिम चेतावनी देना कठिन काम है। इसी कारण भूकम्प आने में कुछ ही क्षेत्रों में असंख्या लोग मौत का शिकार बन जाते हैं और इमारतें धराशायी हो जाती हैं। भूकंप द्वारा कई बारअलग अलग देशों और स्थानों पर तबाही का मंजर देखने को मिला है जिसे देखकर एक बार तो रूह कांप उठती है। इन स्थानों पर बिजली और पानी का संकट भी पैदा हो जाता है। इस दिशा में जापान देश ने उदाहरण पेश किया है। उन्होंने ऐसे भवनों का निर्माण किया है जो भूकंप रोधी है और भूकंप आने पर सुरक्षित रहते हैं। हमारे अपने देश को भी जापान से सबक लेने की आवश्यकता है ताकि भूकम्प आने पर जान माल सुरक्षिरत रह सके।

इसी प्रकार समुद्र में सुनामी लहरें भी मानव जीवनके लिए एक बड़ा खतरा है। इन लहरों का कारण भी भूचाल ही माना जाता है। यह भूचाल समुद्र के अन्दर आता है जो समुद्र में सुनामी लहरों का कारण बनता है जिसमें समुद्र में ऊँची-ऊँची लहरें उठती है और जब ये लहरें समुद्र के किनारों की ओर बढ़ती हैं तो किनारों के पास स्थित स्थल स्थानों को अपनी चपेट में ले लेती है और इन स्थानों पर स्थित भवनों व व्यक्तियों को अपनी चपेट में ले

शेष पृष्ठ 41 पर........

अन्नाभाऊ साठे

(1 अगस्त, 1920 –18 जुलाई 1969)

आगे बढ़ो! जोरदार प्रहार से दुनिया को बदल डालो। ऐसा मुझसे भीमराव कह कर गए हैं। हाथी जैसी ताकत होने के बावजूद गुलामी के दलदल में क्यों फंसे रहते हो। आलस त्याग, जिस्म को झटककर बाहर निकलो और टूट पड़ो।

–अन्नाभाऊ साठे

अन्नाभाऊ साठे कौन थे, क्या थे? कहां के थे? बहुत कम लोग जानते हैं। खासकर हम हिंदी वालों में। 'अन्ना' नाम सुनकर हमारे मस्तिष्क में सिर्फ अन्ना हजारे की तस्वीर बनती है। क्योंकि निहित स्वार्थ के अनुरूप खबरें गढ़ने वाला पूंजीवादी मीडिया, इस नाम को किसी न किसी बहाने बार-बार हमारे बीच ले आता है। सुनकर शायद हैरानी हो कि अन्नाभाऊ से जुड़े एक प्रश्न ने नेहरू जी को भी उलझन में डाल दिया था। उन दिनों रूस और भारत की गहरी मैत्री थी। नेहरू जी वहां पहुंचे हुए थे। यात्रा के बीच एक व्यक्ति ने अकस्मात पूछ लिया–आपके यहां गरीबों और वंचितों की कहानी कहने वाला एक कलाकार और समाज सुधारक अन्नाभाऊ साठे है। कैसा है वह?

नेहरू जी चुप्प। उन्होंने ऐसे किसी अन्नाभाऊ साठे के बारे में नहीं सुना था। देश लौटे। यहां पता लगाना शुरू किया। पर मुश्किल। काफी कोशिश के बाद पता चला कि मुंबई की चाल में ऐसा ही आदमी रहता है। कद पांच फुट, रंग तांबई, बदन इकहरा। आंखों में चमक। सीधे दिल में उतर जाने वाली तेज, जोशीली आवाज। लिखता, गाता-बजाता, तमाशे करता है। मजदूर आंदोलनों में हिस्सा लेकर उनकी बात उठाता है। बोलने के लिए खड़ा होता है तो बड़ी से बड़ी भीड़ में भी सन्नाटा छा जाता है। लोकप्रियता ऐसी कि तमाशा करे तो दर्शकों का हुजूम उमड़ पड़ता है। अमीरी-गरीबी के बीच भारी अंतर को वह मार्क्सवादी नजरिये से देखता है। लेकिन जातिवाद और छूआछूत की व्याख्या के समय उसे सिर्फ आंबेडकर याद आते हैं। जो सामाजिक न्याय के लिए वर्ग-क्रांति को आवश्यक मानता है।

मराठी साहित्य और कला-जगत के शिखर पुरुष अन्नाभाऊ साठे का जन्म 1 अगस्त 1920 को महाराष्ट्र के सांगली जिले की वालवा तहसील के वाटेगांव के मांगबाड़ा में हुआ था। उनके बचपन का नाम तुकाराम था। पिता का नाम भाऊराव और मां का नाम था बालूवाई। जाति थी मांग (मातंग)। अछूत और देश की सर्वाधिक विपन्न जातियों में से एक, जिसका कोई स्थायी धंधा तक नहीं था। पेट भरने के लिए उस जाति के सदस्य शादी-विवाह, पर्व-त्योहार के अवसर पर ढोल और तुरही बजाते। नाच-गाकर लोगों का मनोरंजन करते। रस्सी बुनते। उससे जो आय हो जाती उससे जैसे-तैसे गृहस्थी चलाते थे। लेकिन ये काम हमेशा तो मिलने वाले नहीं थे। इसलिए बाकी समय में वे मेहनत-मजदूरी वाला कोई भी काम कर लेते थे। अछूत होने के कारण गांव में रहने की मनाही थी। सो गांव-बाहर रहते। चौन वहां भी नहीं था। गांव में जब भी कोई अपराध होता तो शक 'मांगबाड़ा' पर ही जाता। शर्म की बात यह कि मानव-मात्र के अधिकारों की सुरक्षा का दावा करने वाली औपनिवेशिक सरकार ने पूरी 'मांग' जाति को 'क्रिमिनल ट्राइव एक्ट 1871' के अंतर्गत अपराधी घोषित किया हुआ था। कुछ 'समझदार' किस्म के ग्रामीण किसी 'मांग' को ही गांव की चौकीदारी सौंप देते थे। कहीं-कहीं यह कहावत भी चलती थी कि मांग के घर में आटे का बर्तन भले खाली हो, दीवार पर बंदूक जरूर टंगी होती है।

अन्ना के पिता मुंबई में एक अंग्रेज के घर माली का काम करते थे। बाकी परिवार गांव में

रहता था। भाऊराव नौकरी करते थे, इस कारण बाकी सजातीय परिवारों की अपेक्षा उनकी आर्थिक हैसियत थोड़ी अच्छी थी। फिर भी जीवन संघर्षमय था। भाऊराव बेटे को पढ़ाना चाहते थे। एक बार छुट्टी लेकर गांव पहुंचे तो अन्ना की मां ने उनका स्कूल में दाखिला कराने की सलाह दी। लेकिन स्कूल मास्टर कुलकर्णी 'अपराधी' जाति के बालक को दाखिला देने को तैयार न था। काफी अनुनय-विनय के बाद वह राजी हुआ। फिर भी जाति-द्वेष बना रहा। अपमान और तिरस्कार भरे माहौल में अन्नाभाऊ ने कुछ दिन जैसे-तैसे काटे। शीघ्र ही उनका स्वाभिमानी मन वहां से ऊब गया। आखिर प्राथमिक शिक्षा पूरी होने से पहले ही, स्कूल को हमेशा के लिए अलविदा कह, वे जीवन की पाठशाला में भर्ती हो गए। उसके बाद कुछ दिन यायावरी और सिर्फ यायावरी चली। जो सीखा जीवनानुभवों से सीखा। जितना सीखा उतना समाज को लगातार लौटाते भी रहे।

उन दिनों मनोरंजन का प्रमुख साधन गाना-बजाना था। अन्ना का दिमाग तेज था। याददाश्त गजब की। बचपन से ही अनेक लोकगीत उन्हें उन्हें कंठस्थ थे। वे गा-बजाकर अपना और दूसरों का मनोरंजन करते। खेल ही खेल में यदा-कदा कुछ नया भी रच देते थे। यही नहीं, वे तलवार, भाला, दांडपट्टा, कटार आदि चलाने में भी सिद्धहस्त थे। इन हथियारों का प्रयोग अवसर विशेष पर शौर्यकला का प्रदर्शन करने के लिए किया जाता था। असल में वे सामंतों के मनोरंजन का साधन थे। वैभव और शौर्य लुटा चुके जमींदार, सामंत शौर्यकलाओं का मंचन देखकर ही आत्मतुष्ट हो जाया करते थे। बात-बात पर न्याय, नैतिकता, धर्म और संस्कृति की दुहाई देने वाले पंडितजन, जाति के नाम पर आदमी-आदमी में भेद के सवाल पर चुप्पी साध जाते थे।

उन दिनों देश में स्वाधीनता आंदोलन की गर्मी थी। क्रांतिकारी गतिविधियों में तेजी आई हुई थी। अंग्रेजों का भारतीयों पर संदेह बढ़ता ही जा रहा था। ऊपर से 1930 के दशक की भीषण आर्थिक मंदी का असर। एक दिन भाऊराव को नौकरी से हाथ धोना पड़ा। हताश-निराश भाऊराव गांव पहुंचे। यह सोचकर कि वहां जैसे बाकी लोग जीते हैं, वैसे वे भी दिन बिता लेंगे। लेकिन गांव पहुंचते ही एक नई आफत से सामना हुआ। उस वर्ष पूरे महाराष्ट्र में सूखा पड़ा था। अकाल जैसे हालात बन चुके थे। उन दिनों मुंबई औद्योगिक नगरी के रूप में तरक्की कर रही थी। लोग रोजगार की तलाश में उसकी ओर आ रहे थे। रोजी-रोटी के सवालों से जूझ रहे भाऊराव साठे ने भी मुंबई जाने का फैसला कर लिया। मगर किराये के लिए जरूरी पैसे उनके पास न थे। बस मुंबई पहुंचने की ललक थी, जो देखते ही देखते उनका संकल्प बन गई। किराये का इंतजाम न हुआ तो परिवार को साथ ले, एक दिन पैदल ही मुंबई की ओर निकल पड़े। गांव-गांव भटकते, खाते-कमाते, पैदल चलते-चलते पूरा परिवार किसी तरह पूना पहुंचा। वहां वे लोग एक ठेकेदार के लिए पत्थर तोड़ने का काम करने लगे। अन्ना भी काम में उनकी मदद करता। लगातार मेहनत से वह कमजोर पड़ने लगा था। ठेकेदार अपने मजदूरों को बंधुआ समझता था। आखिरकार एक पठान की मदद से भाऊराव परिवार को लेकर वहां से निकल लिए। आगे फिर वही पैदल यात्रा। वही संघर्ष और जहालत से भरा जीवन। वाटेगांव से मुंबई करीब 255 किलोमीटर था। इस दूरी को पैदल पाटने में ही दो महीने गुजर गए।

रास्ते में कुछ कड़वे अनुभव भी हुए। एक बार की बात। चलते-चलते अन्ना को भूख लग आई थी। सामने पके आमों से लदा एक पेड़ देखा तो भूख और भड़क उठी। उसी बेचैनी में उन्होंने पेड़ के मालिक से पूछे बगैर दो-चार आम तोड़ लिए। अचानक मालिक ने आकर उन्हें दबोच लिया। घबराए अन्ना ने आम वापस लौटाने की पेशकश की, लेकिन वह माना नहीं। डरा-धमकाकर आमों को दुबारा डाल से लटकाने की जिद करने लगा।इस तरह की अपमानजनक घटनाओं से जन्मे आक्रोश का असर रचनात्मक निखार के साथ अन्नाभाऊ की करीब-करीब हर रचना में है। उनकी बहुप्रसिद्ध कहानी 'खुलांवादी' का एक पात्र कहता है।

'ये मुर्दा नहीं, हाड़ मांस के जिंदा इंसान हैं। बिगड़ैल घोड़े पर सवारी करने की कूबत इनमें है। इन्हें तलवार से जीत पाना नामुमकिन है।'

मुंबई पहुंचते समय तुकाराम उर्फ अन्नाभाऊ

की उम्र महज 11 वर्ष थी। गांव में जहां अछूत होने के कारण कोई काम न देता था, मुंबई में काम की कमी न थी। सो घर चलाने के लिए मुंबई में अन्ना ने कुलीगिरी की। होटल में बर्तन धोने से लेकर वेटर तक का काम किया। घरेलू नौकर रहे, कुत्तों की देखभाल के लिए एक अमीर की चाकरी की। घर-घर जाकर सामान बेचा। कुछ और काम न मिलने पर बूट-पालिश पर हाथ भी आजमाया। इस बीच फिल्म देखने का शौक पैदा हुआ। मूक फिल्मों का जमाना था। पर शौक ऐसा कि अपनी मामूली आमदनी का बड़ा हिस्सा टिकट खरीदने पर खर्च कर देते थे। जीवन-संघर्ष के बीच अक्षर जोड़ना और पढ़ना-लिखना सीखा। फिल्मी पोस्टरों और दुकानों के आगे लगे होर्डिंग्स से पढ़ना-लिखना सीखने में मदद मिली। चेंबुर, कुला, मांटुगा, दादर, घाटकोपर वगैरह. मुंबई में काम के अनुसार उनके ठिकाने भी बदलते रहे।

अन्ना भाऊ के निकट रिश्तेदार बापू साठे एक 'तमाशा' मंडली चलाते थे। गाने-बजाने का शौक अन्ना को उन्हीं तक ले गया। वे 'तमाशा' से जुड़ गए। इस बीच एकाएक ऐसी घटना हुई जिससे अन्नाभाऊ के सोचने का ढंग ही बदल गया। तमाशा मंडली को एक गांव में कार्यक्रम करना था। तमाशा शुरू होने से पहले उसके मंच पर महाराष्ट्र में 'क्रांतिसिंह' के नाम से विख्यात नाना पाटिल वहां पहुंचे। वहां उन्होंने ब्रिटिश सरकार की शोषणकारी नीतियों का खुलासा करने वाला जोरदार भाषण किया। मिलों में हो रहे शोषण के लिए पूंजीपतियों और सरमायेदारों की कारगुजारी पर भी बात की। भाषण सुनने के बाद अन्ना भाऊ को अब तक का गाया-सुना अकारथ लगने लगा। छुटपन में वे 'भगवान विठ्ठल' की सेवा में अभंग गाया करते थे। उनमें जातीय ऊंच-नीच को धिक्कारा गया था। बराबरी का संदेश भी था। अब समझ में आया कि गरीबी सामाजिक समानता की राह में सबसे बड़ी बाधक है। आर्थिक असमानता केवल नियति की देन नहीं है। उसका कारण वे लोग हैं जो देश और समाज के धन पर कुंडली मारे बैठे हैं। यह भी समझ में आया कि गाने-बजाने का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं है। उससे सोये हुए समाज को जगाया भी जा सकता है। उसी दिन अन्ना के 'लोकशाहिर' (लोककवि) अन्ना भाऊ बनने की नींव पड़ी। समाज में अमीर-गरीब की खाई को वे कम्युनिस्ट विचारधारा की कसौटी से परखने लगे। यही उन्हें कालांतर में कम्युनिस्ट पार्टी तक ले गया।

तमाशा में उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने का भरपूर अवसर मिला। 'तमाशा' में वे कोई भी वाद्य बजा लेते। किसी भी प्रकार की भूमिका कर लेते थे। निरंतर सीखने और नए-नए प्रयोग करने की योग्यता ने उन्हें रातों-रात तमाशा मंडली का महानायक बना दिया। कुछ दिनों बाद अपने दो साथियों के साथ मिलकर अन्ना ने 1944 में 'लाल बावटा कलापथक' (लाल क्रांति कलामंच) नामक नई तमाशा मंडली की शुरुआत की। जिसके तहत उन्होंने कई क्रांतिकारी कार्यक्रम पेश किए। उस समय तक देश में आजादी के प्रति चेतना जाग्रत हो चुकी थी। 'तमाशा' जनता से संवाद करने का सीधा माध्यम था। 'लाल बावटा' के माध्यम से अन्नाभाऊ मजदूरों के दुख-दर्द को दुनिया के सामने लाते, लोगों को स्वतंत्रता का महत्त्व समझाते थे। इससे वे मजदूरों के बीच तेजी से लोकप्रिय होने लगे। अपनी मंडली को लेकर वे महाराष्ट्र के गांव-गांव तक पहुंचे। वहां लोगों को आजादी के लिए तैयार रहने और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने का आवाह्न किया। लोग उन्हें 'शाहिर अन्ना भाऊ साठे' और 'लोकशाहिर' कहकर पुकारने लगे।

आगे चलकर सरकार ने 'तमाशा' पर प्रतिबंध लगा दिया। जिसके तहत 'लाल बावटा' को भी बंद करना पड़ा। लेकिन अन्ना भाऊ के भीतर छिपा कलाकार इतनी जल्दी हार मानने को तैयार न था। उन्होंने अपने विचारों को लोकगीतों में ढालना आरंभ कर दिया। तमाशा मंडली छोड़ वे एक मिल में काम करने लगे। वहां मजदूरों की समस्याओं से सीधा परिचय हुआ। कम्युनिस्ट विचारधारा के प्रति लगाव तो 'क्रांतिसिंह' नाना पाटिल का भाषण सुनने के बाद से ही था। मिल में मजदूरी करते हुए वे कम्युनिस्ट पार्टी के भी संपर्क में आए और उसके सक्रिय सदस्य बन गए। लोकगीतों के माध्यम से कम्युनिस्ट विचारधारा का प्रचार-प्रसार करने लगे। पार्टी के लिए दरियां बिछाने से लेकर भाषण देने तक का काम किया। इसी बीच विवाह हुआ। लेकिन पहला विवाह ज्यादा जमा नहीं। दूसरा विवाह एक

परित्यक्त स्त्री से किया। संतान भी हुई, लेकिन वह संबंध भी ज्यादा दिन टिक न सका।

उद्योगनगरी के रूप में पनपती मुंबई हजारों मजदूरों, किसानों की शरण-स्थली थी। गांव में गरीबी, बेरोजगारी और सामंती उत्पीड़न से त्रस्त मजदूर वर्ग बेहतर जीवन की आस में उसकी ओर खिंचे चले आते थे। उनके लिए वही एक उम्मीद थी। लेकिन बेतरतीव मशीनीकरण ने लोगों की समस्या में इजाफा किया था। एक ओर बड़ी-बड़ी स्लम बस्तियां उभर रही थीं, दूसरी ओर ऊंची-ऊंची अट्टालिकाएं। अमीर-गरीब के बीच निरंतर बढ़ते अंतराल से उन्हें लगने लगा था कि जिन सपनों के लिए उन्होंने अपना गांव-घर छोड़ा था, वे मुंबई आकर भी फलने वाले नहीं है। उस समय तक रूस को आजाद हुए करीब 25 वर्ष बीत चुके थे। अन्नाभाऊ सोवियत संघ की तरक्की के बारे में सुनते, प्रभावित होते। रूस की क्रांतिगाथाएं सुनकर मन उमंगित होने लगता। 1943 के आसपास उन्होंने स्तालिनग्राद को लेकर एक पावड़ा 'शौर्यगीत' लिखा। उस पावड़े का अनुवाद रूसी भाषा में भी हुआ। उसके बाद तो अन्नाभाऊ की कीर्ति-कथा देश-देशांतर तक व्यापने लगी।

इस बीच उन्होंने कई उपन्यास और कहानियां लिखीं। कम्युनिस्ट पार्टी के साहित्य को पढ़ा। उन्हें समझ आने लगा कि सामाजिक और आर्थिक विकास परस्पर अन्योन्याश्रित हैं। वगैर एक के दूसरे को साधना संभव नहीं। खासकर भारत जैसे समाजों में जहां जाति मजबूत सामाजिक संस्था के रूप में वर्षो से अपनी पकड़ बनाए हो। धर्म उसका समर्थन करता हो। लोग मानते हों कि वे वही हैं, जो उन्हें होना चाहिए। जहां तथाकथित ईश्वरीय न्याय को ही सर्वश्रेष्ठ न्याय माना जाता हो। बड़ा वर्ग मानता हो कि समाज में जो जहां, जैसा है, सब ईश्वरेच्छा से है। भारतीय समाज में ऊंच-नीच, अमीर-गरीब की बेशुमार खाईयां हैं। बावजूद इसके वर्ग-संघर्ष के लिए यह सबसे अनुपजाऊ धरा है। लोगों की यथास्थितिवादी मनोवृति, परिवर्तन की हर संभावना को विफल कर देती है। जब कभी उसके विरुद्ध आवाज उठी, धार्मिक संस्थाएं लोगों को नियतिवाद का पाठ पढ़ाने के लिए सामने आ गईं। गौतम बुद्ध ने जाति को चुनौती दी। उनका आभामंडल इतना प्रखर था कि उनके रहते प्रतिक्रियावादी शक्तियां वर्षो तक सिर छुपाए रहीं। उनके जाते ही देश में फिर ब्राह्मणवादी साहित्य की बाढ़-सी आ गई। नियतिवाद को शास्त्रीय मान्यता देने के लिए पुराणों और स्मृतियों की रचना की गई। शताब्दियों के बाद संत कवियों ने जाति को ललकारा तो तुलसीदास अपनी रामचरितमानस लेकर आ गए। सामाजिक समानता का सपना शताब्दियों के लिए पुनः नेपथ्य में खिसक गया। धर्म जाति का सुरक्षा-कवच है। इस रहस्य से पर्दा उठा उनीसवीं शताब्दी में। नई शिक्षा और विचारों के आलोक में लोगों ने जाना कि वगैर धर्म को चुनौती दिए जाति से मुक्ति असंभव है। कि आर्थिक और सामाजिक समानता के लिए सांस्कृतक वर्चस्व से बाहर निकलना जरूरी है। इस संबंध में सबसे पहली पुकार ज्योतिराव फुले की थी। पुकार क्या मानो मुक्ति-मंत्र था। उस मुक्ति-मंत्र को सिद्धि-मंत्र में बदला डॉ. आंबेडकर ने। जाति का दंश डॉ. आंबेडकर ने भी झेला था और अन्नाभाऊ ने भी। साम्यवादी चेतना जहां अन्नाभाऊ के लोकगीतों को ओज से भरपूर बनाती थी, वहीं आंबेडकर से उन्हें हालात से टकराने की प्रेरणा मिलती थी। मार्क्स और आंबेडकर, अन्नाभाऊ के लिए दोनों ही प्रेरणास्रोत थे।

एक क्रांतिधर्मी कलाकार की तरह अन्नाभाऊ ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन तथा गोवा मुक्ति आंदोलन के लिए काम किया। जनता के हित में एक कलाकार के रूप में वे हर आंदोलन में आगे रहे। उनके लिखे पावड़े, लावणियां मुक्ति आंदोलनों को ऊर्जा प्रदान करते रहे। 1945 में अन्ना भाऊ ने साप्ताहिक 'लोकयुद्ध' के लिए पत्रकार के रूप में काम करना आरंभ किया। अखबार साम्यवादी विचारधारा को समर्पित था। आम आदमी के संघर्ष, उसकी पीड़ा और उसके अभावों को वे एक पत्रकार के रूप में लगातार उठाते रहे। इसने उन्हें जनसाधारण के बीच नायकत्व प्रदान किया। अखबार के लिए काम करते हुए उन्होंने अक्लेची गोष्ट, खाप्पया चोर, मजही मुंबई जैसे नाटक लिखे। सरकार ने 'तमाशा' पर प्रतिबंध लगाया तो अन्नाभाऊ ने 'लाल बावटा' के लिए लिखे गए नाटकों को आगे चलकर उन्होंने

लावणियों और पावड़ा जैसे लोकगीतों में बदल दिया। तमाशे में वे अकेले गाते थे, लोकगीत बनने के बाद वे जन-जन की जुबान पर छाने लगे। अन्नाभाऊ की रचनाओं पर 12 फिल्में बनीं जो सफल मानी जाती हैं।

निरंतर संघर्षमय जीवन जीते हुए अन्नाभाऊ ने 14 लोकनाटक, 35 उपन्यास और 300 से ऊपर कहानियां लिखी। लगभग 250 लावणियां उन्होंने लिखीं। लगभग छह फिल्मों की पटकथाएं और यात्रा वृतांत लिखा। उनकी लिखी 14 कहानियों उपन्यासों का फिल्मांकन भी हुआ। यात्रा वृतांत 'मेरी रूस यात्रा' को दलित साहित्य का पहला यात्रा-वृतांत होने का गौरव प्राप्त है। उनके उपन्यासों और नाटकों की देश-विदेश में खूब चर्चा हुई। 1959 में प्रकाशित 'फकीरा' उपन्यास को खूब सराहा गया। इसे उन्होंने डॉ. आंबेडकर को समर्पित किया था। यह उपन्यास इसी नाम के मातंग जाति के क्रांतिकारी की शौर्यकथा है, जिसमें उसका सामाजिक जीवन भी समाया हुआ है। इस उपन्यास का 27 देशी-विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ। 1961 में इसे महाराष्ट्र सरकार के शीर्ष पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनकी दूसरी रचनाएं भी रूसी, फ्रांसिसी, चेक, जर्मनी आदि भाषाओं में अनूदित हुई। अन्नाभाऊ द्वारा लिखित पुस्तकों में फकीरा, वारण का शेर, अलगुज, केवड़े का भुट्टा, कुरूप, चंदन, अहंकार, आघात, वारणा नदी के किनारे, रानगंगा आदि उपन्यासय चिराग नगर के भूत, कृष्णा किनारे की कथा, जेल में, पागल मनुष्य की फरारी, निखारा, भानामती, आबी आदि 14 कहानी संग्रहय इनामदार, पेग्यां की शादी, सुलतान आदि नाटक हैं। उनके लिखे लोकनाटकों में तमाशा 'नौटंकी', दिमाग की काहणी, खाप्पया चोर, देशभक्ते घोटाले, नेता मिल गया, बिलंदर पैसे खाने वाले, मेरी मुंबई, मौन मोर्चा आदि प्रमुख हैं। उन्होंने कई फिल्मों की पटकथाएं भी लिखीं, जिनमें फकीरा, सातरा की करामात, तिलक लागती हूं रक्त से, पहाड़ों की मैना, मुरली मल्हारी रायाणी, वारणे का बाघ तथा वारा गांव का पाणी प्रमुख हैं।

मुंबई में रहते हुए अन्नाभाऊ ने तरह-तरह के काम किए, पैसा भी कमाया, लेकिन गरीबी से पीछा नहीं छूटा। वे 22 वर्ष तक घाटकोपर की खोलियों में रहे। यहां एक सवाल उठ सकता है। कई बड़े अभिनेताओं और फिल्म निर्माताओं से अन्नाभाऊ का संपर्क था। उनकी कहानियों पर फिल्में बन चुकी थीं। उपन्यास 'फकीरा' का कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका था। बावजूद इसके क्यों अपने लिए ठीक-ठाक घर का इंतजाम न कर सके? इस तरह की जिज्ञासा अन्नाभाऊ के एक मित्र को भी थी। वर्षों तक घाटकोपर की चाल में रहते देख उसने अन्नाभाऊ से पूछा था।

'आपकी अनेक पुस्तकों का देशी-विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। फिल्मों की पटकथाएं भी आपने लिखी हैं। आपकी कई कहानियों और उपन्यासों पर फिल्में बन चुकी हैं। 'फकीरा' के रूसी भाषा में अनुवाद से रायल्टी भी मिली होगी। उससे आप बड़ा-सा बंगला क्यों नहीं बनवा लेते?'

इस पर अन्नाभाऊ ने हंसते हुए कहा थाः 'ठीक कहते हो। लेकिन बंगले में आरामकुर्सी पर बैठकर लिखते समय मैं गरीबी की सिर्फ कल्पना कर सकता हूं। गरीबी की पीड़ा और उसका दर्द तो भूखे पेट रहकर ही अनुभव किया जा सकता है।'

अनुभूति की इसी प्रामाणिकता के लिए अन्नाभाऊ ने गरीब-मजदूरों के बीच रहते थे। बिना किसी अहमन्यता, बगैर किसी विशिष्टताबोध के। 1968 में राज्य सरकार कुछ मेहरबान हुई। अन्नाभाऊ के रहने के लिए छोटा-सा घर उपलब्ध करा दिया गया। लेकिन गरीब मजदूरों के बीच, उन्हीं की तरह रहने वाले उस जिंदादिल इंसान को नया ठिकाना रास नहीं आया। एक साल के भीतर ही, 18 जुलाई 1969 को वह महान कलाकार मुंबई को हमेशा के लिए अलविदा कह, दुनिया से चला गय

1 अगस्त 2002 को भारत सरकार ने उनके 82वें जन्म दिवस पर डाक टिकट जारी किया। सरकार का यह प्रयास एक शाश्वत विद्रोही, प्रखर प्रतिभा को मूर्तियों में कैद कर देने जैसा ही माना जाएगा, क्योंकि दर्जनों सरकारी अकादमियां और सांस्कृतिक संस्थाएं होने के बावजूद अन्नाभाऊ के कृतित्व का एकांश भी हिंदी में उपलब्ध नहीं है। परिणामस्वरूप हिंदी के लेखक इस मराठी कला-संस्कृति और साहित्य की महानतम प्रतिभा के लेखकीय और कलात्मक अवदान से वंचित हैं।

...शेष अगले अंक में।

बुवाबाजी (बाबागीरी)

-डॉ॰नरेन्द्र दाभोलकर

गतांक से आगे

कर्म सिद्धांत :

साधुत्व की ढकोसले की फसल हरी-भरी होने के कारण इस देश की मनोभूमिका की निगरानी नियति, नसीब, देव तथा प्रारब्ध इन कल्पनाओं के आधार पर होती है। इन सभी शब्दों के संदर्भ थोड़े भिन्न-भिन्न हैं, लेकिन साधुओं को उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मनुष्य को अपने उचित-अनुचित कर्मो के फल भुगतने पड़ते हैं। इस विचार को ही कर्म-सिद्धांत कहा जाता है। उसके अनुसार, कर्मो का अनुकरण किया जाता है। ये वर्ग हैं-क्रियमाण, संचित और प्रारब्ध। क्रियमाण, हम जो काम करते हैं, वे कर्म। उनका संग्रह होता है और पूर्व संचित कर्म में मिल जाता है। इस संचित कर्मो के फल भुगतने के लिए मनुष्य को वर्तमान जन्म मिलता है। उसे प्रारब्ध-कर्म कहा जाता है। भारतीय दर्शन ने कर्म-सिद्धांत को स्वीकार किया है। चार्वाक दर्शन इसका अपवाद है, इसीलिए कर्म-सिद्धांत भारती तत्वज्ञान का एक विशेष सिद्धांत माना जाता है। कर्म-सिद्धांत विश्व का ही नियम माना जाता है।

यह कर्म-सिद्धांत भारतीय मानस पर कुंडली मारकर बैठा है। आज भी जीवन में घटी अच्छी घटना को नसीबी और बुरी घटना को कमनसीबी माना जाता है। बहुसंख्य भारतीय ऐसा मानते हैं कि 'समय से पहले और भाग्य से अधिक' किसी को कुछ नहीं मिलता। जीवन के दुखों, समस्याओं की ओर 'नियति का खेल' इस दृष्टिकोण से देखा जाता है। इसके विरुद्ध संघर्ष तो होता है लेकिन दैव की अनुकूलता भी जरूरी समझी जाती है। 'अच्छे कर्म के फल आज नहीं तो कल' अवश्य मिलेंगे और 'बुरे कर्मो के बुरे परिणाम भुगतने पड़ेंगे' - ये कर्म-सिद्धांत के विचार है। अगर वास्तव में ऐसा होता है, तो चिंता की बात नहीं, लेकिन ये निष्कर्ष केवल इच्छा तक सीमित रहते हैं। सत्य पर आधारित नहीं होते। न्याय प्रकृतिक बात नहीं है। समाज-स्थापना के बाद मनुष्य ने इसे केवल तीन-चार हजार वर्षो पूर्व ही स्थापित किया।

उससे पहले न्याय-अन्याय का अस्तित्व नहीं था। आज भी उसका अस्तित्व भरोसेमंद नहीं है। कर्म-सिद्धांत का पक्ष लेकर दी गई दलीलें अत्यधिक दुर्बल एवं अप्रचलित हैं। यह सिद्धांत निराधार है, अन्यायी भी है।

सुखात्मक अनुभव सत्कर्म के फल होते हैं, दुखात्मक अनुभव दुष्कर्म के फल होते हैं-ऐसा अगर बताया जाता है तो फिर सत्कर्म कौन से और दुष्कर्म कौन से, यह समझने की क्षमता भी प्रत्येक में होनी चाहिए। कर्म विपाक सिद्धांत में ऐसा कोई तत्व नहीं है। यह बात न्यायतत्व के विरुद्ध है। अपराधी को अगर यह पता नहीं चलेगा कि किस कर्म के लिए उसे दंड मिला है और कौन से सत्कर्म के लिए ईनाम मिला तो फिर वह अच्छे कर्मो को दोबारा कैसे करेगा और बुरे कर्मो को कैसे टालेगा ? ऐसे फैसले को न्याय नहीं कहा जा सकता। ऐसे निरर्थक कर्मकांड के जरिए प्रकृति के नैतिक शासन का प्रदर्शन किया जाता है। इस टीस के बावजूद भारतीय जनमानस के संदर्भ में यह सही है। नीति कल्पनाएं और नैतिक नियम-स्थल कालसापेक्ष होते हैं। इसीलिए अनेक कर्मो के संदर्भ में अच्छे या बुरे का निर्णय असंभव है। भिन्न नीति संहिता के अनुसार ही कर्म अच्छा अथवा बुरा तथा वर्जित अथवा स्वीकृत हो सकता है। कहा जाता है कि यह कर्म-सिद्धांत आदिकाल से, सृष्टि की उत्पत्ति के समय बीत चुका है। उस समय मनुष्य ने नैतिकता की विवेक-बुद्धि नहीं थी। धीरे-धीरे वह उसमें विकसित हुई। अभी भी मनुष्य में पशु का अंश सुप्त रूप में है। इन सारी बातों का कर्म-सिद्धांत से कोई मेल नहीं होता। कर्म-सिद्धांत के दर्शन से मनुष्य में निहित उद्यमशीलता, परिवर्तन की इच्छा, जीवन में अमंगल को नष्ट करने की प्रेरणा मानो नष्ट हो जाती है। उसके स्थान पर उदासवृत्ति एवं निष्क्रयता नजर आती है। यह वैचारिकता ढकोसले का पोषण करती है।

आदिमानव बहुत ही कमजोर और निर्बल प्राणी था। इसीलिए वह किसी भी होनी-अनहोनी को नियति मानकर चलता। मनुष्यों के प्रयत्नों में बार-बार आने वाली असफलता और अनपेक्षित घटनाओं के कारण उसका कर्म-सिद्धांतों पर विश्वास दृढ़ होता है। लेकिन आदमानव की नियति का प्रमाण देना असंभव है। इसके लिए भविष्य की घटनाओं का पता होना चाहिए और वह अचूक भी होना चाहिए। अब समस्या यह है कि इसके लिए भविष्य की कल्पना को सच मानना पड़ेगा। जिस प्रकार अंतराल में कुछ प्रदेश नजदीक होता है, बाकी दूर होते हैं, कुछ अंतराल पार करने पर ही दूर के प्रदेश नजदीक लगते हैं-यही बात काल-परिणाम के बारे में भी लागू होती है; अर्थात भविष्य का अस्तित्व होता ही है। लेकिन धीरे-धीरे वह पता चलता हैं लेकिन काल में केवल वर्तमान काल का अस्तित्व क्षणिक होता हैं दूसरे क्षण वह भूतकाल बन जाता है। उसके स्थान पर एक भविष्य, लेकिन वास्तविक वर्तमान आकार लेता है। मतलब भविष्य का अस्तित्व अगर न माना जाए तो किसी भी मनुष्य को वह दिखाई कैसे देगा ? नियति की दृढ़ कल्पना का देश के बहुसंख्य लोग मानते हैं। कमजोर लोग ऐसी कल्पनाओं का शिकार होते हैं तथा आतंकित होते हैं। कर्म-सिद्धांत को सत्य पर आधारित सिद्धांत मानते हैं। इसीलिए अपने शोषण को तकदीर मानकर खुद को ही सांत्वना देते हैं प्रारब्ध-पूर्वसंचित कर्म पर निर्भर होता है, उससे छुटकारा पाना कठिन होता है, लेकिन बाबा की कृपा से यह आसान हो जाता है, ऐसी मान्यता होती है। क्योंकि वे तो साक्षात् ईश्वर होते हैं। इस प्रकार शोषण का मुख्य कारण सामाजिक और भौतिक परिस्थितियों में ढूंढने की बजाय पूर्वसंचित कर्म कार्य में ढूंढा जाता है। सामाजिक शोषण से मुक्ति प्राप्त करने के लिए ऐसे बाबा ढूंढ लिये जाते हैं । कर्म विपाक के सिद्धांत से साधुत्व के आडंबर को प्रेरणा मिलती है, इसलिए लोगों की इस गुलामी को खत्म करने के लिए कर्म-सिद्धांत और दैव कल्पनाओं की तर्कदुष्टता लोगों को बतानी चाहिए।

चमत्कारः

चमत्कार बाबा का महत्वपूर्ण हथियार है। इस देश के लोगों की मानसिकता चमत्कार में शरण लेती है। यह विश्व कार्य-कारण भाव से बद्ध है। यह दृष्टिकोण भले ही उन्होंने स्वीकार किया हो, लेकिन उनके मन में ये भावनाएं रहती हैं।

इस कार्य-कारण भाव को पार करके जाने वाली दैवी शक्ति इस विश्व में है। बाबा, बुवा, स्वामी, गुरू किसी-न-किसी प्रकार का चमत्कार करते हैं। वे बड़ी होशियारी से काम लेते हैं। वे स्वयं अपने चमत्कार का दावा नहीं करते, लेकिन उनके भक्त अपने चमत्कारपूर्ण अनुभवों का ढिंढोरा पीटते हैं।

इस पर बाबा की टिप्पणी होती है- 'मै इस संदर्भ में कुछ नहीं कहना चाहता, भक्तों की अनुभूति उनका अपना प्रश्न है।' सत्य साईं बाबा जैसे लोग 'मेरे चमत्कार मेरी दैवी शक्ति के आविष्कार हैं', ऐसा बताते हैं। 'पापियों के उद्धार ' के लिए ईश्वर ने मुझे भेजा है, मैं उसका दूत हूं, आपकी इस बात का भरोसा देने के लिए उसने मुझे यह विजिटिंग कार्ड दिया है', ऐसा वे दावा करते हैं।

सर्वसामान्य रूप से असंभव, अतर्क्य लगनेवाली घटनाओं को चमत्कार कहा जाता है। यह मानवीय बुद्धि के आकलन से परे होती है। इसीलिए उन्हें अलौकिक कहा जाता है। जनमानस में इस संदर्भ में कमाल का कौतूहल और जिज्ञासा होती है। उनके मन में चमत्कार करनेवाले वयक्ति के प्रति बहुत आदर, श्रद्धा एवं श्रेष्ठत्व की भावना होती है। ऐसे व्यक्ति साक्षात् ईश्वर का अंश हैं और उन्हें भूत-भविष्य जानने की शक्ति प्राप्त है, ऐसी उनकी धारणा होती है। लोगों की इस मानसिकता का अध्ययन कर ऐसे चमत्कारों का मायाजाल फैलाया जाता है। विज्ञान हमेशा इस बात को स्पष्ट करता आया है कि इस सृष्टि में कोई क्रिया अपने आप नहीं घटती। उसके पीछे होने वाले कारणों का पता लगने पर कोई घटना चमत्कार नहीं रहती। चमत्कार-मतलब सामान्य मनुष्य को धोखा देने हेतु धूर्त लोगों द्वारा की गई विभिन्न करतूतें होती हैं। लेकिन बहुसंख्य लोग जानकर भी अनजान बनने की कोशिश करते हैं। अगर सामान्य जनता इस धोखाधड़ी को मानने के लिए तैयार हो जाए तो अपने आप उनका शारीरिक, आर्थिक एवं लैंगिक शोषण भी रुक जाएगा।

लेकिन भक्तों की भोली कल्पना यह होती है कि चमत्कार पर एतराज करने पर बाबा डरेंगे नहीं बल्कि ऐसा करने वालों का जीना मुश्किल कर देंगे।' जबकि वास्तव में स्थिति विपरीत होती है। कोई-न-कोई कारण बता कर बाबा चुनौती से मुंह फेर लेते हैं।

भक्तों के मन में दैवी शक्ति और चमत्कारों के बारे में आशंकाएं आने लगती हैं। चमत्कारों को चुनौती देना आंदोलन का एक रोमांचक कार्य रहा है, लेकिन जनजागृति का उद्देश्य इस कार्य के पीछे हमेशा रहा है। चमत्कारों पर विश्वास कर उनका प्रचार करना, यह भारतीय संविधान के अनुसार भारतीय नागरिक का अपने कर्तव्य से पलायन है, वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विरोधी कार्य हैं, इसीलिए समिति इसका विरोध करती ।

उपर्युक्त शास्त्रीय विवेचन के पश्चात् व्यक्ति और समाज यथार्थ की ओर अलग ही दृष्टिकोण से देखते हैं। एक बार समिति ने गंभीर बीमारियों का इलाज करने का दावा करने वाले बाबा को चुनौती दी। चुनौती की लिखित प्रक्रिया तय हो गई। 10 गंभीर मरीज बाबा को इलाज के लिए दिए गए। अखबार में भी इस चुनौती को घोषित किया गया। अनेक स्थानों से हमें फोन आने लगे कि 'हमारा फलां रिश्तेदार इस बीमारी से त्रस्त है, अपने प्रयोग में उसे शामिल करने की कृपा करें। समिति ने उन्हें बहुत समझाने की कोशिश की कि 'अपना कीमती समय बरबार कर, स्पेशल गाड़ी का टिकट लेकर, मरीज को परोशान मत करें। बाबा के पास उसका कोई इलाज नहीं होगा।' लेकिन वे अपनी जिद पर अड़े रहे, 'सारे इलाज तो हम कर चुके हैं, कोई फायदा नहीं हुआ। देखें, इससे कुछ फर्क पड़ता है या नही।! किस्मत में होगा तो वह ठीक होगा, वरना हमने तो इस बीमारी के सामने घुटने टेक दिए हैं।'

इस मानसिकता का अर्थ यह है कि चमत्कारों पर रखा जानेवाला विश्वास स्वयं से ही एक शुभेच्छा जताता है। जब तक दुनिया में दुख, दीनता, लोभ-लालसा है तब तक चमत्कार होते रहेंगे। 5000 वर्ष पूर्व विज्ञान विकसित नहीं था, तब भी चमत्कार होते थे। आज विज्ञान का विकास हर क्षेत्र में हो गया है, फिर भी चमत्कार का महत्व कम नहीं हुआ है क्योंकि लोगों की मानसिकता वही पुरानी, दकियानूसी है। चमत्कार के प्रति उसके आकर्षण कम नहीं हुआ है।

किसी बाबा पर से विश्वास उठने पर भी चमत्कार पर उसका विश्वास कायम रहता है। 'बाबा झूठे थे, लेकिन अन्य कोई है, जो सच्चाई में ऐसे चमत्कार करता हो ?' उनका मन उन्हें ऐसा विश्वास दिलाता है। ऊपरी तौर पर हमें भी कभी-कभी यह सच लग सकता है, लेकिन ऐसा नहीं है।

मनुष्य और वासनाओं का संबंध अटूट है। उनकी पूर्ति के लिए वह हिम्मत जुटाकर अपना पुरुषार्थ, कर्तृत्व, शायद भ्रष्टाचार और अपराध का मार्ग भी अपना सकते हैं, वरना अपनी इच्छापूर्ति के लिए किसी अज्ञात के हाथों कठपुतली बनना, उसकी दैवी शक्ति को मानकर उसकी शरण में जाना मनुष्य निश्चत् ही टाल सकता है। हमारे युग की शिक्षा-व्यवस्था में ऐसा वैज्ञानिक दृष्टिकोण देने की क्षमता और संभावना भी है। यह दृष्टिकोण उसकी महत्त्वपूर्ण इकाई है। मूल्य-शिक्षा में भी उसका समावेश है लेकिन चमत्कारों के विरुद्ध कितनी ठोस भूमिका अपनानी चाहिए, इसका संस्कार अथवा शिक्षा यहां के छात्रों को नहीं दी जाती।

पल भर के लिए यह मान भी लिया जाए कि मनुष्य अपने स्वभाव के अनुसार कामनापूर्ति के पीछे भागता ही रहेगा। यह उसकी कमजोरी है। तब उसे बदलना मानो आसमान से तारे तोड़ने का प्रयास होगा। ऐसे समय प्रश्न उपस्थित होना चाहिए कि क्या लोगों की इस व्याकुलता अथवा अतृप्ति को किसी बाबा द्वारा अपने धंधे का उसूल बनाना उचित है ?

चमत्कारों के बारे में एक और प्रश्न उपस्थित किया जाता है कि चमत्कार करनेवाले 99 प्रतिशत लोग बदमाश होते हैं। यह ठीक है लेकिन वे 100 प्रतिशत या सारे-के-सारे बदमाश ही होते हैं, ऐसा निष्कर्ष क्या आशास्त्रीय नहीं है ? इसका सीधा उत्तर है कि जिस तर्क के आधार पर 99 प्रतिशत लोगों की बदमाशी साबित होती है, उसी के आधार एक प्रतिशत लोगों की जांच होनी चाहिए। इसमें कोई संदेह अगर आज नजर आता है तो मानना पड़ेगा कि ऐसे कथित चमत्कारों से ठोस इनकार करने वाला प्रयाप्त प्रमाण आज उपलब्ध नहीं है। भलाई इसी में है कि प्रमाण की खोज निरंतर जारी रखी जाए। लेकिन व्यवहार का सूत्र प्रमाणित बातों के आधार ही तय होना चाहिए। इस कथित चमत्कार की सच्चाई भी उसी पद्धति से आज नहीं तो कल अवश्य उजागर हो जाएगी जिससे अन्य अनगिन रहस्यों की हो चुकी है, ऐसा विश्वास रखना जरूरी है। ऐसा मानना और उसी पद्धति से अपना जीवनयापन करना आधुनिक मनुष्य का लक्षण है.........

..क्रमशः

०००

क्या धर्म की वजह से ही दुनिया में पाप कम होते है ?

अगर ऐसा होता तो तो फिर पूरी दुनिया मे धार्मिक लोगों की संख्या अधिक होते हुए भी इतने पाप क्यों होते ?

–मुनेश त्यागी

भारत मे ही जहां इतने मंदिर, मस्जिद हैं जितने स्कूल या अस्पताल भी नहीं है। जहां 33 करोड़ देवी देवता निवास करते हों और कई जीवित भगवान भी मौजूद हों, उसी भारत मे हर रोज औसतन 50 बलात्कार होते हैं। रोज 10 बहुओं को दहेज के लालच में जलाकर मार दिया जाता है

पिछले 20 वर्षो में करीब एक करोड़ लड़कियों को पैदा होते ही मार दिया गया। हर वर्ष 40 लाख लड़कियों को वेश्यावृति के दलदल में धकेल दिया जाता है। क्या यह सब पाप नही है ? अगर यह पाप है तो क्या सारे ऐसा करने वाले नास्तिक है ?

सच्चाई तो यही है कि धर्म की वजह से ही ये इस प्रकार के पाप पनपते और बढ़ते है, धर्मग्रंथों में लिखा हैः

1. चाहे कोई कितना भी बड़ा दुराचारी क्यों न हो, एक बार भगवान का नाम लेने से ही उसके सारे पाप नष्ट हो जाते है।।

2. घोर पापों से भी जिसका मन भरा हुआ है, लेकिन यदि वह भगवान का स्मरण करता है तो वह भीतर बाहर दोनों से पवित्र है।।

3. इसमें संदेह नहीं कि जो कथा सुनते है उनके सौ करोड़ वर्षो के बड़े से बड़े पाप भी नष्ट हो जाते है।

4. संकेत से, मजाक से, अलाप पूर्ति के लिए या यूं ही अवहेलना से, भगवान का नाम लेना , सब पापों का नाश करने वाला होता है।।

इसलिए स्वामी सत्यभक्त अपनी पुस्तक 'धर्म समीक्षा' में लिखते हैः–'तुम जितना चाहे पाप करो, पर परमात्मा का जप कर लो, नाम ले लेकर मूर्ति के दर्शन कर लो, सब पाप माफ हो जाएंगे। इसलिए किसी को पाप से बचने की जरूरत ही महसूस नही होती। सभी बुराइयां धर्मो में है, इसलिए सब बेकार है।' अब आप देखिए कि सारे धर्म पाप और पुण्य का झंडा थामे हुए हैं

आदमी को पाप कर्म करने से कोई डर नहीं लगता, वह पाप कर्म करने को पाप ही नहीं मानता, उसको अन्याय नहीं मानता, हिंसा नहीं मानता और भगवान के नाम पर एक के बाद एक दुष्कर्म किये जाता है क्योंकि उसको यकीन है कि उसका दुष्कर्म पुण्य कर्म में बदल जाएगा, जब वह भगवान का नाम ले लेगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि हजारों साल से हमारे धर्मांध और अंधविश्वासी लोगों के दिमाग में यह ठूस-ठूस कर भर दिया गया है कि वह चाहे जितना दुष्कर्म कर लें, समाज विरोधी, देश विरोधी व्यक्ति विरोधी पाप कर्म कर ले, उनका कुछ नहीं बिगड़ने वाला है और यही कारण है कि दिनों-दिन हमारे यहां अपराध बढ़ते जा रहे हैं। आदमी अपराधी हो गया है, हिंसक हो गया है, बलात्कारी हो गया है, बेईमान हो गया है, झूठा, छली कपटी और मक्कार हो गया है। उसमें आदमी बनने लायक एक भी गुण नहीं रह गया है और वह लगातार दुष्कर्म को ही सत्कर्म मान रहा है। इसलिए हमारा कहना है कि यह सब वह भगवान की कृपा से और उसके नाम पर कर रहा है क्योंकि उसको पता है कि उसका कुछ नहीं बिगड़ने वाला है, वह जो कुछ कर रहा है वह सब भगवान एक दिन माफ कर देगा और भगवान और देवी देवता सब कुछ संभाल लेंगे उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा, इसलिए वह दनादन पाप कर्म करने में लिप्त है और उसे पाप कर्म, दुष्कर्म और अपराधी कर्म करने में कोई अफसोस नहीं है, डर नहीं है, खौफ नहीं है और वह लगातार भगवान के नाम पर नए-नए दुष्कर्म करता है।

अब तो ऐसा लगता है कि हमारे तथाकथित

शेष पृष्ठ 37 पर.......

भारत के दुश्मन तीन : विश्वास, पुनर्जन्म और कर्मफल की बजती बीन

–प्रो॰ जगदीश्वर चतुर्वेदी

अंधविश्वास सामाजिक कैंसर है. अंधविश्वास ने सत्ता और संपत्ति के हितों को सामाजिक स्वीकृति दिलाने में अग्रणी भूमिका अदा की है.

आधुनिक विमर्श का माहौल बनाने के लिए अंधविश्वासों के खिलाफ जागरूकता बेहद जरूरी है. आमतौर पर साधारण जनता के जीवन में अंधविश्वास घुले-मिले होते हैं.

अंधविश्वासों को संस्कार और एटीच्यूड का रूप देने में सत्ता और सत्ताधारी वर्गों को सैकड़ों हजारों वर्ष लगे हैं. अंधविश्वासों की शुरुआत कब से हुई, इसका आरंभ वर्ष तय करना मुश्किल है, फिर भी ऐतिहासिक साक्ष्य बताते हैं कि सामाजिक विकास के क्रम में जब राजसत्ता का निर्माण कार्य शुरू हुआ था उस समय साधारण लोग किसी से डरते नहीं थे. किसी भी किस्म का अनुशासन मानने के लिए तैयार नहीं थे, राजा की सत्ता को स्वीकार नहीं करते थे. सत्ता के दंड का भय नहीं था.

यही वह ऐतिहासिक संदर्भ है जब अंधविश्वासों की सृष्टि की गई.

आरंभिक दौर में अंधविश्वासों को संस्कार और जीवन मूल्य से स्वतंत्र रूप में रखकर देखा जाता था. कालांतर में अंधविश्वासों ने सामाजिक जीवन में अपनी जड़ें इस कदर मजबूत कर लीं कि अंधविश्वासों को हम सच मानने लगे!

अंधविश्वास का दायरा बहुत बड़ा है. इसके दायरे में सामाजिक मान्यताएं, सामाजिक आचार-व्यवहार से लेकर कला, ललित कला, साहित्य, राजनीति, व्यापार तक आता है. इसके कारण सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया बाधित हुई है.

भारत में विगत 2 हजार वर्षो में किसी भी किस्म की सामाजिक क्रांति नहीं हुई. हम लोगों ने कभी भी इस सवाल पर सोचा नहीं कि हमारे समाज में विगत 2 हजार वर्षो में सामाजिक क्रांति क्यों नहीं हुई? तमाम किस्म की कुर्बानियों के बावजूद, आधुनिक भारत में कोई सामाजिक क्रांति क्यों नहीं हुई?

यदि गंभीरता से भारतीय समाज पर नज़र डालें, तो पाएंगे कि भारत में सामाजिक क्रांति न होने के जिन कारणों की ओर आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने ध्यान खींचा था, उनकी तरफ हमारे समाज ने पूरी तरह ध्यान नहीं दिया.

हजारीप्रसाद द्विवेदी का मानना था कि भारत में सामाजिक क्रांति न होने के 3 प्रमुख कारण हैं.

पहला- अंधविश्वास,

दूसरा-पुनर्जन्म की धारणा, और

तीसरा-कर्मफल का सिद्धांत!

हमारी समूची चेतना इन तीन सिद्धांतों से परिचालित रही है.

अंधविश्वास के कारण ही रूढ़ियों ने जन्म लिया. साहित्य एवं कलारूपों में रूढ़ियां और सामाजिक जीवन में रूढ़ियां अंधविश्वास की ही देन हैं.

आधुनिककाल आने के बाद साहित्य से रूढ़ियों का खात्मा हुआ लेकिन सामाजिक जीवन में रूढ़ियां बनी रहीं. अंधविश्वासों के खिलाफ सामाजिक संघर्ष लड़ा नहीं गया.

वहीं दूसरी ओर, पूंजीवाद ने बड़े कौशल के साथ, अंधविश्वास को नए अवतार में, अपनी मास-कल्चर, विज्ञापन रणनीति और मार्केटिंग का अंग बनाकर नई शक्ल दे दी.

आज बड़ी-बड़ी कंपनियां, अपने बाज़ार के विकास के लिए जिन 2 तत्वों का प्रचार रणनीति में सबसे ज्यादा इस्तेमाल कर रही हैं, वह है धार्मिक संप्रेषण की पद्धति और दूसरा है अंधविश्वास.

इन दो के जरिए, जहां एक ओर उपभोक्तावाद का तेजी से विकास हो रहा है, वहीं दूसरी ओर अंधविश्वासों के प्रति भी आस्था बढ़ रही है. जो लोग सामाजिक परिवर्तन करना चाहते हैं, उन्हें बहुराष्ट्रीय कंपनियों की धार्मिक संप्रेषण की रणनीति और अंधविश्वास की जुगलबंदी को तोड़ने के लिए अपना योग देना होगा. उन तमाम क्षेत्रों में हमले तेज करने होंगे जिनसे इन दो तत्वों को संजीवनी मिलती है.

इसके अलावा 'पुनर्जन्म' और 'कर्मफल' के सिद्धांत के प्रति, आम जनता में आलोचनात्मक विवेक/रवैय्या पैदा करना होगा.

आज 'अंधविश्वास' संस्कृति उद्योग का अनिवार्य तत्व बन गया है.

संभवतः कुछ लोगों को यह बात समझ में न आए और कुछ लोगों की भावनाएं भी आहत हों, किंतु इस डर से अंधविश्वासों के खिलाफ जागरूकता पैदा करने के काम को छोड़ा नहीं जाना चाहिए.

प्रश्न उठता है (अंधविश्वास) क्या है? इसे किन तत्वों से मदद मिलती है? इसका सामाजिक आधार कौन सा है? इससे किस तरह का समाज निर्मित होता है? किस तरह के कला रूप जन्म लेते हैं? और इसका विकल्प क्या है?

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखें, तो पाएंगे कि अंधविश्वास की धारणा का बुनियादी सारतत्व एक जैसा रहा है. मिस्र, यूनान और भारत में अंधविश्वासों की शुरुआत तकरीबन एक ही तरह हुई. अंधविश्वास की बुनियादी विशेषता है, अंधानुकरण, वैज्ञानिक विवेक का त्याग और स्वतंत्र चिंतन का विरोध. सामाजिक जीवन में इसका लक्ष्य था, आम लोगों को अपने श्रेष्ठजनों के किसी भी आदेश के पालन का अभ्यस्त बनाना. दूसरा, वे उन्हीं पर भरोसा करना सीखें जो हर मामले में समान भाव से धार्मिक विधि-विधानों का पालन करते हों. कलाओं की दुनिया में इसने नयनाभिराम चित्रों और मधुर (भक्तिपूर्ण) गीतों की सृष्टि की. नयनाभिराम चित्रों और मधुर गीत-संगीत को मंदिरों में मानदंड के रूप में स्थापित किया गया. कला के क्षेत्र में किसी को यह इजाजत नहीं थी कि उनमें परिवर्तन करे. इसके कारण कलाओं के रूप सैकड़ों वर्षों तक अपरिवर्तित रहे. किसी ने यह साहस नहीं दिखाया कि कलाओं और उन मधुर गीतों में परिवर्तन करे. ये कलारूप सैकड़ों वर्षों से एक जैसे हैं. मिस्र के कलारूप इस अंधानुकरण के आदर्श उदाहरण हैं. विगत 10 हजार साल से उनकी शैली में किसी तरह का परिवर्तन नहीं हुआ है. इस दौरान वे न तो बेहतर बन पाए और न बदतर ही बन पाए.

इसी तरह अंधविश्वास को जनप्रिय बनाने में, झूठ खासकर इष्टकर झूठ की बहुत बड़ी भूमिका रही है. एक ऐसा झूठ-उदात्त झूठ-जिसके सहारे संपूर्ण समुदाय को, संभव हो सके तो शासकों को भी स्वीकार करने के लिए राजी किया जा सके.

इस तरह के झूठ के आदर्श उदाहरण हैंः हमारे रीति-रिवाज और संस्कार, जिनकी प्रशंसा करते हुए हमारे शास्त्र थकते नहीं हैं.

रीति-रिवाज और संस्कारों की प्रशंसा के क्रम में सबसे ज्यादा हमला स्वतंत्र चिंतन पर किया गया, उन लोगों पर हमले किए गए जो स्वतंत्र चिंतन के हिमायती थे, जो प्रत्येक बात पर शंका करते थे, प्रश्न करते थे.

आज हम रोम की महानता के गुण गाते हैं किंतु यह भूल जाते हैं कि रोम की महानता का आधार अंधविश्वास था. रोम की महानता के बारे में पोलिबियस ने लिखा कि मैं साहसपूर्वक यह बात कहूंगा कि

'संसार के शेष लोग, जिस चीज का उपहास करते हैं, वह रोम की महानता का आधार है और उस चीज का नाम अंधविश्वास है.'

इस तत्व का उसके निजी और सार्वजनिक जीवन के सभी अंगों में समावेश कराया गया है और इसने ऐसी खूबी से उनकी कल्पनाशक्ति को आक्रांत कर लिया है कि उस खूबी को बेहतर नहीं बनाया जा सकता. संभवतः बहुत से लोग इसकी विशेषता समझ नहीं पाएंगे, लेकिन मेरा मत है कि ऐसा, समाज और लोगों को प्रभावित करने के लिए किया गया है. यदि किसी ऐसे राज्य की संभावना होती, जिसके सभी नागरिक तत्वज्ञ होते, तो इस तरह की चीज से हम बचे रह सकते थे. लेकिन सभी राज्यों में जनता अस्थिर है, निरंकुश भावनाओं, अकारण क्रोध और हिंसक आवेगों से ग्रस्त है. इसलिए केवल यही किया जा सकता है कि जनता को अदृश्य के भय से, और इसी किस्म के पाखंडों से काबू में रखा जाए. यह अकारण (या संयोग से) नहीं, बल्कि सुविचारित चाल थी कि पुराने जमाने के लोगों ने जनता के दिमाग में 'देवताओं और मृत्यु के बाद के जीवन' की बातें बैठाई. हमारी मूर्खता और विवेकहीनता यह है कि हम इस प्रकार की भ्रांतियों को दूर करना चाहते हैं!

इसके अलावा जिस विधा का निर्माण किया गया वह है चमत्कारवर्णन और दंतकथा. चमत्कारवर्णन और दंतकथाओं ने अंधविश्वासों को आम जनता के जीवन में उतारने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की.

किसी भी दर्शनवेत्ता और धर्मशास्त्री के उपदेशों के द्वारा पुरुषों और औरतों के समूहों को श्रद्धा, भक्ति और विश्वास की ओर नहीं मोड़ा जा सकता था. इनको प्रभावित करने के लिए अंधविश्वास का लाभ उठाना पड़ता था. यह कार्य चमत्कारवर्णन और दंतकथाओं के बिना संभव नहीं था. कालांतर में इसने नागरिक जीवन की प्राचीन व्यवस्था और साथ ही, वास्तविक सृष्टि संबंधी स्थापनाओं में मिथकशास्त्र के रूप में सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर लिया.

कौटिल्य का अंधविश्वास में विश्वास नहीं था किंतु उन्होंने राज्य के कौशल के तौर पर अर्थशास्त्र में अंधविश्वास की चर्चा की है. उनका न तो राजा के दैवी अधिकार और न उसकी सर्वज्ञता की सच्चाई में विश्वास था और न वे यह चाहते थे कि स्वयं शासक इस तरह की वाहियात बात को सच मानें.

वे सुझाव देते हैं किः

'राज्य को अपनी आंतरिक और बाह्य स्थितियों को सुदृढ़ करने के लिए सामान्य लोगों की अंधमान्यताओं का लाभ उठाना चाहिए.'

कौटिल्य अर्थशास्त्र में अनेक ऐसे सुझाव देते हैं जो अंधविश्वासों पर आधारित हैं. संयोग से जिन उपायों को सुझाया गया है वे थोड़े फेरबदल के साथ अब भी लागू किए जाते हैं. कौटिल्य ने कुछ ऐसे साधनों को अपनाने की सलाह दी जो बहुत ही भद्दे थे और जिनका दोहरा उद्देश्य था. वे न केवल जनता के बीच अंधविश्वासमूलक भय उत्पन्न करते थे, बल्कि अंधविश्वास के विरोध में यथार्थ और ठोस कदम उठाने वाले प्रचारकों का शारीरिक रूप से सफाया करने की ओर भी लक्षित थे.

अंधविश्वास के साथ-साथ पुनर्जन्म और कर्मफल की प्राप्ति की धारणा का भी व्यापक पैमाने पर इस्तेमाल किया गया. इसका साहित्य पर भी गहरा प्रभाव पड़ा.

हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार साहित्य में काव्य-रूढ़ियों का चलन शुरू हुआ. यह मान लिया गया कि जो कुछ हो रहा है उसका उचित कारण है जिस कार्य में असामंजस्य है, वह अवश्य भविष्य में करने वाले को दंड देने का साधन बनेगा.

इस विचार ने भारतीय साहित्य में सामंजस्यवादी दृष्टिकोण की प्रतिष्ठा की है. समाज की विषमताओं और अनमेल परिस्थितियों को कभी विद्रोही दृष्टि से नहीं देखा गया.

यह मान लिया गया नाटक दुखांत नहीं होना चाहिए. असंतोष और विद्रोह के अभाव में कवि की बुद्धि अधिकाधिक सूक्तियों और चमत्कारों में उलझती गई.

साहित्य में सिर्फ रस और रस में भी सिर्फ श्रृंगार रस की रचनाओं का बाहुल्य, इस मार्ग के अनुसरण का स्वाभाविक परिणाम था.

उल्लेखनीय है रस की अवधारणा की उत्पत्ति का समय, तकरीबन वही है जब अंधविश्वास, पुनर्जन्म और कर्मफल की प्राप्ति के सिध्दांत का जन्म हुआ.

रसों में हमारे प्राचीन लेखकों ने सिर्फ श्रृंगार रस पर ही मुख्यतः जोर दिया और अन्य रसों की उपेक्षा की.

तात्पर्य यह है कि अंधविश्वास के साथ आनंदमूलक मनोरंजन, कामुकता, स्त्री के सौंदर्यमूलक हाव-भावों का गहरा संबंध है. यह संबंध मध्यकाल से विकसित हुआ और आधुनिक काल तक चला आया है. अंधविश्वास के समूचे कार्य-व्यापार को यदि इस परिप्रेक्ष्य में देखें तो पाएंगे कि समाज में कलाओं में नकल की प्रवृत्ति, वस्तुतः अंधविश्वास के प्रति आकर्षण और सहिष्णु भाव पैदा करती है.

नकल की प्रवृत्ति को पूंजीवाद का प्रधान गुण माना जाता है.

इस अर्थ में पूंजीवाद अपने विकास के साथ-साथ, सामंती और पूर्व सामंती कला रूपों और मूल्यबोध को बरकरार रखता है.

कलाओं में अंधानुकरण आधुनिक काल में नकल में रूपांतरित कर लेता है. इससे जहां कभी न खत्म होने वाले मनोरंजन की सृष्टि करने में मदद मिलती है वहीं दूसरी ओर अंधानुकरण के नज़रिए, रवैए और संस्कार का विकास होता है. कलाओं से यथार्थ गायब हो जाता है. उसकी जगह काल्पनिक यथार्थ या आभासी यथार्थ ले लेता है.

इसी तरह अंधविश्वास या नकल की संस्कृति का परजीवीपन और पेटूपन की संस्कृति से गहरा संबंध है. इसका स्वतंत्रता के विचार से विरोध है, यह उन तमाम विचारों को अस्वीकार करती है जो नकल या अंधानुकरण के विरोधी हैं.

पूंजीवाद अपनी सामान्य प्रकृति के अनुसार अंधविश्वासों को भी 'वस्तु' (commodity) के रूप में बदल देता है, उन्हें संस्थागत रूप दे देता है.

अंधविश्वासों को कामुकता एवं रोमांस के साथ प्रस्तुत करता है और यह कार्य फिल्म, टी.वी. और वीडियो फिल्मों के संगठित औद्योगिक माल के उत्पादन के रूप में करता है.

कामुकता, पोर्नोग्राफी, अतिलयात्मक गीत और संगीत तथा नकल के आधार पर निर्मित कलाएं, जितनी ज्यादा बनेंगी उतना ही ज्यादा अंधविश्वास भी बढ़ेगा. उतनी ही ज्यादा सामाजिक असुरक्षा, भेदभाव और तनाव की सृष्टि होगी.

इसका प्रधान कारण यह है कि आज अंधविश्वास को मासकल्चर ने अपना सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा बना लिया है.

अंधविश्वास की रणनीति और धार्मिक संप्रेषण की शैलियों को अपनाकर विज्ञापन, फिल्म और टी.वी. उद्योग तेजी से अपना विकास कर रहा है. पहले अंधविश्वास के माध्यम से राज्य अपने लिए जहां एक ओर धन जुटाता था वहीं दूसरी ओर जनता के दिलो-दिमाग पर शासन करता था. आज भी इस स्थिति में बुनियादी फर्क नहीं आया है. सिर्फ तरीका बदला है और इस कार्य में परंपरागत अंधविश्वास प्रचारकों के अलावा जो नया तत्व आकर जुड़ा वह है पूंजीपति वर्ग, बाजार और संस्कृति उद्योग.

अब अंधानुकरण की प्रवृत्ति का बाजार की शक्तियां खुलकर अपने मुनाफों के विस्तार के लिए इस्तेमाल कर रही हैं.

अंधानुकरण के लिए जरूरी है कि स्टीरियोटाइप प्रस्तुतियों पर जोर दिया जाए. इनमें खर्च कम और मुनाफा ज्यादा होता है और प्रस्तुतियां जल्दी ही समझ में आ जाती हैं. इस तरह की प्रस्तुतियां यथार्थ के निषेध और स्वतंत्र सृजन या मौलिक सृजन के निषेध को व्यक्त करती हैं.

वे ऐसे उन्माद, आनंद और मनोरंजन की सृष्टि करती हैं जो प्रभेदों का सृजन करता है. ध्यान रहे, प्रभेद वहीं पैदा होते हैं जहां भय हो, अंधविश्वास हो या जहां एक-दूसरे को धोखा देकर हराने का प्रयत्न किया जाता है. वहां परस्पर व्यवहार में सहज भाव नहीं होता.

अंधविश्वास मूलतः ऐसी स्वाधीनता की हिमायत करते हैं, जो मनुष्य को पीड़ित करती है. यह संबंधहीन स्वाधीनता है. यह बुनियादी तौर पर नकारात्मक स्वाधीनता है.

अंधविश्वास तरह-तरह के धार्मिक उपकरणों को जमा करने और धार्मिक उपकरणों के माध्यम से अंधविश्वासों से राहत पाने का रास्ता सुझाते हैं.

रवींद्रनाथ टैगोर के शब्दों में, 'मानव जीवन में जहां अभाव है वहीं उपकरण जमा होते हैं...इस अभाव और उपकरण के पक्ष में ईर्ष्या है, द्वेष है, वहां दीवार है, पहरेदार है, वहां व्यक्ति अपना प्रभाव बढ़ाना चाहता है और दूसरों पर आघात करना चाहता है.'

अंधविश्वास, पुनर्जन्म और कर्मफल के सिद्धांत से मुक्ति पाने के लिए जरूरी है कि तर्क और विमर्श के पुराने पैराडाइम को बदलें. पुराने पैराडाइम से जुड़े होने के कारण हम प्रभावी ढंग से अंधविश्वास का विरोध नहीं कर पा रहे हैं. तर्क के पैराडाइम को बदलते ही हम विकल्प की दिशा में बढ़ जाएंगे. पैराडाइम को बदलते ही विचारों में मूलगामी परिवर्तन आने लगेगा.

आम तौर पर हमारे बहुत से बुद्धिजीवी पुराने पैराडाइम को बनाए रखकर तर्कों में परिवर्तन कर लेते हैं.

ध्यान रहे, अंधविश्वास को मात्र तर्क और विवेक से अपदस्थ नहीं किया जा सकता. जब तक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर नया पैराडाइम निर्मित नहीं किया जाता तब तक अंधविश्वास को अपदस्थ करना मुश्किल है.

अंधविश्वास का जबाव तर्क नहीं विज्ञान है. जो लोक तर्क में विश्वास करते हैं वे पैराडाइम बदलते ही असली शक्ल में सामने आ जाते हैं. ध्यान रहे, जब पैराडाइम बदलते हैं तो उसके साथ ही, सारी दुनिया भी बदलने लग जाती है. कहने का तात्पर्य यह है कि पैराडाइम बदलते ही हमारा विश्व दृष्टिकोण बदल जाता है, नए का जन्म होता है, वैज्ञानिक चेतना के विकास की संभावनाएं प्रबल हो जाती हैं. यही वह बिंदु है जिस पर गंभीरता से सोचने की जरूरत है. अंधविश्वास का जबाव तर्क से देंगे तो अंततः पराजय हाथ लगेगी.

यदि पैराडाइम बदलकर विज्ञानसम्मत चेतना से इसका जबाव देंगे, तो अंधविश्वास को अपदस्थ कर पाएंगे.

हमारे रैनेसां 'नवजागरण' के चिंतकों ने अंधविश्वास का प्रत्युत्तर तर्क से देने की चेष्टा की और इसका अंततः परिणाम यह निकला कि हम आज अंधविश्वास से संघर्ष में बहुत पीछे चले गए हैं. तर्क को आज अंधविश्वास ने आत्मसात कर लिया है. अंधविश्वास का तर्क से बैर नहीं है उसकी लड़ाई तो विज्ञानसम्मत चेतना के साथ है.

अंधविश्वास के कारण बौद्धिक अधकचरापन पैदा होता है.

इन दिनों विज्ञान और विज्ञानसम्मत चेतना के बजाय, मिथकीय चेतना पर जोर दिया जा रहा है.

आज विज्ञान को सत्य की खोज के काम से हटाकर, व्यावहारिक उपयोग, उद्योग और युद्ध के साजो-सामान के निर्माण में लगा दिया गया है. यहां तक कि धर्म और विज्ञान में सहसंबंध स्थापित करने की कोशिशें चल रही हैं. अब विज्ञान को पूंजीवाद ने महज एक चिंतन का रूप या शुद्ध विज्ञान बना दिया है या उपयोगी रूप तक सीमित कर दिया है. एक जमाना था विज्ञान पर विश्वास था, किंतु एक अर्से के बाद विज्ञान के प्रति संशय का भाव पैदा हुआ. शुरू में विज्ञान के प्रति प्रशंसाभाव था. बाद में मोहभंग हुआ और विज्ञान के प्रति संशय भाव पैदा हुआ. आज पूंजीवादी वैज्ञानिक निराश और हताश हैं कि क्या करें? वे पीछे मुड़ नहीं सकते. आगे किस तरह बढ़ना है? बढ़ गए तो कहां पहुचेंगे? आज विज्ञान के पूंजीवादी पक्षधर परेशान हैं कि विज्ञान के इतने विराट जुलूस को कहां ले जाएं?

इसके कारण विज्ञान और विज्ञानसम्मत चेतना के प्रति अविश्वास और गहरा हुआ है। आम लोगों से लेकर बुध्दिजीवियों तक संशयवाद बढ़ा है. इसके कारण पुनः एक सिरे से अंधविश्वास और आध्यात्मिकता की बाढ़ आ गई है. कुछ लोग मानव स्वभाव की उन्नतिशीलता को लेकर कुछ भी होता न देखकर हताशा में डूबे जा रहे हैं और विज्ञान को तिलांजलि दे रहे हैं. कुछ ऐसे भी लोग हैं जो पहले से ही यह मानकर चल रहे हैं कि विज्ञान की सामाजिक परिणतियों पर कोई भी विचार-विमर्श हानिकर होने को बाध्य है.

कुछ ऐसे लोग भी हैं जो विज्ञान के व्यावहारिक उपयोग के अलावा और किसी भूमिका पर सोचने के लिए तैयार नहीं हैं. कुछ लोगों के लिए विज्ञान का विनाश के अलावा और किसी काम में उपयोग संभव नहीं है.

कुछ के लिए यह संपत्ति और मुनाफों के अंबार खड़ा कर देने का साधन मात्रा है.

यह सही है कि पूंजीवाद समाजों में विज्ञान का सही उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा रहा. यह भी सच है कि वैज्ञानिक वेतनभोगी कर्मचारी होकर रह गए हैं.

आज वैज्ञानिक या तो किसी विश्वविद्यालय में काम करता है या किसी उद्योग या संस्था में काम करता है. निजी साधनों से वैज्ञानिक अनुसंधान करने वाले वैज्ञानिक अब दुर्लभ हो गए हैं. जाहिरा तौर पर वैज्ञानिक जहां काम करता है वहां के हितों की उसे सबसे पहले पूर्ति करनी होगी. यही वह बिंदु है जहां पर हमें विज्ञान की सामाजिक भूमिका पर गंभीरता से विचार करना चाहिए. यदि विज्ञान बंदी है और वैज्ञानिक खरीदा जा चुका है तब अंधविश्वास के खिलाफ विज्ञान और विज्ञानसम्मत चेतना की भूमिका शून्य के बराबर होगी.

पृष्ठ 32 का शेष **..क्या धर्म की वजह से..**

धार्मिक पुस्तकों और धार्मिक ग्रंथों के प्रकाश में भगवान ने एक ऐसा सुरक्षा कवच इन दुष्कर्मियों को दे दिया है कि उनका कुछ बिगड़ने वाला नहीं है, वह जो चाहे करें सब मान्य हैं और माफ है ,ऐसी उनकी मान्यता हो गई है।

अब हमारा सबसे बड़ा काम यही है और जिम्मेदारी यही है कि जब तक हम अपने आस पड़ोस में और अपने संगठनों में, इन धर्मो और भगवानों के बारे में आचार विचार नहीं करते, उनके बारे में पूरी तरह से सोच कर कोई प्लान नहीं बनाते, तब तक यह भगवान का षड्यंत्र चलता रहेगा और लोग दुष्कर्म और पाप कर्म करते रहेंगे। अतः यह हमारी जिम्मेदारी है और सबसे बड़ी जिम्मेदारी है कि हम वैज्ञानिकरण की मुहिम को आगे बढ़ाएं, वैज्ञानिक संस्कृति की नज़र और नज़रिए को आगे बढ़ाएं, अपने बच्चों को वैज्ञानिक ज्ञान दें, उनसे चर्चा करें, उनसे बात करें और धर्म और भगवान के बारे में उन्हें बताएं कि सारी मक्कारियां भगवान के नाम पर की जाती हैं। अतः उनसे किसी भी कीमत पर बचा जाए और भगवान के और धर्म के इस विरोधी आवरण को उतार फेंके और आदमी, समाज और दुनिया में ज्ञान का प्रकाश फैलाएं।

बाबा बनकर 7 लाख ठगने वाला आरोपी गिरफ्तार

कुरुक्षेत्रः वर्ष 2017 में गांव सारसा में बने नाथों के अलग मंदिर में एक व्यक्ति द्वारा अपने आपको नाथ पंथ से बता कर आसन (पूजा) करने के बहाने 2 व्यक्तियों से बच्चों को रेलवे में नौकरी दिलवाने का झांसा देकर 5 लाख रुपये व तीसरे व्यक्ति से डेरे की जमीन का अदालत में केस चलने का झांसा देकर 2 लाख रुपये धोखधड़ी से हड़पने वाले आरोपी को पिहोवा पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के अनुसार 20 जुलाई 2019 को पुलिस में शिकायत देते हुए धर्म सिंह पुत्र मंगल, भीम सिंह पुत्र पुन्नाराम, हरिकेश पुत्र जुगलाल निवासी गांव सारसा ने एक लिखित दरखास्त में कहा था कि गांव में अलग से नाथों का मंदिर प्राचीनकाल से बना हुआ है। वर्ष 2017 में ज्ञाननाथ नामक बाबा आयाजिसने उन्हें अपने आपको नाथ पंथ से बताया था। यह भी कहा था कि वह कुछ समय के लिए इस मंदिर में पूजा करना चाहता है। बाबा समझकर विश्वास करते हुए पूजा पाठ करने के लिए कह दिया। ज्ञाननाथ ने कुछ माह बाद कहा कि यदि बच्चों को रेल विभाग में नौकर लगवानी हो तो बताएं। उसकी रेल विभाग में ऊपर तक पहुंच है। जिस पर तीनों सहमत हो गए। धर्म सिंह अपने पुत्र को व भीम सिंह अपने जवाई को रेलवे में नौकरी लगवाना चाहता था। जिस पर ज्ञाननाथ ने कहा कि 5-5 लाख रुपये देने होंगे। भीम सिंह ने आधा एकड़ जमीन गिरवी रखकर 3 लाख रुपये, भीम सिंह ने पिहोवा के आढ़ती से 2 लाख रुपये का प्रबंध कर फरवरी 2018 में दिए। रुपये लेने के पश्चात बाबा बने ज्ञाननाथ ने कहा कि जल्द ही बच्चों को रेलवे की नौकरी लगवा दिया जाएगा। इस दौरान बच्चों के प्रमाण पत्र भी लिए । भीम सिंह के जवाई आनंद का पेपर चंडीगढ़ में दिलवाया व धर्मसिंह के पुत्र का पेपर लुधियाना में दिलवाया। लेकिन कई माह बीत जाने के बाद भी नौकरी पर नहीं लगवाया। इसी दौरान हरिकेश पुत्र जुगलाल भी बाबा ज्ञाननाथ के पास आता था। बाबा ज्ञाननाथ ने हरिकेश पर प्रभाव डालते हुए कहा कि गांव प्रेमपुरा में हमारे डेरे की जमीन है जिस पर पिहोवा की अदालत में केस चल रहा है। इस एवज में उसे 2 लाख रुपये जमा करवाने हैं। इन रुपयों को 1 माह बाद वापस कर देगा। हरिकेश ने भी बाबा पर भरोसा करते हुए मई 2019 में 2 लाख रुपये दे दिए थे। उसके बाद बाबा ज्ञाननाथ फरार हो गया। बाबा बने ज्ञाननाथ ने धोखाधड़ी कर उनके 7 लाख रुपये हड़प लिए हैं। पुलिस ने इस संदर्भ में केस दर्ज कर लिया है।

-अमर उजालाः 18-6-2020

संतों ने झांसा देकर व्यक्ति से 80 हजार लूटे

कैथल। तितरम मोड़ पर एक व्यक्ति से तीन संतों ने झांसा देकर 80 हजार रुपये ठग लिए और फरार हो गए। पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर केस दर्ज कर लिया है।

पुलिस को दी शिकायत में गांव कसान निवासी बलवान ने बताया कि वह किसी काम से कैथल के लिए आ रहा था कि तितरम मोड़ पर एक कार में सवार तीन संतों ने उससे चंडीगढ़ का रास्ता पूछा। उसने उन्हें रास्ता बता दिया। इसी बीच एक संत ने कहा कि उसके चेहरे से दिख रहा है कि उसके पास मोह माया आने वाली है। जिस पर वह उनकी बातों में आ गया। पहले बाबा ने पांच रुपये मांगे, तो उसने कहा कि पांच तो नहीं दस रुपये हैं। इसके बाद उसने बाबा को दस रुपये दिए तो बाबा ने फूंक मार कर दस रुपये गायब कर दिए।

बाबा इसके बाद बोला कि आपके पास तो और भी रुपये हैं। जिस पर उसने कहा कि हां हैं तो उसके अस्सी हजार रुपये फूंक मार का गायब कर दिए और तीनों बाबा कार में सवार होकर फरार हो गए। उसे बाद में अपने साथ हुई ठग्गी का एहसास हुआ तो पुलिस को सूचित किया। पुलिस ने केस दर्ज कर लिया हैं एसएचओ राम कुमार ने कहा कि पुलिस जांच कर रही है। मामले की गहनता से जांच की जा रही है। ये पता लगाने का प्रयास किया जा रहा हैं कि आरोपी जिले के रहने वालें या बाहरी क्षेत्र के हैं।

अंधविश्वास के चलते

अंधविश्वास ने की सारी हदें पार

बच्चे नहीं होने पर पत्नी रातभर बाबा के हवाले

महानगर सववंाददाता

जयपुर। आज के तकनीकी युग में भी अंधविश्वास पूरी तरह लोगों पर हावी है। ऐसा ही एक मामला प्रतापनगर थाना इलाके में सामने आया है जहां पति ने कई सालों तक बच्चे नहीं होने से परेशान होकर एक बाबा पर इतनी अंधभक्ति दिखाई कि अपनी पत्नी को एक रात के लिए बाबा को सौंप दिया। बाबा ने महिला के साथ दुष्कर्म कर दिया। थाना प्रभारी मोहम्मद इस्लाम ने बताया कि महिला ने रिपोर्ट दी है कि हल्दीघाटी मार्ग पर एक मंदिर है, जहां नारायणदास नामक बाबा रहता है। उससे कुछ ही दूरी पर एक मंदिर पर उसका पति रहता है। मंगलवार की रात उसका पति बाबा के पास मुझे लेकर पहुंचा और कहा कि तुम एक घंटा बाबा के पास रहो, मैं अभी आता हूं। पति रातभर नहीं आया। बाबा ने इसी रात महिला के साथ दुष्कर्म कर दिया। **पति और बाबा के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज**

पति महिला को लेने के लिए सुबह बाबा की कुटिया में पहुंचा तो पत्नी ने उसे बताया कि बाबा ने दुष्कर्म कर दिया हैं पति ने उसकी एक भी नहीं सुनी। इस पर महिला ने पति और बाबा के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करा दी। पुलिस ने बाबा के खिलाफ दुष्कर्म और पति के लिखाफ धारा 120 बी में मामला दर्ज किया है।

तांत्रिक के बहकावे में आकर कलियुगी पिता ने मौत के घाट उतारे अपने 5 बच्चे

कैथल का तांत्रिक खजान सिंह गिरफ्तार

जींद : 24 जुलाई- (जसमेर): सफीदों के डिडवाड़ा गांव में एक कलियुगी बाप बच्चे पैदा करता रहा और खुद ही उनको मौत के घाट उतारता चला गया। उसने अपनी 2 बेटियों को नहीं बल्कि 5 औलादें मौत के घाट उतार दीं। शुक्रवार को सफीदों पुलिस ने इस कलियुगी बाप जुमादीन को गिरफ्तार कर लिया। सफीदों पुलिस उससे पूछताछ कर रही है। पूछताछ पश्चात यह खुलासा होगा कि जुमाद्दीन ने गुरबत (गरीबी) के कारण अपने बच्चों के खून से अपने हाथ रंगे या फिर किसी तांत्रिक के बहकावे में आकर उसने इतना बड़ा पाप किया। कैथल के तांत्रिक खजान सिंह, को पूछताछ के लिए सफीदों पुलिस ने हिरासत में लिया है। डिडवाड़ा गांव के जुमाद्दीन की दो बेटिया 15 जुलाई को घर से गायब हो गई थीं। खुद जुमादीन ने सफीदों पुलिस में अपनी 2 नाबालिग बच्चियों मुस्कान और निशा के गायब होने की सूचना दी थी। बाद में दोनों बच्चियों के शव साहनपुर गांव के पास हांसी बुटाना लिंक नहर में मिले थे। जुमादीन ने पंचायत में खुद यह बात कबूली कि उसने ही अपनी दोनों बच्चियों को गला दबाकर हत्या की और शव नहर में फैंक दिए थे। उसने यह भी कहा कि वह इससे पहले अपने एक बेटे और 2 बेटियों को मार चुका है। इसके बाद सफीदों पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया।

सफीदों के ए.एस.पी. अजीत सिंह शेखावत अनुसार जुमादीन को अपनी ही बच्चियों की हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। भले ही जुमादीन यह कह रहा है कि वह गरीब होने के कारण अपनी बच्चियों का बोझ नहीं उठा सका।...।

पंजाब केसरी, चण्डीगढ़ 25 जुलाई, 2020.

खोज खबर

आकाश गंगा का सबसे तेज तारा, मंदाकनी के केंद्र की 12 साल में करता है परिक्रमा

सूर्य को हमारी आकाश गंगा के केंद्र का एक चक्कर लगाने में 23 करोड़ साल लग जाते हैं।

बर्लिनः वैज्ञानिकों ने एक नए चौंकाने वाली खोज में आकाश गंगा के केंद्र की सबसे तेजी से परिक्रमा करनेवाले तारों को खोज निकाला है। स्कवीजर नामक ये तारे हमारी मंदाकिनी के केंद्र में स्थित ब्लैक होल सैगिटेरियस के काफी करीब हैं। इनमें सबसे तेज एस 4714 नामक मात्र 12 साल में ही केंद्र की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है। जबकि, सूर्य को एक चक्कर लगाने में 23 करोड़ साल लगते हैं।

वैज्ञानिकों ने अब तक पांच तारों को ढूंढा है। एस 4714 नामक तारे को खगोलविद फ्लोरियन एकर की टीम ने ढूंढा है। खास बात है कि यह ब्लैक होल सैगिटेरियस की गुरुत्वाकर्षण से बंधे हैं और संभवतः उसी की ऊर्जा से इतनी तेज गति से चक्कर लगा रहे हैं। फ्लोरियन की टीम के अनुसार भौतिकी के सिद्धांतों को चुनौती दे रहा यह तारा अपनी तेज गति के बावजूद दैत्याकार ब्लैक होल के पंजे से बाहर नहीं निकल पाता और एक दिन इसी में समा जाएगा। एजेंसी।

सूर्य से एक करोड़ गुणा बड़ा है सैगिटेरियस-ए ब्लैक होल की खोज 1964 में हुई थी। इसे हम अंतरिक्ष में बनी गहरी खाई भी कह सकते हैं। हमारी आकशगंगा के बीचो बीच मौजूद 'सैगिटेरियस ए' हमारे सूर्य से करीब 1 करोड़ गुना बड़ा है। ब्लैक होल रोशनी को भी अपने अंदर जज़्ब कर लेता है।

अंधविश्वास के चलते

बीमारी ठीक करने के बहाने मां और मामी ने नाबालिग बेटी को तांत्रिक को सौंपा

तांत्रिक ने रात 12 बजे दीया जलाने के बहाने लड़की से किया दुष्कर्म

भास्कर न्यूज , यमुनानगर

अंधविश्वास में माँ 17 साल की बेटी को एक तांत्रिक को सौंपती रही। तांत्रिक लड़की का यौन शोषण करता रहा। यौन शोषण की पूरी बात बेटी मां को बताती थी, लेकिन इसके बाद भी मां को लगता रहा कि उसकी बेटी के साथ कुछ गलत नहीं हो रहा। लड़की ने एक दिन अपने पिता को यह बात बताई तो उन्होंने पुलिस को शिकायत देने की ठानी। बेटी ने अपनी मां, मामी और तांत्रिक के खिलाफ पुलिस को शिकायत दी। पुलिस ने केस दर्ज किया है। 17 साल की लड़की ने शिकायत दी है कि उसके पेटी में दर्द रहता था। इस पर उसकी मां रादौर सरकारी अस्पताल के सामने अल्ट्रासाउंड केंद्र पर उसका अल्ट्रासाउंड कराने गई। डॉक्टर ने अल्ट्रासाउंड कर बताया कि रसौली है और पथरी है। उसकी वजह से दर्द रहता है। इस पर उसकी मां ने बताया कि उसके मायके के गांव का निवासी सतीश अंधेरिया बाग धर्मशाला रादौर में दवाई देने आता है। वह माता का भक्त भी है। वह एक दिन वहां गई तो सतीश ने वहां उसका इलाज करने के बहाने रेप किया। उसने उसे धमकी भी दी थी। इसके कुछ दिन बाद उसकी मां ने उसे नाना के घर भेज दिया। सतीश भी वहीं का रहने वाला है। तब उसने कहा था कि रात 12 बजे दीया जलाने से उसकी बीमारी ठीक हो जाएगी। उसकी मां और मामी उसे रात 12 बजे उठाकर सतीश के साथ भेज देती थी। सतीश सुनसान जगह पर ले जाकर उसके साथ रेप करता था।

जादू टोने के सन्देह में 3 महिलाओं की हत्या शर्मनाक

डायन-टोनही के शक में 3 महिलाओं की हत्या हुई है जिनमें से एक मामला छत्तीसगढ़ के रायगढ़ का है और दो मामले झारखंड के हैं डायन टोनही के सन्देह में निर्दोष महिलाओं की हत्याएं सभ्य समाज के लिए शर्मनाक हैं

रायगढ़ के पास थाना पूंजीपथरा के बिलासखार में पत्नी की तबियत खराब रहने पर जादू टोने की शंका में मीरा बाई (50) की मुदगल (लकड़ी के गदा) से सिर में मार कर हत्या कर दी गयी तथा घटना के बाद शव को जला दिया। घटना की रिपोर्ट मृतका के भाई किर्तन राठिया निवासी ग्राम पानीखेत द्वारा सात जुलाई को दर्ज कराया गया है। राजू की पत्नी की तबीयत खराब रहती थी तो राजू शंका करता था कि मीराबाई जादू टोना करती है। छह जुलाई को राजू की पत्नी की तबीयत खराब होने पर राजू गुस्से में आकर घर में रखें लकड़ी का मुगदल (गदा) से मां के सिर में ताबड़तोड़ वार कर हत्या कर दिया। वहीं झारखंड के साहिबगंज जिले के राधानगर थाना क्षेत्र की मोहनपुर पंचायत के मेंहदीपुर गांव की मतलू चौराई नामक एक 60 वर्षीय महिला की हत्या डायन बताकर कर दी गई। जिस व्यक्ति ने हत्या की उसे यह शक था कि इसने उसके बेटे को जादू टोना कर मार दिया है। महिला की हत्या गांव के सकल टुडू ने मंगलवार (7 जुलाई 2020) को गला काट कर की और धड़ से कटे सिर को लेकर बुधवार (आठ जुलाई) सुबह वह थाने पहुंच गया। इस दृश्य से सभी अवाक रह गए। बताया जाता है कि आरोपी का 25 वर्षीय बेटा साधिन टुडू बीमार था। उसे सर्दी खांसी थी और सोमवार (6 जुलाई 2020) की शाम उसकी मौत हो गई। उसकी मौत के बाद गांव में यह अफवाह फैल गई कि जादू टोना कर मतलू चौराई ने उसकी जान ले ली। इसके बाद साधिन का पिता अपने बेटे का अंतिम संस्कार करने के बजाय महिला की हत्या तय करने का ठान लिया। उसने मंगलवार (सात जुलाई) की रात मतलू की गर्दन काट कर हत्या कर दी और कट हुआ सिर लेकर अगली सुबह राधानगर थाना पहुंच गया। इससे पहले हाल में ही रांची जिले के लापुंग में दो भाइयों ने मिल कर अपनी चाची की डायन होने के संदेह में हत्या कर दी थी। रांची जिले के लापुंग थाना क्षेत्र के चालगी केवट टोली की रहने वाली 56 वर्षीया फुलमरी होनो की हत्या शनिवार, चार जुलाई 2020 को उनके दो भतीजों ने धारदार हथियार से कर दी

अंधविश्वास में पड़ कर की गई ये हत्याएं अत्यंत शर्मनाक व दुःखद हैं। जादू टोने जैसे मान्यताओं का कोई अस्तित्व नही है। साधारण लोगों को इतना ज्ञान नहीं है कि कोई महिला डायन टोनही नहीं होती।

-डॉ. दिनेश मिश्र
अध्यक्ष अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति

पेज 23 का शेष....**जीवन पर मंडराते खतरे**

लेती हैं। कुछ वर्ष पहले भारत के पूर्व दक्षिणी भाग में आई इन लहरों से 1 लाख 90 हजार लोग अपनी जान गंवा बैठे थे। आदमी और जानवर तिनकों की तरह समुद्र की लहरों में फसकर समुद्र में बह गए।

अन्य खतरे आंधी तूफान, अति वर्षा, बाढ़ आदि हैं। यद्यपि इन खतरों की आजकल पूर्व चेतावनी दी जाती है लेकिन फिर भी ये मानव-जीवन के लिए खतरे बने हुए है। पूर्व सूचना के कारण सावधानी बरत कर कुछ सीमा तक बचाव किया भी जाता है; परन्तु पूर्ण रूप से बचाव कर पाना सम्भव नहीं होता जैसे फसलों में पानी भर जाना, खेतों का कटाव होकर बह जाना। फिर भी मानव इस कोशिश में लगा है कि इन खतरों से होने वाले नुकसान को कम से कम किया जा सके ताकि मानव समाज अपने आपको सुरक्षित महसूस कर सके।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आज का मानव अनेक खतरों से घिरा हुआ है। ये खतरे उसकी उन्नति में तो बाधक हैं ही, साथ में उसके अस्तित्व के लिए भी खतरे की घंटी हैं। अतः मानव समाज व वर्तमान सरकारों को चाहिए कि वे इन खतरों की भयानकता को देखते हुए इनसे बचने का हर सम्भव प्रयास करे। मानव मानव की तरह व्यवहार करे। बुराईयों से बचें। दूसरों के लिए कल्याणकारी बने, तभी जाकर वह इन खतरों से बच सकता है औ एक आदर्श समाज की स्थापना हो सकती है। शिक्षा, वैज्ञानिक सोच अपनाकर ही इस लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

ooo

धार्मिक मेले पर जाने का प्रतिफल

-बलवंत सिंह, लेक्चरार

भारतवर्ष को मेलों एवं त्यौहारों का देश माना जाता हैं यहां पर अधिकतर त्यौहार मौसम के साथ संबंध रखते हैं तथा सांस्कृतिक रूप से इनका बहुत महत्व है। यह बात अलग है कि पुजारी वर्ग द्वारा सभी त्यौहारों एवं मेलों पर धर्म का मुलम्मा चढ़ा कर उन्हें धार्मिक रंगत प्रदान करा दी गई है। यहां की जनता इन त्यौहारों एवं मेलों में इनका सांस्कृतिक महत्व समझने के बजाए इन की धार्मिक पहचान के कारण सम्मिलित होती है। पुरोहित वर्ग द्वारा इन आयोजनों के दौरान उन सरोवरों में स्नान करने के अनेक पुण्य गिनाए जाते हैं। सदियों से धर्मो के जंजाल में फंसे हुए साधारण लोगों को इन मेलों में शामिल होकर सरोवरों में स्नान करना एवं पुजारियों को दान देना पुण्य कमाने का एवं जन्म कर्मसे मुक्ति का मार्ग दिखाई देता है। इसीलिए साधारण लोग बहुत सी परेशानियों को झेलते हुए भी इन मेलों में शामिल होते हैं।

कुछ मेले निरोल धार्मिक महत्व के होते हैं। पुजारी वर्ग द्वारा इन के महत्व के बारे में बहुत सी दंत कथाएं फैलाई गई होती हैं। इन्ही धार्मिक मेलों में से एक मेला फल्गु तीर्थ का मेला भी है। फल्गु तीर्थ हरियाणा के जिला कैथल के तहसील पूण्डरी के पास गांव फरल में है। फल्गु तीर्थ पर श्राद्धों के दौरान आने वाली सोमावती अमावस्या पर एक विशाल मेले का आयोजन किया जाता है। इस के बारे में दंत कथा प्रचलित की गई है कि 'अपने पित्तरों की तृप्ति और श्रेष्ठ फल के लिए मनुष्य अपने पित्तरों के पिंड श्राद्ध कर्म को संपन्न करता है।' धार्मिक ग्रंथों के अनुसार 'इस तीर्थ पर सोमवार की अमावस्या के दिन स्नान एवं तर्पण करने से मनुष्य अग्निष्टोम तथा अतिरात्र यज्ञों के करने से कहीं अधिक श्रेष्ठतर फल को प्राप्त करता है।'

पुजारी वर्ग के द्वारा प्रचारित ऐसी मनमोहक बातों के प्रभाव में आस्थावान लोग अपने पित्तरों की तृप्ति एवं श्रेष्ठफल के लोभ में पित्तरों के पिण्डदान और तर्पण के लिए ऐसे तीर्थस्थानों पर जाते हैं। ऐसी ही मानसिकता के चलते सुखबीर अपनी पत्नी पुष्पा को लेकर एक बार फल्गु तीर्थ के मेले में गया था। अपने पित्तरों के पिण्डदान इत्यादि अनुष्ठान करवाने के पश्चात् अपने छोटे से बच्चे को गोद में उठाए मेले की भीड़ में घूमने फिरने के पश्चात् पुष्पा थक कर एक स्थान पर बैठ गई। वहीं पर बैठे-बैठे वह गुमसुम सी हो गई। जब सुखबीर ने उसे उठ कर चलने के लिए कहा तो वह वहीं पर लम्बी लेट गई और लम्बे-लम्बे सांस लेने लग गई, फिर उसे लम्बी हिचकी आने लग गई। काफी समय तक पुष्पा वहीं पर पड़ी रही। कुछ समय के पश्चात् जब सुखबीर ने उसे फिर से उठने के लिए कहा तो वह अत्यन्त क्रोधित हो उठी और सुखबीर को एक दो थप्पड़ जड़ दिए। आश्चर्यजनक तरीके से उसके चेहरे के हावभाव और उसका व्यवहार एकदम बदल चुका था। ऐसा लगता था जैसे वह पुष्पा नहीं कोई और ही हो। लोगों के सामने अपनी पत्नी द्वारा किये जा रहे ऐसे व्यवहार से सुखबीर बहुत परेशान हो चला था। इतने में पुष्पा के मायके वाले गांव का लड़का सुरेन्द्र वहां पर आ गया। उसने दोनों में बीच बचाव करवाया। अब जब उन दोनों ने पुष्पा को पकड़ कर उठाया और घर चलने के लिए कहा तो वह उनके साथ चुपचाप चल पड़ी। सुरेन्द्र उन्हें बस अड्डे तक छोड़ आया और वे दोनों बस पर चढ़ कर वापिस अपने गांव आ गये।

घर में आकर उसके बाद पुष्पा परेशान रहने लगी। कभी उसे लम्बी-लम्बी हिचकी लग जाती, कभी वह जोर-जोर से लम्बे-लम्बे सांस लेने लग जाती। कभी वह गुमसुम हो कर चारपाई पर पड़ी रहने लगी। उसकी ऐसी हालत देख कर घर वाले गांव के ही एक बाबा को उसका झाड़ा करवाने के लिए बुला लिया। वह बाबा अपने मन ही मन

में कोई मन्त्र बुदबुदाता रहा तथा अपना चिमटा उस के सिर पर लगाता रहा। बाबा के कुछ देर तक ऐसा करने पर पूुष्पा का व्यवहार अचानक बदल गया तथा वह सभी को ऊंची ऊंची आवाज में गालियां देने लग गई। उसने बाबा का वह चिमटा उससे छीन कर बाहर गली में फैंक दिया। उस का यह रूप देख कर बाबा भी डर गया और पुप्पा पर किसी भयानक भूत-प्रेत का साया कह कर चुपके से वहा से खिसक गया। उस बाबा द्वारा उस पर भूत-प्रेत का साया बता देने के बाद पुष्पा की हालत और अधिक खराब होने लग गई। अपने पति के सामने आने पर वह अत्यधिक क्रोधित हो उठती और उसके हाथ में जो भी चीज आ जाती उसे लेकर वह अपने पति को मारने की कोशिश करती। जब घर के सभी सदस्य उसे पकड़ कर उस पर नियंत्रण करते तो वह एकदम से बेसुध होकर चारपाई गिर पड़ती और घंटों तक बेहोश ही पड़ी रहती।

उसकी ऐसी हालत से परेशान होकर घर वाले उसे लेकर अनेकों बाबाओं, ओझाओं, तांत्रिकों इत्यादि की शरण में गए। उन्होंने उनकी अनेकों चौकियां भरीं। उनकी दान-दक्षिणा के रूप में हजारों रूपये बर्बाद किये परंतु पुष्पा की हालत और अधिक बिगड़ती चली जा रही थी। अन्त में उनके एक रिश्तेदार ने पुष्पा की हालत देख कर उन्हें मेरे पास रविवार को लगने वाले मनोरोग परमर्श केन्द्र में भेज दिया। मैंने पति-पत्नी दोनों को अपने पास बिठा कर उनसे सारे मामले की जानकारी प्राप्त की। सुखबीर द्वारा फल्गू तीर्थ के मेले से हुई शरूआत से लेकर वर्तमान हालात तक की जानकारी देते समय पुष्पा पर कोई असर सा होना शुरू हो गया। पहले वह धीरे-धीरे तथा बाद में जोर-जोर से सिर हिलाने लग गई। मैंने एकदम सख्ती के साथ शान्त रहने का निर्देश दिया तो वह शांत हो कर बैठ गई। फिर मैंने सुखबीर को बाहर बैठने का निर्देश देकर पुष्पा से मनोवैज्ञानिक ढंग से बातचीत करनी शुरू की। मेरे द्वारा बार-बार उसे अपने मन की व्यथा को बताने के निर्देश देने पर उसने अपने मन की परेशानी के जो कारण बताए जो निम्नानुसार थेः

अपनी शादी से पूर्व स्कूल में ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ते समय अपने गांव के एक लड़के सुरेंद्र के साथ उसके प्रेम संबंध कायम हो चुके थे। मौका मिलने पर वे दोनों स्कूल में अथवा गांव में आपस में मिल कर पढ़ाई के बहाने आपस में प्यार भरी बातें करते रहते थे। संयोगवश एक दिन स्कूल में छुट्टी थी और पुष्पा के परिवार के सदस्य किसी जरूरी काम के लिए शहर में गये हुए थे। केवल पुष्पा एवं उसकी बूढ़ी दादी ही घर में रह गये थे। इसी दौरान सुरेन्द्र उनके घर में आ गया। थोड़ी बहुत तबियत खराब होने के के कारण पुष्पा की बूढ़ी दादी एक कमरे में बिस्तर में पड़ी हुई थी। पुष्पा और सुरेन्द्र पढ़ाई का बहाना बना कर दूसरे कमरे में प्रेमालाप में मग्न हो गये। प्यार भरी बातें करते-करते उन्होंने मर्यादा की सभी सीमाएं लांघ दी और आपस में शारीरिक संबंध कायम कर लिये। आनन्द विभोर हो कर कुछ समय के पश्चात् सुरेन्द्र अपने घर चला गया और पुष्पा अपने घर का काम करने में व्यस्त हो गई। उसके पश्चात् दोनों में शारीरिक आकर्षण और ज्यादा बढ़ता चला गया। अब उन्हें जब भी मौका मिलता वे आपस में शारीरिक संबंध बना लेते थे। ऐसे में दोनों अपनी पढ़ाई में पिछड़ते चले गये। पुष्पा तो जैसे कैसे बारहवीं में उत्तीर्ण हो गई परंतु सुरेन्द्र अपनी कक्षा में फेल हो गया।

अब सुरेन्द्र के घर वालों ने उसका स्कूल जाना बंद करवा दिया और अपने घर वालों की सलाह पर उसने ड्राइविंग सीख कर अपना ड्राइविंग लाईसेंस बनवा लिया। कुछ समय तक तो उसने शहर में किसी की टैक्सी पर ड्राइविंग की और फिर अपनी कार खरीद ली। जब वह टैक्सी ड्राइवरों वाले सभी दांव-पेंच सीख गया तो उसने अपने इलाके में ड्राइविंग करने के बजाये दिल्ली जाकर टैक्सी चलाना ज्यादा मुनासिब समझा। दिल्ली जाकर उसकी मेहनत रंग लाई और उसने एक टैक्सी और खरीद ली। इस दौरान पुष्पा को वह लगभग भूल ही चुका था। हां, कभी कभार उनकी फोन पर आपस में बातचीत हो जाया करती थी।

समय बीतता चला गया और पूुष्पा के परिवार वालों ने एक अच्छा वर-घर देख के पुष्पा की शादी सुखबीर के साथ कर दी। ससुराल में आकर वह अपनी जिम्मेवारियों में व्यस्त हो गई। चेतन तौर पर वह अपने पति से प्यार तो करती थी परंतु अवचेतन तौर पर अपने पूर्व प्रेमी सुरेन्द्र के प्यार को न भुला पाई। इसी दौरान उसके दो बच्चे

भी हो गये। वैसे तो वे पति-पत्नी आपस में तालमेल बना कर रहते थे परंतु पुष्पा मन ही मन में खालीपन सा महसूस करती थी। अब जब वे मेले में अपने पित्तरों का पिण्डदान करवाने के पश्चात् मेले की भीड़ में तथा गर्मी में घूम फिरकर पूरी तरह से थक चुके थे तो एक स्थान पर थोड़ी से छाया को देख कर वह अपने बच्चे को गोद में लेकर बैठ गई। वहां बैठे हुए ही उसे लगा जैसे कि सुरेन्द्र उसके सामने से गुजरा है। थकी हुई होने के कारण उसमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह भीड़ में चल कर सुरेन्द्र से मिल सके, साथ ही उसे अपने पति के पास होने का भी अहसास था। अतः वह वहीं पर बैठकर मन ही मन सुरेन्द्र के दोबारा वहां आने का इंतजार करने लगी। काफी समय तक बैठे रहने के कारण सुखबीर अब उसे उठ कर चलने के लिए कहने लगा। परंतु वह बहाना बना कर अभी कुछ देर और सुरेन्द्र के आने का इंतजार करना चाह रही थी। जब बार-बार कहने पर भी वह नहीं उठी तो सुखबीर ने थोड़ा सख्ती से काम लेना उचित समझा। उसने उसे बाजू से पकड़ कर उठाने की कोशिश की तथा साथ उसे कुछ कड़वे बोल बोल दिये। पहले तो पुष्पा वहीं जमीन पर लेट गई और जब सुखबीर ने उसे फिर से पकड़ कर उठाना चाहा तो वह पूरी तरह से बिफर पड़ी और सुखबीर पर टूट पड़ी तथा उसे थप्पड़ भी लगा दिये। इसी दौरान सुरेन्द्र भी संयोगवश वहां पर आगया और उसने पुष्पा एवं सुखबीर को पहचान लिया। उसने बीच बचाव कर के दोनों शांत करवाया। सुरेन्द्र को देखने भर से पुष्पा के प्यासे मन की प्रेम-प्यास शान्त हो गई और वह चुपचाप उठ कर बैठ गई। सुरेन्द्र के कहने पर वह चुपचाप उनके साथ बस अड्डे की ओर चल पड़ी। बस में बैठने तक वह सुरेन्द्र के साथ सुख-दुख की बातें करती रही। इस दौरान सुखबीर लाईन में लग कर अपनी टिकटें लेकर आ गया और वे बस पर चढ़ कर वापिस घर आ गये। घर में आ कर पुष्पा सुरेन्द्र के साथ बिताए हुए क्षणों के बारे में चुपचार सोचती रहती। परिवार वाले जब उसके साथ बातचीत करने की कोशिश करते अथवा उससे टोका-टाकी करते तो वह लम्बी आह भर कर चुपचाप अपने गृह-कार्य में लग जाती। अंधविश्वासी होने के कारण परिवार वालों ने जब उसकी हालत से दुखी होकर गांव के एक बाबा को उसका झाड़ा करवाने के लिए बुला लिया तो पुष्पा मन ही मन परेशान हो उठी। पुष्पा भी पूर्णतः अंधविश्वासी थी, अतः बाबा द्वारा चिमटा उसके सिर लगाने पर उसके मन भय पैदा हो गया कि कहीं वह बाबा उसके मन की सच्चाई को जान न ले। उसके मन में अंधविश्वास था कि बाबा के चिमटे में कोई जादुई शक्ति हो सकती हैं अतः वह उसके चिमटे को अपने सिर पर लगवाना नहीं चाहती थी। इसीलिए वह क्रोधित हो उठी तथा वह उस बाबा को गालियां देने लग गई और उसके चिमटे को छीन कर बाहर गली में फैंक दिया। बाबा द्वारा पुष्पा पर किसी भयानक भूत-प्रेत का साया बताने पर उसके मन को काल्पनिक सहारा मिल गया, जिससे उस का व्यवहार और अधिक बदलता चला गया। फिर एक के बाद एक बाबाओं, ओझाओं एवं तांत्रिकों ने उनके अंधविश्वास को पक्का कर दिया, जिससे पुष्पा और अधिक मनोरोगी बनती चली गई और परिवार वालों की परेशानी और ज्यादा बढ़ती चली गई।

मेरे द्वारा मनोवैज्ञानिक काऊंसलिंग के दौरान उसे अपना अतीत भूल कर भविष्य के बारे में सोचने एवं वर्तमान में जीवन जीने के निर्देश दिये गये। जब मैंने उसे अपनी वस्तुस्थिति को गहराई से समझने के निर्देश दिये और उसके एवं बच्चों के भविष्य की वास्तविकता को उसके सम्मुख रखा तो उसे अपने किये पर पछतावा होने लगा। अब पश्चाताप के आंसू उसकी आंखों में बह रहे थे। उसके बाद उसे कभी कोई परेशानी नहीं हुई और वह सामान्य जीवन जीने लगी।

नोटः यह एक सत्य घटना है, परिस्थितिवश पात्रों के नाम बदल दिये गये हैं।

अनमोल विचार

अखबारों का असली कर्तव्य शिक्षा देना, लोगों से संकीर्णता निकालना, साम्प्रदायिक भावनाएं हटाना, परस्पर मेल-मिलाप बढ़ाना और भारत की सांझी राष्ट्रीयता बनाना था, लेकिन इन्होंने अपना मुख्य कर्तव्य अज्ञान फैलाना, संकीर्णता का प्रचार करना, साम्प्रदायिक बनाना, लड़ाई-झगड़े करवाना और भारत की साझी राष्ट्रीयता को नष्ट करनपा बना लिया है।

-शहीद भगत सिंह

मुझे टॉर्च बेचनेवाले

लघु कथा

–हरिशंकर परसाई

वह पहले चौराहों पर बिजली के टार्च बेचा करता था। बीच में कुछ दिन वह नहीं दिखा। कल फिर दिखा। मगर इस बार उसने दाढी बढ़ा ली थी और लंबा कुरता पहन रखा था ।'

मैंने पूछा, "कहाँ रहे ? और यह दाढी क्यों बढा रखी है ?''

उसने जवाब दिया, "बाहर गया था।'' दाढ़ी वाले सवाल का उसने जवाब यह दिया कि दाढ़ी पर हाथ फेरने लगा। मैंने कहा, "आज तुम टार्च नहीं बेच रहे हो ? "'

उसने कहा, "वह काम बंद कर दिया है। अब तो आत्मा के भीतर टार्च जल उठा है। ये सूरजछाप टार्च अब व्यर्थ मालूम होते हैं।'

मैंने कहा, "तुम शायद संन्यास ले रहे हो।' जिसकी आत्मा में प्रकाश फैल जाता है, वह इसी तरह हरामखोरी पर उतर आता है। किससे दीक्षा ले आए ?''

मेरी बात से उसे पीड़ा हुई। उसने कहा, "ऐसे कठोर वचन मत बोलिए। आत्मा सबकी एक है। मेरी आत्मा को चोट पहुँचाकर आप अपनी ही आत्मा को घायल कर रहे हैं।'

मैंने कहा, "यह सब तो ठीक है । मगर यह बताओ कि तुम एकाएक ऐसे कैसे हो गए ? क्या बीवी ने तुम्हें त्याग दिया ? क्या उधार मिलना बंद हो गया ? क्या हूकारों ने ज्यादा तंग करना शुरू कर दिया ? क्या चोरी के मामले में फँस गए हो ? आखिर बाहर का टार्च भीतर आत्मा में कैसे घुस गया ?'

उसने कहा, "आपके सब अंदाजे गलत हैं। ऐसा कुछ नहीं हुआ। एक घटना हो गई है, जिसने जीवन बदल दिया। उसे मैं गुप्त रखना चाहता हूँ। पर क्योंकि मैं आज ही यहाँ से दूर जा रहा हूँ, इसलिए आपको सारा किस्सा सुना देता हूँ।'' उसने बयान शुरू किया। ''पाँच साल पहले की बात है। मैं अपने एक दोस्त के साथ हताश एक जगह बैठा था। हमारे सामने आसमान को छूता हुआ एक सवाल खड़ा था। वह सवाल था ' पैसा कैसे पैदा करें ?' हम दोनों ने उस सवाल की एक-एक टाँग पकड़ी और उसे हटाने की कोशिश करने लगे। हमें पसीना आ गया, पर सवाल हिला भी नहीं। दोस्त ने कहा, "यार, इस सवाल के पाँव जमीन में गहरे गड़े हैं। यह उखड़ेगा नहीं। इसे टाल जाएँ। हमने दूसरी तरफ मुँह कर लिया। पर वह सवाल फिर हमारे सामने आकर खडा हो गया। तब मैंने कहा "यार, यह सवाल टलेगा नहीं। चलो, इसे हल ही कर दें। पैसा पैदा करने के लिए कुछ काम-धंधा करे। हम इसी वक्त अलग-अलग दिशाओं में अपनी-अपनी किस्मत आजमाने निकल पड़े। पाँच साल बाद ठीक इसी तारीख को इसी वक्त हम यहाँ मिलें।'

दोस्त ने कहा "यार, साथ ही क्यों न चलें ? 'मैंने कहा नहीं, किस्मत आजमाने वालों की जितनी पुरानी कथाएँ मैंने पढ़ी हैं, सबमें वे अलग-अलग दिशा में जाते हैं। साथ जाने में किस्मतों के टकराकर टूटने का डर रहता है।'

'तो साहब, हम अलग-अलग चल पड़े। मैंने टार्च बेचने का धंधा शुरू कर दिया। चौराहे पर या मैदान में लोगों को इकट्ठा कर लेता और बहुत नाटकीय ढंग से कहता "आजकल सब जगह अँधेरा छाया रहता है। रातें बेहद काली होती हैं। अपना ही हाथ नहीं सूझता। आदमी को रास्ता नहीं दिखता । वह भटक जाता है। उसके पाँव काँटों से बिंध जाते हैं, वह गिरता है और उसके घुटने लहूलुहान हो जाते हैं। उसके आसपास भयानक अँधेरा है। शेर और चीते चारों तरफ धूम रहे हैं, साँप जमीन पर रेंग रहे हैं। अँधेरा सबको निगल रहा है। अँधेरा घर में भी है। आदमी रात को पेशाब करने उठता है और साँप पर उसका पाँव पड़ जाता है। साँप उसे

डस लेता है और वह मर जाता है।' आपने तो देखा ही है साहब, कि लोग मेरी बातें सुनकर कैसे डर जाते थे। भर दोपहर में वे अँधेरे के डर से काँपने लगते थे। आदमी को डराना कितना आसान है!'
लोग डर जाते, तब मैं कहता, " भाइयों, यह सही है कि अँधेरा है, मगर प्रकाश भी है। वही प्रकाश मैं आपको देने आया हूँ । हमारी सूरज छाप टार्च में वह प्रकाश है, जो अंधकार को दूर भगा देता है। इसी वक्त सूरज छाप टार्च खरीदो और अँधेरे को दूर करो। जिन भाइयों को चाहिए, हाथ ऊँचा करें।'

साहब, मेरे टार्च बिक जाते और मैं मजे में जिंदगी गुजरने लगा ।'

वायदे के मुताबिक ठीक पाँच साल बाद मैं उस जगह पहुँचा, जहाँ मुझे दोस्त से मिलना था। वहाँ दिन भर मैंने उसकी राह देखी, वह नहीं आया । क्या हुआ ? क्या वह भूल गया ? या अब वह इस असार संसार में ही नहीं है ? मैं उसे ढूंढ़ने निकल पडा ।'

एक शाम जब मैं एक शहर की सडक पर चला जा रहा था, मैंने देखा कि पास के मैदान में खूब रोशनी है और एक तरफ मंच सजा है। लाउडस्पीकर लगे हैं। मैदान में हजारों नर-नारी श्रद्धा से झुके बैठे है। मंच पर सुंदर रेशमी वस्त्रों से सजे एक भव्य पुरुष बैठे हैं। वे खुब पुष्ट हैं, सँवारी हुई लंबी दाढी है और पीठ पर लहराते लंबे केश हैं । मैं भीड़ के एक कोने में जाकर बैठ गया। भव्य पुरुष फिल्मों के संत लग रहे थे। उन्होंने गुरुगम्भीर वाणी में प्रवचन शुरू किया। वे इस तरह बोल रहे थे जैसे आकाश के किसी कोने से कोई रहस्यमय संदेश उनके कान में सुनाई पड़ रहा है जिसे वे भाषण दे रहे हैं। वे कह रहे थे, " भक्तों! मैं आज मनुष्य को एक घने अंधकार में देख रहा हूँ। उसके भीतर कुछ बुझ गया है। यह युग ही अंधकारमय है । यह सर्वग्राही अंधकार संपूर्ण विश्व को अपने उदर में छिपाए है। आज मनुष्य इस अंधकार से घबरा उठा है। वह पथभ्रष्ट हो गया है। आज आत्मा में भी अंधकार है। अंतर की आँखें ज्योतिहीन हो गई हैं। वे उसे भेद नहीं पातीं। मानव-आत्मा अंधकार में घुटती है। मैं देख रहा हूँ, मनुष्य की आत्मा भय और पीड़ा से त्रस्त हैं।' इसी तरह वे बोलते गए और लोग स्तव्ध सुनते गए ।'

मुझे हँसी छूट रही थी। एक-दो बार दबाते-दबाते भी हँसी फूट गई और पास के श्रोताओं ने मुझे डाँटा ।'

भव्य पुरुष प्रवचन के अंत पर पहुँचते हुए कहने लगे, "भाइयों और बहनों, डरो मत। जहाँ अंधकार है, वहीं प्रकाश है। अंधकार में प्रकाश की किरण है, जैसे प्रकाश में अंधकार की किंचित कालिमा है। प्रकाश भी है। प्रकार बाहर नहीं है, उसे अंतर में खोजो। अंतर में बुझी उस ज्योति को जगाओ। मैं तुम सबका उस ज्योति को जगाने के लिए आह्वान करता हूँ। मैं तुम्हारे भीतर वही शाश्वत ज्योति को जगाना चाहता हूँ। हमारे 'साधना मंदिर' में आकर उस ज्योति को अपने भीतर जगाओ।'' साहब, अब तो मैं खिलखिलाकर हँस पडा। पास के लोगों ने मुझे धक्का देकर भगा दिया। मैं मंच के पास जाकर खडा हो गया ।'

भव्य पुरुष मंच से उतरकर कार पर चढ़ रहे थे। मैंने उन्हें ध्यान से पास से देखा। उनकी दाढी बढी हुई थी, इसलिए मैं थोडा झिझका। पर मेरी तो दाढ़ी नहीं थी। मैं तो उसी मौलिक रूप में था। उन्होंने मुझे पहचान लिया। बोले, "अरे तुम!''

मैं पहचानकर बोलने ही वाला था कि उन्होंने मुझे हाथ पकड़कर कार में बिठा लिया। मैं फिर कुछ बोलने लगा तो उन्होंने कहा, " बँगले तक कोई बातचीत नहीं होगी। वहीं ज्ञानचर्चा होगी।''
मुझे याद आ गया कि वहाँ ड्राइवर है ।'

बँगले पर पहुँचकर मैंने उसका ठाठ देखा । उस वैभव को देखकर मैं थोड़ा झिझका, पर तुरंत ही मैंने अपने उस दोस्त से खुलकर बातें शुरू कर दीं।'
मैंने कहा, ''यार, तू तो बिलकुल बदल गया।''
उसने गंभीरता से कहा, ''परिवर्तन जीवन का अनंत क्रम है।''
मैंने कहा, " साले, फिलासफी मत बघार। यह बता कि तूने इतनी दौलत कैसे कमा ली पाँच सालों में ?
''
उसने पूछा, " तुम इन सालों में क्या करते रहे ?''
मैंने कहा, "मैं तो घूम-घूमकर टार्च बेचता रहा। सच बता, क्या तू भी टार्च का व्यापारी है ?''
उसने कहा, " तुझे क्या ऐसा ही लगता है ? क्यों लगता है ?''

मैंने उसे बताया कि जो बातें मैं कहता हूं वही तू कह रहा था। मैं सीधे ढंग से कहता हूँ, तू उन्हीं बातों को रहस्यमय ढंग से कहता है। अँधेरे का डर दिखाकर लोगों को टार्च बेचता हूँ। तू भी अभी लोगों को अँधेरे का डर दिखा रहा था, तू भी जरूर टार्च बेचता है।'

उसने कहा, "तुम मुझे नहीं जानते, मैं टार्च क्यों बेचूगा! मैं साधु, दार्शनिक और संत फकीर कहलाता हूं।''

मैंने कहा "तुम कुछ भी कहलाओ, बेचते तुम टार्च हो। तुम्हारे और मेरे प्रवचन एक जैसे हैं। चाहे कोई दार्शनिक बने, संत बने या साधु बने, अगर वह लोगों को अँधेरे का डर दिखाता है, तो जरूर अपनी कंपनी का टार्च बेचना चाहता है। तुम जैसे लोगों के लिए हमेशा ही अंधकार छाया रहता है। बताओ, तुम्हारे जैसे किसी आदमी ने हजारों में कभी भी यह कहा है कि आज दुनिया में प्रकाश फैला है? कभी नहीं कहा। क्यों? इसलिए कि उन्हें अपनी कंपनी का टार्च बेचना है। मैं खुद भर दोपहर में लोगों से कहता हूँ कि अंधकार छाया है। बता किस कंपनी का टार्च बेचता है?''

मेरी बातों ने उसे ठिकाने पर ला दिया था। उसने सहज ढंग से कहा, "तेरी बात ठीक ही है।' मेरी कंपनी नयी नहीं है, सनातन है।''

मैंने पूछा, " कहाँ है तेरी दुकान? नमूने के लिए एकाध टार्च तो दिखा। ' सूरज छाप ' टार्च से बहुत ज्यादा बिक्री है उसकी।'

उसने कहा, " उस टार्च की कोई दुकान बाजार में नहीं है। वह बहुत सूक्ष्म है। मगर कीमत उसकी बहुत मिल जाती है। तू एक-दो दिन रह, तो मैं तुझे सब समझा देता हूँ।''

तो साहब मैं दो दिन उसके पास रहा। तीसरे दिन सूरज छाप टार्च की पेटी को नदी में फेंककर नया काम शुरू कर दिया।

वह अपनी दाढी पर हाथ फेरने लगा। बोला, " बस, एक महीने की देर और है।'' मैंने पूछा -''तो अब कौन-सा धंधा करोगे?''

उसने कहा, "धंधा वही करूँगा, यानी टार्च बेचूँगा। बस कंपनी बदल रहा हूँ।'

अंधविश्वास में हर वर्ष 14 करोड़ बर्बाद कर दिए जाते हैं नींबू-हरी मिर्च टांगने पर

मोहाली : 4 अगस्त (एमपी कौशिक) हालांकि हम 21 वी सदी में प्रवेश कर चुके हैं परंतु इस के बावजूद लोग प्राचीनकाल से चले आ रहे वहमों-भ्रमों, जादू टोनों, करा-कराया, ऊपरी कसर आदि जैसे अंधविश्वास के मकड़जाल से नहीं निकल पा रहे हैं यूं तो इन तांत्रिकों आदि के चक्कर में फंस कर एक ओर अनेक लोग भारी आर्थिक नुकसान करवाते हैं और दूसरी ओर इन वहमों-भ्रमों आदि से निजात पाने के लिए हर वर्ष लगभग 14 करोड़ रुपये से अधिक के नींबू-हरी मिर्च टांगने के नाम पर बार्बाद कर देते हैं।

तर्कशील सोसायटी पंजाब की मोहाली शाखा के वित्त प्रभारी तथा मानसिक रोग चेतन विभाग जोन चंडीगढ़ के प्रभारी जरनैल सिंह क्रांति के अनुसार अकेले से पंजाब में ही दुर्घटनाओं से बचने के लिए हर वर्ष नींबू व हरी मिर्च टांगने पर ही 14 करोड़ रुपये से अधिक राशि बर्बाद कर देते हैं। उन्होंने बताया कि यह राशि तो सिर्फ पंजाब में नींबू-हरी मिर्च टांगने वालों की है, जबकि इसके अलावा कथित तांत्रिकों आदि के चक्करों में पड़ कर बर्बाद होने वाली राशि इसमें शामिल नहीं है।यह राशि सिर्फ पंजाब की है। जबकि यह धंधा पंजाब के अलावा देश के लगभग सभी राज्यों में खूब चल रहा हैं यदि सभी राज्यों का सर्वे कराया जाए तो नींबू, हरी मिर्च टांगने पर बर्बाद होने वाले पैसे की कल्पना मात्र से ही रौंगटे खड़े हो जाते हैं। श्री क्रांति ने बताया कि 14 करोड़ से अधिक राशि वाले आंकड़े तर्कशील सोसायटी पंजाब द्वारा राज्य में विभिन्न बड़े छोटे शहरों कस्बों गांवों आदि की दुकानों तथा वाहनों आदि पर किए गए सर्वे के पश्चात सामने आए है।

j

आखिर क्यों सरकारें तम्बाकू महामारी पर अंकुश लगाने में हैं विफल ?

-बॉबी रमाकांत, सीएनएस 'सिटिजन न्यूज सर्विस'

तम्बाकू के कारण 70 लाख से अधिक लोग हर साल मृत और अमरीकी डालर 1004 अरब का आर्थिक नुक्सान होने के बावजूद भी, सरकारें क्यों इस महामारी पर अंकुश नहीं लगा पा रही हैं? भारत सरकार समेत 193 सरकारों ने 2030 तक सतत् विकास लक्ष्य पूरे करने का वादा तो किया है पर विशेषज्ञों के अनुसार, बिना तम्बाकू महामारी पर विराम लगाए सतत् विकास मुमकिन नहीं है.

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, तम्बाकू नियंत्रण नीतियों को लागू करने में सबसे बड़ा रोड़ा है- जन स्वास्थ्य नीति में तम्बाकू उद्योग का हस्तक्षेप. जाहिर है कि जब तक तम्बाकू उद्योग को लाखों-करोड़ों मृत्यु, जानलेवा बीमारियों, अरबों रुपये के आर्थिक नुक्सान, पर्यावरण को क्षति और सतत विकास को खंडित करने के लिए कानूनी रूप से जिम्मेदार न ठहराया जायेगा तब तक सफल तम्बाकू नियंत्रण और सतत विकास कैसे हो सकता है?

भारत समेत 181 देशों की सरकारों ने वैश्विक तम्बाकू नियंत्रण संधि बैठक में निर्णय लिया कि तम्बाकू उद्योग इन जन स्वास्थ्य बैठकों में किसी भी तरह से हस्तक्षेप न कर पाए. वैश्विक तम्बाकू नियंत्रण संधि के 8वें सत्र में, सरकारों ने मजबूत नीतियों को पारित किया जिससे कि तम्बाकू उद्योग जन-स्वास्थ्य नीतियों में हस्तक्षेप न कर सके.

अनेक सालों से तम्बाकू उद्योग ने पारदर्शिता की आड़ में तम्बाकू नियंत्रण को विफल करने का प्रयास किया है. इस बैठक में सरकारों ने हमेशा के लिए तम्बाकू उद्योग को जन स्वास्थ्य संधि से बाहर निकाला है.

कॉर्पोरेट एकाउंटेबिलिटी दल के अध्यक्ष मिचेल लीजेंद्रे ने बताया कि तम्बाकू नियंत्रण नीतियों को लागू करने में सबसे बड़ी अड़चन तम्बाकू उद्योग है. इस बैठक में भी यही हाल रहा. हम भारत सरकार और अन्य सरकारों के आभारी हैं जिन्होंने जन-स्वास्थ्य के पक्ष में निर्णय लिए, जिसके कारणवश लाखों लोगों की जान बचेगी. वैश्विक तम्बाकू नियंत्रण संधि में उद्योग के घुसने का आखरी रास्ता था 'पब्लिक' बैज की आड़ में हस्तक्षेप करना. इस जिनेवा बैठक में सरकारों ने उद्योग के हस्तक्षेप के आखरी रास्ते पर भी अंकुश लगा दिया, जिसके कारण तम्बाकू नियंत्रण अधिक प्रभावकारी बनेगा. सरकारों ने सख्त कदम उठाये जिससे कि तम्बाकू उद्योग के धूर्त प्रयासों को विफल किया जा सके जिसमें दुनिया की सबसे बड़ी सिगरेट कंपनी फिलिप मोरिस की नयी फाउंडेशन शामिल है. सरकारों ने नीति पारित की जिससे कि कोई भी संस्था, तम्बाकू उद्योग के इन भ्रामक धूर्त जाल में न फंसे.

यूगांडा की वरिष्ठ विधि सलाहकार हेलेन नीमा ने कहा कि जीवन रक्षक जन स्वास्थ्य नीतियों को असफल करने के लिये तम्बाकू उद्योग भान्ति प्रकार के हथकण्डे अपना रहा है। आर्थिक और जन स्वास्थ्य को भीषण रूप से क्षतिग्रस्त करने के लिये तम्बाकू उद्योग को कानूनी रूप से जिम्मेदार ठहराने के लिये वैश्विक तम्बाकू नियन्त्रण संधि आर्टिकल 19 पर सरकारों को कार्य आगे बढ़ाना होगा।

तम्बाकू से हर साल 70 लाख मृत्यु होती हैं और 1004 अरब रुपये का आर्थिक नुक्सान होता है। वैश्विक तम्बाकू नियन्त्रण संधि के आर्टिकल 19 को लागू करके सरकारें हर्जाना वसूल सकती हैं और तम्बाकू महामारी पर अंकुश लगा सकती हैं। स्वास्थ्य को वोट अभियान के निदेशक राहुल द्विवेदी ने कहा कि बिना तम्बाकू महामारी अन्त किए सतत् विकास लक्ष्य और राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 के लक्ष्य पूरे हो ही नहीं सकते।

ईरान सरकार के प्रतिनिधि बेह्जद वालीजदेह ने कहा कि नयी शुरुआत के बहाने तम्बाकू उद्योग भ्रमित कर रहा है, और इस झूठ में हम नहीं फंसेगें। ईरान ने फिलिप मोरिस के नये तम्बाकू उत्पाद जैसे कि आईकुओएस को प्रतिबंधित कर दिया है, जिससे कि तम्बाकू उद्योग के भ्रामक प्रचार में उनके लोग न पड़ें और तम्बाकू नियन्त्रण में जो प्रगति हुई है वह न पलट जाये।

मालदीव्स सरकार के प्रतिनिधि हसन मुहमद ने कहा कि हमने इस बैठक में इतिहास बना दिया है और जन स्वास्थ्य संधि के द्वार उद्योग के लिये बन्द कर दिये हैं।

बिना किसी ठोस वैज्ञानिक प्रमाण के ई-सिग्रेट आदि जैसे तम्बाकू उत्पाद बाजार में लाकर उद्योग ने जन स्वास्थ्य कानूनों को दरकिनार किया है और अपना मुनाफा बढ़ाया है। तम्बाकू नियन्त्रण कानून जैसे कि सिगरेट एवं अन्य तम्बाकू उत्पाद अधिनियम 2003 और वैश्विक तम्बाकू नियन्त्रण संधि जिसे भारत ने पारित किया है, सभी तम्बाकू उत्पाद पर सख्ती से लागू होता है। ★★★

बकरीद पर बकरे की कुर्बानी न देकर केक काटकर धार्मिक रस्म अदा की गई

-डॉ. दिनेश मिश्र

ईदुज्जुहा (बकरीद) में जीवित प्राणी की कुर्बानी न देकर केक काटकर धार्मिक रस्म अदा करने की, डॉ दिनेश मिश्र की अपील का अब धीरे धीरे असर होने लगा है।

जन जागरूकता प्रयासों के चलते देश के कुछ स्थानों से पिछले वर्ष पहली बार जीवित प्राणी की कुर्बानी न देकर केक काटकर ईद मनाने के उदाहरण सामने आए। जो इस बार बढ़े हैं .

कुछ अन्य स्थानों से भी सकारात्मक खबरें आयी है जिनमें इस वर्ष गाजियाबाद लखनऊ, आगरा सहित अनेक शहरों में यह पहल हुई। .

देश के अनेक राज्यों में पशुबलि के निषेध के सम्बंध में कानून बने हुए हैं परंतु उनका पालन न होने से लाखों निर्दोष मासूम पशुओं की बलि दी जाती है। जबकि सभी धर्म प्रेम और अहिंसा की शिक्षा देते हैं। अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए किसी दूसरे प्राणी की जान लेना ठीक नहीं है।

पिछले अनेक वर्षो से विभिन्न धार्मिक अवसरों पर पशु की कुर्बानी, पशुवध/बलि की क्रूर परम्परा के विरोध में जनजागरण कर रही है। पिछले वर्ष महाराष्ट्र के कोराड़ी के मंदिर में, तथा कुछ अन्य स्थानों में नवरात्रि में बलि प्रथा बंद हुई है । वहीं बकरीद में भी अनेक स्थानों में मुस्लिम धर्मावलंबियों ने कुर्बानी की प्रथा का परित्याग किया । पिछले कुछ समय से अन्य देशों के साथ भारत में भी लखनऊ आगरा, मेरठ, मुजफ्फरपुर, सहित अनेक स्थानों में जन जागरण के प्रयासों से लोगों ने ईदुज्जुहा (बकरीद) में बकरे के स्थान पर केक काटा। कुछ स्थानों पर तो लोगों ने केक पर ही बकरे का चित्र लगाया और बकरा केक काट कर न केवल सांकेतिक रूप से धार्मिक रस्म अदा की, बल्कि निर्दोष प्राणियों की रक्षा भी की

किसी जिंदा प्राणी को काट कर उसकी जान कुर्बान करने के स्थान पर केक काट कर न केवल धार्मिक रस्म अदा करने बल्कि निर्दोष प्राणी की जान बचाने की पहल की जा सकती है और आगामी वर्षो में ऐसे प्रगतिशील कदमों में और भी अधिक परिवारों के जुड़ने का विश्वास है.

किताबें करती हैं बातें

-सफदर हाशमी

किताबें करती हैं बातें
बीते जमानों की
दुनिया की, इंसानों की
आज की कल की
एक-एक पल की।
खुशियों की, गमों की
फूलों की, बमों की
जीत की, हार की
प्यार की, मार की।
सुनोगे नहीं क्या
किताबों की बातें ?
किताबें, कुछ तो कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।
किताबों में चिड़िया दीखे चहचहाती,
कि इनमें मिलें खेतियाँ लहलहाती।
किताबों में झरने मिलें गुनगुनाते,
बड़े खूब परियों के किस्से सुनाते।
किताबों में साईंस की आवाज है,
किताबों में रॉकेट का राज है।
हर इक इल्म की इनमें भरमार है,
किताबों का अपना ही संसार है।
क्या तुम इसमें जाना नहीं चाहोगे ?
जो इनमें है, पाना नहीं चाहोगे ?
किताबें कुछ तो कहना चाहती हैं,
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं!

अनमोल विचार

डर अंधविश्वास का मुख्य स्रोत है। और क्रूरत का भी। डर को जीतना ज्ञान की शुरुआत है।

-बर्ट्रेंड रसेल
(ब्रिटिश दार्शिनिक)

लेखकों/पाठकों के लिए :

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता तथा रचनाओं पर प्रतिक्रिया ईमेल tarksheeleditor @gmail.com अथवा वट्सएप नं. 9416036203 भी भेजी जा सकती है।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक/ अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

हरियाणवी गज़ल

-मंगतराम शास्त्री

जो लड़ाक्के जुल्म कै आग्गै तणे सैं.
वैं हुकूमत नै सदा बागी गिणे सैं..

जो अंधेरै म्हं सदा दीवा बणे सैं.
चांदणै म्हं वें कदे किसनै चुणे सैं..?

इश्क म्हं जलकै मरे सैं जो पतंगे
वें किताबां म्हं किसे नै कद खिणे सैं?

जिंदगी भर छान म्हं ढकते रहे सिर
उन कमेर्यां नै तेरे बंगले चिणे सैं.

बोझ नीच्चै बीत गी जिनकी जवान्नी
वैं बडेरे नींव के पत्थर बणे सैं.

जो छतर चमकैं अटारी पै सुनहरे
सिर्फ उनके गीत गाये जां घणे सैं.

मार कै आप्पा उलैह्वां की खुशी म्हं
हर घड़ी माँ नै नये सुपने बुणे सैं.

वैं कमाऊ क्यूं मरैं भूक्खो तिसाये
जो उगावैं खेत म्हं गेहूं चणे सैं.

बात मन की खूब सुण ली यार की पर
यार नै 'खड़तल' के किस्से कद सुणे सैं?

आर्थिक सहयोग

कुरुक्षेत्र से तर्कशील साथी बलदेव सिंह महरोक ने उनके घर पौत्री के जन्म की खुशी में 1100 रूपये का सहयोग दिया है। तर्कशील सोसायटी हरियाणा उनका हार्दिक आभार प्रकट करती है।

महासचिव, तर्कशील सोसायटी हरियाणा

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की अपील

हरियाणा के असंध में शीघ्र ही 'तर्कशील केंद्र' के रूप में एक भवन निर्माण की योजना प्रस्तावित है। जिसके लिए सोसायटी के कार्यकर्ता मेहर सिंह विर्क ने असंध जिला करनाल में एक भूखण्ड प्रदान किया है। अतः सभी साथियों से अपील की जाती है कि इस योजना हेतु बढ़-चढ़ कर आर्थिक सहयोग करें।

-राज्य कार्यकारिणी

समाचार है कि

कोरोना महामारी के चलते पिछले तीन महीनों के दौरान अन्य लोगों के साथ-साथ तर्कशील सोसायटी की गतिविधियां भी प्रभावित रहीं। सामाजिक दूरी के आदेशों का पालने करते हुए इस बार तर्कशील सोसायटी हरियाणा का द्विमासिक सम्मेलन आयोजित नहीं हो पाया। परंतु तर्कशील साथियों ने सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी तर्कशील गतिविधियां जारी रखीं और सक्रिय रहे। साथियों ने अंधविश्वास के खिलाफ और वैज्ञानिक जागरूकता के संदेश व्हाट्सएप, फेसबुक और यूट्यूब के माध्यम से घर-घर पहुचाने का कार्य जारी रखा।

पिछले दिनों फतेहाबद जिला बनने की वर्षगांठ पर तर्कशील सोसायटी के प्रधान फरियाद सिंह सनियाणा ने अपने गांव सनियाणा के पुस्तकालय में अपने खर्चे पर तर्कशील साहित्य डोनेट किया। वे अपने गांव व आसपास क्षेत्र में वे तर्कशील जागरूकता का कार्य जारी रखे हुए हैं।

बॉडी डोनेशन :

सोसायटी के महासचिव गुरमीत अम्बाला ने जानकारी दी कि 40 लोगों ने बाडी डोनेट करने के फार्म भरे हुए हैं और 5 लोग सोसायटी के माध्यम से पहले ही मरणोपरांत अपना शरीर अस्पतालों को वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए डोनेट कर चुके हैं।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा के प्रचार सचिव हरबिलास ने बताया कि 2009 में उनकी पत्नी का देहांत हो गया था और और तब उन्होंने उनकी बाडी डोनेट कर दी थी। जानकारी के अनुसार उनकी आंखें किसी अन्य की रोशनी बनीं। वर्ष 2012 में उनके पिता की मौत पर भी उन्होंने उनकी बॉडी चिकित्सीय अनुसंधान के लिये डोनेट कर दी थी।

सोसायटी के इस कार्य से प्रेरित हो अम्बाला सिटी के सेक्टर 7 निवासी विन्नी खेतरपाल ने अपनी बॉडी डोनेट करने का फार्म भरा है। उनसे प्रेरित हो उनके ससुर ने भी फार्म भरा है।

महाराष्ट्र में तर्कशील गतिविधियां

तर्कशील सोसायटी के प्रधान गुरमीत सिंह ने बताया कि महाराष्ट्र अंधश्रद्धा समिति द्वारा 'अंधश्रद्धा निर्मूलन वार्ता पत्र' नाम से मराठी में एक मासिक तर्कशील पत्रिका प्रकाशित की जा रही है। इस बार पत्रिका का अगस्त अंक शहीद नरेंद्र दाभोलकर के स्मृति में समर्पित किया गया है। स्मरण रहे कि 30 अगस्त 2013 को नरेंद्र दाभोलकर को उनकी आवाज खामोश करने के प्रयास में समाज के रूढ़िवादियों द्वारा उनको शहीद कर दिया था।

गुरमीत सिंह ने यह भी जानकारी दी कि अंधश्रद्धा निर्मूलन सिमिति द्वारा अंग्रेजी में भी 'थॉट एण्ड एक्शन' नाम से एक ऑनलाईन पत्रिका प्रकाशित की जाती है।

तर्कशील यूट्यूब चैनल:

पाठकों को एक बार फिर स्मरण करा दें कि तर्कशील सोसायटी पंजाब द्वारा 'तर्कशील टीवी' नाम से एक यूट्यूब चैनल चलाया जा रहा है जिसे व्यूअर्स का भरपूर समर्थन मिल रहा है। इस चैनल पर तर्कशील विषयों विभिन्न विद्वानों की महत्वपूर्ण वार्तायें प्रसारित की जाती है। जुलाई, 2020 में एक प्रसारण में 'तर्कशील पथ' के संपादक बलवंत सिंह लेक्चरार ने उनके मनोरोग परामर्श केंद में आने वाले मनोरोगियों संबंधी अपने अनुभव व मानसिक समस्याओं के कारण व उपचार संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।

स्मृति शेष:

पिछले दिनों फतेहाबाद के तर्कशील साथी सुरेश रनवा की माता जी का देहांत हो गया।

तर्कशील साथी व 'तर्कशील पत्रिका' के संपादक के परिवाजनों को उनके भाई सुखवंत सिंह जो बीमार चल रहे थे, का बिछोड़ा सहना पड़ा।

तर्कशील साथी हरविलास के छोटे भाई करनैल सिंह, आयु 53 वर्ष का बीमारी के चलते 21 अगस्त को निधन हो गया।

तर्कशील साथी राजेश राजौंद के पिता सतनारायण जी जो कोविड 19 से संक्रमित हो गये थे, का देहांत हो गया।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की ओर से उपरोक्त चारों परिवारों के साथ भावभीनी संवेदना प्रकट की जाती है।

-रिपोर्ट: बलदेव सिंह महरोक

नायकों को स्मरण करते हुए

शहीद भगत सिंह के जन्म दिवस को समर्पित और तर्कशील आंदोलन के शहीद डाक्टर नरेंद्र दाभोलकर की शहादत को समर्पित तर्कशील चेतना के प्रचार प्रसार के लिए सितम्बर 2020 के अंतिम सप्ताह को वैज्ञानिक चेतना दिवस के रूप में तर्कशील साहित्य को जन जन तक पहुंचाने के लिए कृतसंकल्प हों। जिसके लिए पत्रिका तर्कशील व तर्कशील साहित्य को ज्यादा से ज्यादा जन तक पहुंचाने के लिए प्रत्येक तर्कशील कुछ न कुछ योगदान करे।

उजाले की ओर

- विश्व के महान पुरुष अपनी उपलब्धियों के लिए किताबों को सर्वोपरि रखते हैं। किताबें मनुष्य के सपनो और उन्हें पूर्ण करने की राह भी होती हैं। इसी लिए रूस के साहित्यकार गोर्की किताबों को मनुष्य की सबसे बड़ी दोस्त मानते हैं।
- यह भारत के खूबसूरत और साक्षरता में शत प्रतिशत राज्य केरल के पुस्तकालय की ईमारत है। जो अन्य राज्यों के लिए प्रेरक स्तम्भ है।
- जहां पर किताबों का स्वप्निल संसार है वहीं जीवन का आनन्द भी है। कलामय जीवन का राह किताबों से होकर निकलता है।

- चेतन लोगों के जीवन की तस्वीर, जीदा गांव की यह खूबसूरत लाईब्रेरी है। जिसमे जीने का, बदलाव का व खुबसूरत जीवन का आनन्द छिपा है।
- अपनी तरफ आकर्षित करती यह ईमारत स्वयं बोलती है। शहीद ए आज़म भगत सिंह व गोर्की के विश्वप्रसिद्ध उपन्यास 'माँ' का प्रतीक मन को आनन्दित कर देता है। अच्छी पुस्तकों के संग जीने वाले कभी हारते नही, बल्कि असली इंसान बन कर समाज का पथ प्रदर्शन करते हैं। पुस्तकों में जीवन बोलता है और जीने के हौंसले बुलंद होते हैं।

आओ जीवन को अपने व दूसरों के लिए सुखमय बनाने के लिए किताबों को अपना राही बनाईए!!

If undelivered please return to :
Tarksheel
Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera ByPass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

प्रो. बलवंत सिंह, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 1062, आदर्श नगर, पिपली, जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।